आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार, जयपुर

वन्दे जिनवरम्

# गीतों की दुनिया

(३१३ रसीले गीत)

लेखक

कविरत्न-श्री चन्दन मुनि जी म०

संग्राहक

श्री चरण दास जैन

मण्डी गीदडवाहा

प्रकाशक —

पूज्य जीवन राम

जैन पुस्तक प्रकाशक समिति

कविरत्न श्री चन्दन मुनि जी म०

स्वर के पौद्गलिक परमाणुओ का एक लय में निकलना सगीत नही, सगीत तो आत्मा की लहरो का मन के तारो से पैदा होने वाले सगीत के साथ नाचना है। जब मनुष्य दुनिया की बेसुरी खट-पट से अपनी आत्मा को अलग करके आत्मा की हिलोरो और मन के व्यापार को एक लय मे कर लेता है तो एक अद्भुत सगीत उत्पन्न हो जाता है और मनुष्य अपने से बेभान होकर आनन्द मे मग्न हो जाता है। सगीतमयी जीवन है। सगीत जीवन का आधार है। जब मनुष्य या और कोई प्राणी सब प्रकार के झझटो से अलग होकर निश्चिन्त होता है और उसका मानसिक सतुलन ठीक होता है तो वर-बस उसकी आत्मा से सगीत उठता है और वह गुन गुनाने लगता है।

जिस प्रकार समुद्र या झील मे एक लहर से दूसरी और दूसरी से तीसरी ऐसे लहरे पैदा होकर किनारो से जा टकराती हैं, इसी प्रकार एक आत्मा से सगीत की लहर उठ कर हजारो सगीत की लहरे उत्पन्न कर के सगीतमय वायुमण्डल बना देती है। वाणी की मधुर सुरो पर सर्प नाचने लगते है और बादल की गम्भीर गरज पर मयूर अपने रग बिरगे पख फैला कर मस्ती मे झूमने लगते है। श्री कृष्ण ने इसी सगीत के जादू से ससार को मुग्ध बना रखा था और महात्मा गाधी की इस सगीत भरी धुन—"रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम"—ने तमाम भारत वर्ष को हिला दिया था। सगीत एक प्रभाव शाली शक्ति

सगीत द्वारा राष्ट्रीय और सामाजिक वायुमण्डल, प्रेम-वात्सल्य और भक्ति की प्रशसनीय सुगन्ध से महकाया जा सकता है। राष्ट्रीय और सामाजिक चरित्र ऊचा किया जा सकता है तथा विश्व मे शान्ति व आनन्द का सचार किया जा सकता है।

आज कल इस शक्ति का दुरुपयोग किया जा रहा है। सिनेमा, रेडियो और ग्रामोफोन द्वारा गन्दे, काम-वासना उत्तेजित करने वाले गीतो का प्रचार हो रहा है, जिससे राष्ट्र व्यभिचार और भ्रष्टाचार की ओर तेजी से जा रहा है।' सामाजिक पतन हो रहा है, सगीत आत्मिक आनन्द और आध्यात्कि उन्नति का साधन बनाने के स्थान पर आत्मिक पतन का प्रधान कारण बन रहा है। ऐसे दूषित वायु मण्डल मे हम अपगे नवयुवको और नवयुवतियो के लिए उज्ज्वल भविष्य की आशा करें तो कैसे करें ?

कविरत्न श्री चन्दन मुनि जी एक सुप्रसिद्ध जैन सन्त है। आप श्री जी का भारत को इस उल्टी प्रवृत्ति से रोकने का सुप्रयत्न अतीव सराहनोय है। आप श्री जी के जीवन का एक-एक क्षण मानव सुधार और सदाचार के प्रचार मे व्यतीत होता है। आप श्रीजी ने सगोत की शक्ति को भली प्रकार जान कर इसे अपने उद्देश्य के प्रचार का मुख्य साधन वनाया हुआ है। हिन्दी भाषा, पजावी भापा और साधारण जनता की प्रचलित भापा मे कविता और सगीत की अव तक २६ पुस्तकें आप श्रीजी ने लिखी है, जिन को जनता ने वहुत पसन्द किया है और वे हाथो हाथ विक रही है। मैं ने इन मे से

सुन्दर-सुन्दर रसभरी कविताएँ और कुछेक पुस्तको से गीत चुन कर इन्हे चार भागो—

१ धर्म प्यार के गीत २ देश सुधार के गीत

३ महिला ससार के गीत ४ विविध प्रकार के गीत

मे बाट कर—'गीतो की दुनिया'—तैयार की है जो कि आप—सज्जनो के हाथो मे है। इस पुस्तक मे उन्ही सुमधुर, सुप्रसिद्ध गीतो का सकलन किया गया है जो देश सुधार, समाजोत्थान, चरित्र गठन और ऐतिहासिक प्रेरणा की भावनाओ से ओतप्रोत हैं।

आशा की जाती है कि 'गीतो की दुनिया'—दुनिया वालो के लिए प्रकाशस्थम्भ सिद्ध होगी। फिल्मी तर्जों पर न्योछावर होने वाले—गन्दे और भ्रष्ट फिल्मी गीतो को छोड कर श्री चन्दनमुनि जी के धार्मिक और चरित्र को ऊचा करने वाले इन गीतो को अपनायगे और अपने जीवन का अ ग बना कर अपने चरित्र और जीवन को ऊचा उठाने मे इन से प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक का यह तीसरा परिवर्द्धित सस्करण अपने पाठको के कर कमलो मे सादर समर्पित करते हुए हम असीम हर्ष का अनुभव करते है। प्रथम और द्वितीय सस्करण, हाथो हाथ बिक जाने से ही उत्साहित हो कर हम ऐसा कर सके है। हम अपने कृपालु और प्यारे पाठको का एतदर्थ बार-बार धन्यवाद करते हुए असीम हर्ष का अनुभव कर रहे है।

मन्त्री—

**चरणदास जैन**

गीदडबाहा (पजाब)

# धन्यवाद

जैन समाज के चमकते-दमकते सितारे निम्नलिखित दानी सज्जनो का हम हार्दिक धन्यवाद करते है जिन के सहयोग से यह प्रकाशन इस सुन्दर रूप से पाठकवर्ग के कर कमलो मे शोभित हो रहा है —

श्री जय लाल हीरा लाल जैन रामामण्डी (भठिण्डा)
श्री मनोहर लाल धर्म दास जैन बलाचौर (दोआबा)
श्री सोहन लाल वासदेव जैन ,, ,,
श्री सोहन लाल जैन अग्रवाल रायकोट (लुधियाना)
श्री टेक चन्द सोम प्रकाश जैन बजाज भटिण्डा
श्री चिमन लाल धर्म चन्द जैन सगरिया (राजस्थान)
श्री राज कुमार जैन सर्दूल गढ (वठिण्डा)
श्री बिशना मल बाबू राम जैन गीदडबाहा (पजाब)
स्वर्गीय श्रीमती शकुन्तला देवी, धर्म पत्नी
श्री धर्मपाल जैन, गीदड बाहा (पजाब)

# श्री विलायती राम जी जैन

सुपुत्र श्रीमान् ला० नौहदेशाह जी जैन कसूर वाले का भी हम हार्दिक धन्यवाद किए बिना नही रह सकते जिन्होने कि पहले की भाति इस बार भी इस पुस्तक की छपाई आदि मे हमारी बहुत सहायता की है। उन के सच्चे और उत्साह भरे प्रेम के लिये समिति की ओर से उनका बार-बार धन्यवाद किया जाता है। आशा है आगे भी हमारी इसी प्रकार सहायता करते रहेगे।

मन्त्री—चरण दास जैन

श्री चरन दास जैन

मण्डी गीदडबाहा के वि० २००९ के ऐतिहासिक चातुर्मास मे
महाराज श्री जी के विद्धत्तापूर्ण, प्रभावशाली, सारगर्भित,
सरस, सरल तथा कवित्व पूर्ण व्याख्यानो से प्रभावित
होकर, अपने भक्तिभावो को व्यक्त करने के लिए
मण्डी की श्रद्धालु जनता ने चातुर्मास के अन्त मे
महाराज श्री जी के पुनीत चरणो मे
जो श्रद्धा-सुमन समर्पित किए है
उन मे से कुछ एक

## श्रद्धाञ्जलियां

धर्म की राह ढूढते थे, राहनुमा मिलता न था
दर्द था दिल मे बहुत, दर्द आशना मिलता न था
लोग, हिसा से दुखी होकर अहिसा के असूल-
जानना चाहते थे लेकिन कुछ पता मिलता न था

धर्म का जज्बा दिलो मे दब रहा था इस तरह
आ पडे पत्थर के नीचे कोई दाना जिस तरह
वक्त पर ली खबर 'चन्दन' ने उभारा आन कर
वरना ना मालूम यह पौदा पनपता किस तरह

रात दिन स्थानक मे चर्चा धर्म का होने लगा
आत्मा, परमात्मा का उकदा वा होने लगा
सादा लफजो मे बया कर के अहिसा के असूल
मैल हिसा का दिलो से यू मुनि धोने लगा

धर्म शिक्षा मिल रही थी, धर्म के प्रचार से
धर्म ही के तज़करे होते सरे बाजार थे
जिन्दगी 'चन्दन' की सच्ची तर्के दुनिया की मिसाल
थी चढावे पर नजर न फलो के अम्बार थे

—मा० रामजी दास गुप्ता बी ए.
मण्डी गीदडबाहा

वन्दे जिनवरम्

अखिल भारतीय 'श्री बर्द्धमान स्थानक वासी जैन श्रमण-सघीय' श्री श्री श्री १००८ जगत् विख्यात, सरलात्मा पुण्यात्मा, प्रफुल्लमन, तपस्वी रत्न, गुरुदेव श्री पन्नालाल जी महाराज, मनोहर व्याख्यानी कविरत्न श्री चन्दन लाल जी महाराज के पवित्र चरणो मे समर्पित

# अभिनन्दन पत्रम्

सर्वश्रेष्ठ पूज्यवर! महोपदेशक गुरुवर! हम समस्त मण्डी गीदडबाहा निवासी आज आप का तुच्छ मुख से कोटिश २ धन्यवाद करते है जो कि दयालु हृदय! आप ने जगल प्रदेश मे स्थिर छोटी सी मण्डी मे चातुर्मास कर के इस नगरी को धन्य-धन्य किया। मण्डी गीदडबाहा की जनता के हृदयो को अपने मनोहारी अमृतमय वचनो द्वारा पवित्र जिनवाणी का पान करा कर अनेक कथाओ और विविध प्रकार की सद्युक्ति पूर्ण स्वरचित कविताओ से सब के पिपासाकुल हृदयो को शान्त किया। अस्तु। यही नही अपितु चातुर्मास मे आप ने कविरत्न उपाध्याय श्री अमरचन्द्र जी महाराज रचित 'सत्य हरिश्चन्द्र' काव्य और स्वरचित 'देवकी दा लाल-गजसुकुमाल' को जीवनी कविता और तीन-तीन बात का सुललित बारह

वन्दे जिनवरम्

श्री श्री श्री १००८ जगत् विख्यात तपस्वी श्री पन्नालाल जी महाराज, मनोहर वक्ता कवि श्री चन्दन मुनि जी महाराज के चरण कमलो मे–

# अभिनन्दन पत्रम्

पूज्य महाराज जी ! हमारी मण्डी गीदडबाहा निवासियो की बडी खुश किस्मती है कि आप श्री ने यहां चातुर्मास करके हम अज्ञानी जीवो को विविध प्रकार की कथाए सुना कर जो चिर स्मरणीय उपकार किया है वह इतना अधिक है जिसे मेरी लेखनी लिख नही सकती। आप जैसे महात्माओ तथा महानुभावो का सत्सग सदा जोवन को सत्य मार्ग की ओर ले जाने वाला होता है। हम ससारी लोग ससार मे गोते खा रहे है, आपकी उपदेश रूपी नाव के सहारे पार लगने की हिम्मत हो गई है। आपके पधारने से जैन-अजैन सब मण्डी निवासियो को एक सा लाभ पहुँचा है। हम सब की हार्दिक भावना है कि आप जैसे तरन-तारन हमेशा हमारे यहा पधार कर भूली आत्माओ को इसी तरह पार लगाने की कृपा करते रहा करेगे। आपके पधारने से जो हम सब को लाभ पहुचा है उसके लिए हम सब आपके आजीवन कृतज्ञ रहेगे।

वड्डे भाग अहा ! मण्डी गीदडबहा दे, दित्ता दर्शन महात्मा आन सानू
हिरदे पत्थर दे वाग कठोर साडे, नरम कीते ए देके ज्ञान सानू
पूर्ण सन्त हो रूप भगवान दा जी, प्रतीत हुन्दे जे गुणा दी खान सानू
डाडी दर्शनादी लोड करतार सिघा ! दस्सो 'मुनिजी ! की है, फरमान सानू
कोयल कू-कू कर पुकार दी ए, हाय ! सावन की कदो बहार आवे
भौरा गू गू पया गुजार दा ए, फुल्ला सोहणया ! तेरा प्यार आवे
चकोर तकदा पया है चन्द ताई, तेरी चादनी देख आधार आवे
वड्डे जानिए भाग करतार सिघा ! चन्दन मुनि जद फेर दीदार आवे

गीदडबाहा
२००९ कार्तिक पूर्णिमा

चरणरज सेवी—
ज्ञानी जीत सिंह
प्रेजीडेण्ड कांग्रेस कमेटी

— — — —

वन्दे जिनवरम्

अखिल भारतीय श्री वर्द्धमान स्थानक वासी जैनश्रमण सघीय
श्री श्री श्री १००८ तपस्वी श्री पन्नलाल जी म०, मनोहर
व्याख्यानी कवि श्री चन्दन मुनि जी के पवित्र चरण कमलो मे

# श्रद्धाञ्जलि

१

देखी है सादगी जो गुरु पन्ना लाल मे
मिलती नही किसी साहबे कमाल मे
इस सादगी के साथ जो चेहरे पे दमक है
देखी नही कभी किसी जौहरी के लाल मे

जप-तप तपस्वी का जरबुल मिसाल है
सयम को इनकी जात से हासल कमाल है
'चन्दन' को मान इसपे सब को ही फखर है
धन्य भाग इनके जिनका गुरु पन्ना लाल है

२

कानो से सुन लिए है जब से व्याख्यान तेरे
गुण तब से गा रही है मेरी जबान तेरे
दिल और दिमाग मे तो बेशक बसा है 'चन्दन'
पायेगी कैसे आखे दर्शन महान् तेरे

— — — —

कानो ने सुन के वाणी झट दिल मे जा उतारी
हाथो ने वन्दना की हर रोज बारी-बारी
लेती रही ज़बा भी रस कीर्तन का लेकिन
आखे तरसती होगी दर्शन को अब हमारी

— — — —

खुश-किस्मती तो देखे, खुद मुनि या पधारे
इल्मो अमल के निशदिन, चलते रहे फव्वारे
पर अब जो जा रहे है, इतना बताते जाए
यह धर्म-नाव अपनी, तैरेगी किस सहारे

पूज्य गुरुदेव तपस्वी श्री श्री श्री १००८ श्री पन्नालाल जी म० के हम तहदिल से धन्यवादी है और बारम्बार वन्दना करते है कि आप श्री ने हमारी इल्तजा पर इस छोटी सी दूर उफतादा मण्डी मे पवित्र चातुर्मास करना स्वीकार करके चन्दन की महक से दिल दिमाग को मुअत्तर करने का शुभ अवसर दिया। इस चार माह के अर्सा मे मण्डी की जनता ने तपस्वी श्री पन्नालाल जी म० के सादगी भरे उत्तम जीवन श्री चन्दन मुनि जी म० के विद्वत्ता भरे व्याख्यानो से जो नेक शिक्षा हासल की है, उस का वर्णन करना हमारी चन्द, तहरीरो तकरीर से बाहर है। आप सब का जप-तप त्याग और सयम से भरा हुआ जीवन हमारे लिए आदर्श और एक रोशन मीनारा है, जिसकी रोशनी मे धर्म पथ से भूले भटके राह देखते है और धर्म पथ पर चलने वाले जिदगी की मजिले मकसूद पर पहुँचते है। इस अर्सा चार माह मे आप ने हर मजहब और हर उम्र के स्त्री-पुरुष को धर्म प्रचार द्वारा धर्म ध्यान की तर्फ लगाकर जैन धर्म के नजदीक लाने और इस धर्म के सिद्धान्त समझाने का नेक यत्न किया मुनि जी महाराज मे कुछ ऐसा आकर्षण है कि बच्चे-बूढे देविया यहा तक कि आज के नौजवान भी आपकी तर्फ खिचे चले आते है। जिस ने एक बार मुनि श्री जी के दर्शन किए दिलो जान से गरवीदा हो गया।

इस चतुर्मास की सबसे बड़ी अहमीयत यह है कि श्री जैनधर्म के नियम-सिद्धान्त अच्छी तरह से अवाम के जहन नशीन कराके उनको जैनधर्म के ज्यादा नजदीक लाया गया। इस सिलसला मे कवि श्री चन्दन मुनि जी महाराज का धर्म प्रचार ख़ास तौर पर काबिले जिकर है। आपने अपने विद्वत्ता-पुर्ण उत्तम व्याख्यानो द्वारा आत्मा, परमात्मा के राज खोल कर दिए और अहिंसा की अहमियत अच्छी तरह लोगो के जहन नशीन कराई। जैनधर्म के साथ साथ दूसरे मजहब मुतल्लक आप विशाल वाकफियत, पुर असर और मुद्दलल हाजर जवाबीपुर तपाक मिलन-सारी, ख़ुश इख़लाकी, धर्म ध्यान और कर्म ज्ञान कुछ ऐसे विशेष गुण है जिन को वजा से आप की जात मे ऐसी कशिश पैदा हो गई है कि जिस शख्स ने आप के साथ एक मरतबा भी तबादला ख़यालात किया वो बिला नागा दर्शन करने और व्याख्यान सुनने का ख्वाहिश मन्द रहा।

हम सब पर मुनि श्री जी के पवित्र जीवन, शुभ शिक्षा, जप-तप, त्याग और धार्मिक विचारो का निहायत गहरा असर हुआ है, जिस से सस्कारो ने नशो नुमा पाई और बुरे सस्कार दूर हुए है। जिस यत्न के साथ मुनि जी ने धर्म ध्यान की लगन लगा कर हमारे दिल मे अच्छे सस्कार पैदा किए है,

हम भी ऐसे ही यत्न के साथ इन सस्कारो और धार्मिक विचारो पर पाबन्द रहने का यकीन दिलाते है और पुज्यवर गुरुदेव मुनि श्री जी म० के पवित्र चरण कमलो मे बारम्बार बन्दना करके प्रार्थना करते है कि हमे भूल न जाए और जितना जल्दी से जल्दी अवसर मिल सके फिर दर्शन दे। जी तो नही करता कि आप श्री जी को अलविदा कहे पर धर्म के कठिन नियमो से मजबूर है।

रुक नही सकते तो जाए पर मुनि जी! आपकी—
याद आएगी हमे हर रोज़ो शब, हर वक्त—हर शामो सहर

कार्तिक पूर्णिमा ]
]
२००९ ]

—मास्टर राम जी दास गोयल, बी ए बी टी
और सतसग प्रेमी विद्यार्थी
एस टी सी हाई स्कूल मण्डी गीदडबाहा
(फिरोज़पुर)

———

परम पूज्य गुरु देव श्री श्री श्री १००८ शान्तात्मा ज्ञान के भण्डार, पर उपकारी, जैन धर्म सरताज कवि श्री चन्दन मुनि जी के चरणो मे

# अभिनन्दन पत्र

सम्माननीय गुरुवर! आप कठिन तपस्वी, वैराग्य पूर्ण सराहनीय नियमोपनियमो के पालन कर्ता है। आप

का सरल स्वभाव, तपोमय जोवन और त्याग, शब्दो द्वारा वर्णन नही हो सकता। आप पूर्ण वैरागी और दया के भण्डार है। आप केवल अहिसा प्रचारक ही नही, सामाजिक सुधार मे भी बहुत बढ़-चढ कर है। आप के दर्शन मात्र से हो तन-मन मे शान्ति और शुभ भावना का उत्पन्न होना कुदरती है।

हम, मण्डी गीदडबाहा निवासी आपके चिर कृतज्ञ है कि आप अपने गुरुदेव-श्री श्री श्री १००८ आदर्श तपस्वी श्री पन्नालाल जी महाराज के साथ पवित्र चतुर्मास करने के लिए इस नगर मे पधारे जिस से हजारो दर्शनाभिलाषियो की दिली कामनाए पूर्ण हुई। हम गृहस्थ लोग आप के उत्तम गुणो और मधुर भावनाओ को ग्रहण कर के आध्यात्मिक उन्नति मे कदम रख रहे है। जिस मे आप के आशीर्वाद और चरण कमलो के प्रताप से ही सफल हो सकते है जो कि मनुष्य जीवन का लक्ष्य और ध्येय है।

इस चातुर्मास मे आप ने परम त्यागी—देवकी दा लाल-गज सुकुमाल' 'सत्य हरिश्चन्द्र' 'सगीत सजय राजर्षि', श्री विपाक सूत्र जी आदि की मनोहर कथाओ का अमृत पान कराया है, हम कदापि आप का यह महान उपकार भुला नही सकते।

अन्तमे —नम्रता पूर्वक हम प्रार्थी है कि इस छोटे से, पर प्रेम भरे क्षेत्र को कभी-कभी अपने पावन चरण कमलो से पवित्र करते रहा करें। यदि इस चातुर्मास मे हमारी ओर से कोई त्रुटि रह गई हो या भक्ति मे कमी रह गई हो तो उसे अत्यन्त उदारता से क्षमा करने की कृपा फरमाए।

## श्रद्धा के फूल

मन्न लओ गुरु जी! अर्ज साडी,
जे कर ऐथो तुसा हुण जावना जी!
जेकर कोई त्रुटि रह गई साडी,
दिल बिच मूल खयाल न लावना जी!
असी अनजान बालक है तुहाडे,
प्रेम-भक्ति दा राह दिखावना जी!
विच चरणा दे सारे है अर्ज करदे,
गुरुदेव! न सानु भुलावना जो।
साडी याद सदा दिल बिच रखना,
कदे फेर वी फेरा पावना जी।
जीव दया दा सत्योपदेश प्यारा,
असी दिलो न दूर हटावना जी।
गीदडबाहा सुहावना नगर साडा,
बिच चरणा दे सीस झुकावदा जी।
'हकीकत' दास है चरण तुहाडयादा
कृपा आप दी फक्त जो चाहवदा जी।

कार्तिक पूर्णिमा]
२००९ ]

—हकीकत राय खत्री
गीदडवाहा

वन्दे जिनवरम्

शान्त मुद्रा, ज्ञानी-ध्यानी, प्रसन्न चित्त, मनोहर व्याख्यानी

कविरत्न श्री चन्दन मुनि जी महाराज दे चरणा बिच

# श्रद्धांजलि

तार सोने दी फुल्ला दे हार चन्दन, ऐसे देखे ने विच ससार चन्दन
'गीदडबाहा' दे बिच प्रवेश कीता, शुभ घडी-शुभ लग्न विचार चन्दन
दर्शन मुख दे कीतेया भुख जावे, देवे सारे ही कम्म सवार चन्दन
वर्षा भक्ति दे फुल्ला दी सब करदे, चन्द-सूरज दी मारे चमकार चन्दन
जेहडा दर्श करदा उसदा पाप जावे, अग-अग है अमृत दी धार चन्दन
मुखो बोलन ता देख लो पुष्प भडदे, दया-दृष्टि दे हैन भण्डार चन्दन
चतुर्मास विच अद्भुत ज्ञान दस्या, कीता दया दा बहुत प्रचार चन्दन
सिफत मूल न मुहो सब कही जावे, जाइये आप तो असी बलिहार चन्दन !
गीदडवाहा निवासियो ! दर्श कर लो, बेडा करनगे तुसादा पार चन्दन
चातुर्मास दा अज्ज आखीर भाषण, मुड नही लगना जल्द दरबार चन्दन
चन्दन-चन्दन मारे कहो मुहो प्यारे ! देवे सागरो सबा नू तार चन्दन
हत्थ जोड के दास दी वेनती ए, सानू देना न दिलो विसार चन्दन !

२००९ ]
कार्तिक पूर्णिमा]

—विशेसर दास खत्री
गीदडवाहा (फिरोजपुर)

# चौमासा

### सौन

ान–साफ करके भुमि दिला दी तू
बूटा धर्म दा बीजया आ चन्दन
कक्ख-कण्डे सब भ्रम दे दूर करके
दित्ता दिलां तू गुलशन बना चन्दन
पानी प्रेम दा दित्ता नू आप हत्थी,
दित्ती नाम दी तार लुआ चन्दन
दिल दास दा देख प्रसन्न होया,
बूटा पलया बिच खुली हवा चन्दन ।

### भादो

भादो—भरम सब दिला दे दूर कीते
सिद्धा धर्म दा राह दिखाया तू
दिल फसया सी दुविधा दे विच साडा
ऐस दुविघा नू आन मिटाया तूं
रिश्ता आतमा अते परमात्मा दा,
सोहने ढग दे नाल सुलझाया तू
"चन्दन' दास नू आखया दस्स बीवा ।
क्यो नी कथा विच कदे वी आया तू

### अस्सू

अस्सू–असर होया गल्ला तेरिया दा,
मै भी बज्झ गया प्रेम दी तार अन्दर
तेरे त्याग ने मुनि जी! मोह लित्ता
तेरे जेहा न इक, हजार अन्दर
चित्त किते नी ठहरया अज्ज तीकर
आके ठहरया तेरे प्रचार अन्दर
नही भुल्लनी दास नू गल्ल स्वामी!
जेहडी कही सी तुसी *बाजार-अन्दर

### कार्तिक

कत्तक-काहली न मुनि जी! करो ऐन्नी
बूटा धर्म दा प्यासा प्रेम दा है
दिल दा शीशा ता भरम तो साफ होया
लोडवन्द पर अजे फरेम दा है
बूटा पाल ते शोशा सभाल आपे
ऐह की बेला तेरे कलेम दा है
भगता! जानदे, रोक न मल सानू,
तैनू पत्ता न सता दे नेम दा है

१—११—५०] —मास्टर राम जी दास बी ए बी टी
] गीदड बाहा

*क्या बात है मास्टर जी! कभी सतसग मे नही दिखाई दिए आप ?

# श्रद्धांजलि

करा वन्दना जोड के हत्थ दोवें,
मेरी करो स्वीकार प्रणाम चन्दन !
चातक वाँगरा लगी नित आस रहदी,
वर्षा भजन दी दित्ती आठो याम चन्दन !
दिल ता करदा नी तुसाथी विछडने नू ,
पई गृहस्थ दी ए पर लगाम चन्दन !
ध्यान रखना आपने सेवका दा,
भुल्ल जावना न होके लाहम चन्दन !
देना फेर वी आन के दर्श जल्दी,
पाके चरन करना शुद्ध धाम चन्दन !
विना दर्श दे, दर्श दे भुक्खया नू ,
कदे होमदा नही आराम चन्दन !

वेनती चतुर्मास नू

करा वेनती मन्न अरदास मेरी, चातुर्मास ! तू ही इक वार रुक जा
माडे हैंन महाराज दे नियम तगडे, ऐस वास्ते तूं ही दिन चार रुक जा
तेरा भुल्लागे अहमान न उम्र सारी, करन वास्ते भौं जलो पार रुक जा
शरण आंयां नू मोड न दरो खाली, कहना मन्न तू मेरी सरकार ! रुक जा

जवाव चातुर्मास

मेरे अपने हुन्दा जे अपने वस भाई ! करके कदे निरास न मोड सकदा
गती कर्म दी मभझ लै तोर ऐसे, चातुर्मास किमे एहनू तोड सकदा

अर्ज फेर चातुर्मास नू

अच्छा, जाना ए ता इक इकरार कर जा,
लावीं देर न, लौट के आवीं जल्दी।

रहसी वाग चकोर दे आस लग्गी,
सानू गुरा दा दर्श करावी जल्दी ।
भुल्ली आत्मा भटकदी फिरु दर-दर,
राह ज्ञान दे ऐस नू पावी जल्दी ।
पावा वास्ते दास ते मेहर करनी,
रक्खी याद विच भुल्ल न जावी जल्दी ।

वेनती महाराज जी दे चर्णां विच

आशा होर भी इक है सतगुरु जी !
करना घट-घट दे विच निवास मेरे
दूर रहदया होया भी मेरे भगवन् !
रहना आत्मा दे होके पास मेरे
पन्नालाल तपस्वी गुरु स्वामी !
चन्दनमुनि जी ! कट्टने फास मेरे
'हाकम सिंह' गरीव दी वेनती है,
जाना भुल्ल न वचन विलास मेरे

श्री श्री पन्नालाल, जो तपस्वी कमाल, होर कोई न खयाल-
बिना श्री जिनवर से
जैनधर्म दी शान, चारो वर्णों मे मान, बुड्ढा-वालक जवान-
सभी दर्शन को तरसे
जित्ये पावदे चरण, दूर दूविधा करन, धन्य-धन्य ओ धरन-
जित्थे अमृत वरसे
धन्य श्री चन्दन, करन लोक वन्दन, ए पत्र अभिनन्दन-
ग्रहण करो निज कर से

२००९ ]
मगसिर कृष्णा १ ]

हाकिम सिंह
मण्डी गीदड़वाहा (फिरोज़पुर)

# एक जैन महात्मा

नगे पाओ, नगे सर, बच-बच के कदम रखता हुआ
जा रहा है सडक पर ये कौन नीची नजर से
मुह पे पत्ती, हाथ मे पात्र, किताबे दोश पर
या नजर आता है इक औधा लटकता कमर से
सर पे तूफान सर्दियो का, तन पे वस्त्र देखिये
अकल हैरा हो रही है इसके सादा सफर से
जी तो चाहता है मिलें, बाते करे, डरता हू मैं
ये ना बोलेगे किसी भी राह चलते बशर से
दिल ने समझाया, ना डर, चल मिल जरा कर गुफ्तगू
मैं मतासर हो चला हू इसकी शाने फकर से
जव इरादा नेक, नीयत साफ, दिल मे चाह है
क्यो न बोलेगे सुना है दिल को दिल से राह है
पाओ छूए, वो रुक गए, मै चुप रहा मगर-
चेहरे से खुद ही पढली, मेरे दिल की दास्ता
वोले यू तो मान लो हम जैन सन्त है
वतला रहा है साफ ये मुखपत्ती का निशा
लेकिन असूल वही है जो रोजे अजल से
हर एक सन्त के लिए नियत है वेगुमा

ओरो की तुझ को क्या कहू, पर जैन सन्त सब
अपनाए हैं असूलो को, जब तक है जा मे जा
अहिंसा असल है अव्वली, और सत्य दूसरा
चोरी से बचना तीसरा, है जानता जहा
चौथा ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह है पाचवा
ये पाच अपने ब्रत है, पाचो ब्रत महां
साधु को प्यारे जान से ये पाच ब्रत है
साधु न इन को छोडेगा पलट जाये आस्मा
बाते सुनी, हैरा हुआ, मैं उन का हो गया
जादू का असर रखता था उस मुनि का बया
बातो मे खलूस था, चन्दन की बास थी
चन्दन, मुनि का नाम था खूबी ये खास थी

—मास्टर राम जी दास गुप्ता बी ए बी टी
गीदडबाहा
१—११—५२

दस्सा की गुरुदेव जी ! गल्ल तुहानूं
छोटा मुँह ते वड्डी है गल्ल चन्दन !
तुहाडे तुरन दा समा जद याद आवे
पैन दिला दे विच थर थल्ल चन्दन !
तुसा देखया होउगा आप अक्खी
बैठे किस तरा पुरुप राह मल्ल चन्दन !
मोडे मुडन न, राही वी नाल रलगे
दिस्सन सडक के दला दे दल चन्दन !
तुहाडे हिरदे हन पुष्पा तो वध कोमल
तुरन वेले क्यो इस तरा सख्त होए
तुहानू तुरदेया नू सानू मुडदेया नू
स्वामी ! देख के जगल दे दरख्त रोए
सोम—सफर गुरुदेव दा शुरु होया
मगल—मुडे दर्शक हो दिलगीर भारी
बुधवार बेचैनी दे नाल गुजरया
वीर वरसया अक्खा जो नीर भारी
शुक्र—शुकर जदो असी सुनया
हो गया फेर मलोट वल सफर जारी
शनि—शान्ति मिली इक तडफदयाँ नू
ऐत—आए मलोट कर तुरत तैयारी
पर एह शान्ति मुड्ढ अशान्ति दा
तुरदया बीतनी सुबह ते शाम है जी
असी देखया गौर दे नाल स्वामी !
सारी दुनिया दा सफर अजाम है जी

—मास्टर रामजी दास बी ए. बी टी.
मण्डी गीदडबाहा

८—११—५२

# समर्पण

तत्ववेत्ता आगमो के, सघ के सरदार ओ !
सस्कृत-प्राकृत-हिन्दी, विद्या-भण्डार ओ !
उच्च वक्ता, उच्च लेखक, उच्च टीकाकार ओ !
पूज्य आत्माराम स्वामी, भक्तजन आधार ओ !
पुष्प 'चन्दन' चुन के लाया, भेट हित दो चार ये !
अय दयालो ! अय कृपालो ! कीजिए स्वीकार ये !

# श्रद्धा-सुमन

१९३९ भाद्रपद शुक्ला १२ को राहो दोआबा मे सेठ मनसा राम परमेश्वरी देवी के घर अवतरित होकर चोपडा दश को चमका दिया।

१९५१ आपाढ शुक्ला ५ को वनूड नगर मे प्रात स्मरणीय शान्त मुद्रा श्री सालगराम जी म० के पवित्र चरण कमलो मे ११ वर्ष ९ महीने १३ दिन की स्वल्य सी आयु मे आप श्री ने जैनेश्वरी दीक्षा के जलते मार्ग पर अपने सुकोमल कदम वढा कर विश्व को अत्यन्त विस्मित किया।

१९६९ फाल्गुण शुक्ला ६ को अमृतसर मे, पजाब श्री जैन सघ ने आप श्री को उपाध्याय और २००३ महावीर जयन्ती के शुभावसर पर लुध्याना मे आचार्य का पवित्र पद प्रदान किया।

आप श्री के महान् व्यक्तित्व से प्रभावित होकर २००९ अक्षय तृतीय के शुभ दिन सादडी सम्मेलन मे अखिल भारतीय स्था० जैन श्री सघ ने आप श्री जी को प्रवानाचार्य पद से विभूषित किया।

आप श्री जी ने न केवल वहुत से आगमो की विस्तृत टीकाए ही लिखी है वरन् और भी विविव विपयो पर वहुत से अपूर्व ग्रन्थ लिख कर ससार का महान् उपकार किया है।

आप श्री जी की शान्ति, सरलता, विनम्रता एव आगमो का गभीर ज्ञान महान् प्रशमनीय, चिरस्मरणीय अनुकरणीय एव अद्वितीय है। किवहुना आप महान् आत्मा के इस सेवक पर भी महान् उपकार हैं, उनसे विनयावनत होकर ये दो-चार श्रद्धा सुमन श्री चरणो मे समर्पित करते हुए परम हर्ष का अनुभव करता हूँ।

—चन्दन मुनि

धर्म प्यार के गीत

ओ मानव ! गा तू ऐसे गीत ..

क्लेश-द्वेष का लेश रहे न

घर–घर फैले प्रीत

धर्म विरुद्ध संगीत–फिल्म का

दास बना क्यो क्रीत ?

नष्ट भ्रष्ट रिकार्ड कर के

हारी बाजी जीत ...

परम उन्नति चाहे जो अपनी

राह तू तज विपरीत

देश, धर्म पर 'चन्दन' तन-मन

अर्पण करदे मीत ! .

## १–नाम प्रभु का बोल

तर्ज़—बाबा! मन की आखें खोल

बन्दे! नाम प्रभु का बोल

दुनिया क्या है-रैन बसेरा, चार दिनन की खातर डेरा
माया ने क्यो तुझ को घेरा, गफलत दूर हटा कर अपनी-
आखे झट-पट खोल

गरज के बन्दे दुनिया वाले, धनी-कृपण क्या गोरे-काले
इनसे अपना पिण्ड छुडाले,'चन्दन मुनि' ये शिक्षा तुझको-
देता है अनमोल

मण्डी काला वाली
२००३ मगसिर

## २–भक्त की भावना

प्रभो! मेरे दिल म, तेरा प्यार होवे
किसी और से न सरोकार होवे

रटू नाम तेरा, जपू तेरी माला
धर्म - प्रेम की ही लगी तार होवे

भरी होवे तेरी, मेरे दिल मे भक्ति
कि-रसना पे मन्त्र नमोकार होवे

कमल - फूल सी हो मेरी ज़िन्दगानी
कोई जीव मुझ से न बेजार होवे

मेरी जिन्दगी का ये पहला सबक हो
मेरा दिल गरीबो पे बलिहार होवे
न छोडू धरम को कभी भूल कर भी
धरी चाहे गर्दन पे तलवार होवे
अय 'चन्दन' बनाले जो जीवन को चन्दन
खिली क्यो न हर जा पे गुलजार होवे

राहो
१९९९ माघ

## ३– प्यारे प्राणी

तर्ज—गम दिए मुस्तकिल

दूर गफलत तू कर,ध्यान जिनवर का धर प्यारे प्राणी!
जा रही है तेरी जिन्दगानी
लम्बी ताने पडा, सूर्य कितना चढा, ओ अज्ञानी!
जा रही है तेरी जिन्दगानी
जिसकीखातर प्रभुको भुलाया,बोझापापोका सरपर उठाया
वह रहे धन यही, साथ जानी नही, कौडी कानी
वन के बन्दा तू धर्मी दिखादे,जीवन अपना धरम पे लगादे
मास, मदिरा, जूआ, छोड चोरी, दगा, वेईमानी
जीवन अपना सफल ये वनाले,गीत 'चन्दन'प्रभु के तू गाले
नुवह शाम सदा, रटले नाम सदा, सुन ले वाणी

माईसर खाना
२००५ वैसाख

## ४-पड़ा डाल क्यों डेरे

बीत रहे दिन पगले ! तेरे
नाम प्रभु का आलस तज कर, भज ले साझ-सवेरे
बीत रहे दिन पगले ! तेरे
नीद मे सपने देख सुहाने, क्यो खुश होता है दीवाने !
आख खुले पर ये मिट जाने, पडा डाल क्यो डेरे
बीत रहे दिन पगले ! तेरे
कर कुछ वीर प्रभु का सुमरन,दो दिन का है तेरा जीवन
'चन्दन' देख उठा कर नयनन, मौत खडी है घेरे
बीत रहे दिन पगले ! तेरे

जीरा
२००५ चातुर्मास

## ५—आनन्द मनायेगा

तर्ज—जब तुम ही नही अपने

इस जग मे जो आया है, इक रोज वह जायगा
बिन धर्म किए आगे, आराम न पायगा
गफलत मे जो सोयेगा, और जन्म जो खोयगा
पछताने सिवा उस को, कुछ हाथ न आयगा
शुभ वीज जो नेकी के, वीजेगा जो हिम्मत से
फल खायेगा वह मीठे, आनन्द मनायगा

हर रोज जो जिनवर के, गुण गायगा डट कर के
घर मुक्त मे अय 'चन्दन', अपना वह बनायगा

मानसा
२००४ माघ

## ६—सुखों का झरना

तर्ज—कभी सुख है कभी दुख है

करो प्यारे! प्रभु-भक्ति, अगर ससार तरना है
तुम्हे सनसार तरने को, धरम दिन रात करना है
हुआ पैदा यहा पर जो, नही बैठा रहेगा वो
उसे सव छोड कर वगले, अरे ! इक रोज मरना है
श्री जिनदेव की भक्ति, करो सारी लगा शक्ति
विना इसके किसी को भी, न कोई और शरणा है
तजो झूठे वचन कहना, तजो तुम क्रोध मे रहना
पडे दुख तो सदा सहना, अगर कुछ काम करना है
भलाई मे भलाई है, वुराई मे वुराई है
यही है स्वर्ग का मन्त्र, सुखो का ये ही झरना है
किया जिसने सफल जीवन, जगत मे आके अय 'चन्दन'
जो टूटे कर्म के वन्धन, तो क्या मरने से डरना है

जीरा
२००५ चातुर्मास

## ७— वीर भगवान की जय

तर्ज—प्रभु दे द्वारे उत्ते धूनी ।

वीर भगवान की जय, प्रेम से सारे वोलो
गूंज आकाश जाए, ऐसे जय नारे वोलो
देखी मझधार मे नैया, आए वे बन खिवैया
गाते है उनकी महमा, साथ हमारे वोलो
मार्ग सुन्दर दर्शाया, भारत को स्वर्ग बनाया
फेरेगे उनकी माला, हिन्द दुलारे। बोलो
रक्खेगे याद हमेशा, हम तेरा दया-सन्देशा
जिस से जग हो जाए अपना,वचन वे प्यारेवोलो
हिंसक थे यज्ञ मिटाए, सुखिया जग-जीव वनाए
लाखो जिन कष्ट उठाए,उनके जयकारे बोलो
प्रेमसे झुक कर'चन्दन'करता है उन को वन्दन
जय-जय सिद्धार्थ नन्दन,भारतसितारे बोलो

धूरी
२००३ पौष

## ८—ओ चेतन प्यारा।

तर्ज—जब तुम्ही चले परदेस

तू भूल के अपना आप,रहा कर पाप,ओ चेतन प्यारा।
दुनिया मे कौन तुम्हारा

जब मौत शीश पर आयगी, कोई चीज सग न जायगी
मा, भाई, बाप न देगा कोई सहारा
ये जितने रिशते-नाते है, बस मरघट तक ही जाते है
फिर हस अकेला करता कूच बेचारा
इक धर्म-ध्यान सग जायगा, जो शान्ति-सुख पहुचायगा
ले दया धर्म की शरण मिले शिव द्वारा
नित वीतराग-गुण गाया कर,निज जीवन सफल बनायाकर
मोह-माया है जग 'चन्दन' झूठ पसारा

जैतो मण्डी
२००५ अक्षय तृतीया

## ९—मन की माया

तर्ज—कनका दिया फसला पक्किया ने

मन निशदिन नचदा रहन्दाए,सुनो जी सुनो,सुनो सज्जनो।
नही निचला हो के बहन्दा ए

कदे उड्ड असमानी जादा ए,कदे तालच डुबकिया लादाए
कुछ भेद न इस दा आदा ए, एहदा बगला बनदा ढैदा ए
मन निशदिन नचदा रहन्दा ए

जदो माला हथ विच आदीए,जग इसदी वमछिड जादीए
जद नाम जवान अलादी ए, एह उठदा ते कदे बहन्दा ए
मन निशदिन नचदा रहन्दा ए

मन ज्ञान बिना नही रुकदाए,मन ध्यान बिना नही भुकदाए
वन शेर बब्बर पया बुकदाए, नित राग अलापदा मै दा ए
मन निशदिन नचदा रहन्दा ए

मन चाल कवल्ली चलदा ए, नही टाल्या छेती टलदा ए
नर्का विच रूह नू घलदा ए, दु ख दिदा ते दुख लैदा ए
मन निशदिन नचदा रहन्दा ए

जो मन ते कावू पादा ए, भव सागर तो तर जादा ए
विन तप दे वस न आदा ए,'मुनि चन्दन' सच ए कहन्दाए
मन निशदिन नचता रहन्दा ए

मौड मण्डी
२००४ माघ

## १०–अय प्यारया · तूं

तर्ज—कित्थे गयो परदेसिया वे

होश मे आ तू, अय प्यारया। तू
सौ-सौ सारी उमर विताई, जाग अजे न तैनू आई
नीद ने मारया तू .

नाम प्रभु दा वहुत प्यारा, जेहडा पार उतारन हारा
न चितारया तू ..

धर्म अहिसा 'वीर' वताया, पापिया नू जिसने तराया
क्यो विसारया तू

सन्ता दी कर सगत बीबा ! जाग जाए जो तेरा नसीबा
उठ बेचारया ! तू..
करदे है जो पाप अठारा, नर्कां बिच जा खादे मारा
सुन हकारया ! तू
कीते कम्म हमेशा बेजा, किसे जीव दा कदे कलेजा
न ठारया तू...
रत्न-अमोलक जीवन पाके, 'चन्दन' कहन्दा पाप कमाके
क्यो हारया तू

मण्डी गोनेआना
२००५ वैसाख कृष्ण १४

## ११—वीर-विनय

तर्ज—अब जाग उठे है हम

अय वीर ! विनय मे हम, सिर तुम को झुकाते है
हो मस्त खुशी मे जय, जय तेरी बुलाते है
जब पाप-घटा छाई थी, आ तुम ने उडाई थी
हम तेरी अहिंसा पे, नही फूले समाते है
यह शिक्षा जमाने को, तुम आए सुनाने को
गरीबो को सताए जो, नही चैन वे पाते है
दया धर्म बना भगवन् ! दिया देश जगा भगवन् !
नर-नारी सभी 'चन्दन', गुण तेरे ही गाते है

डेरा बस्सी २००३ वीर जयन्ती

## १२—गाए जा

तर्ज—ज़िन्दगी है प्यार की

जिन्दगी है धर्म से, धर्म मे बिताए जा
पाप कर्म छोड कर, धर्म-धन कमाए जा
धर्म-राग गाए जा .

धर्म से तू प्यार कर, पाप सब बिसार कर
धर्म-हेत अपना सर, शौक से कटाए जा
धर्म तू निभाए जा

'वीर' सा तू वीर बन,'वीर' सा गभीर बन
वीर बेनजीर बन, वीरता दिखाए जा
वीर तू कहाए जा

वो ही तू इनसान है, बनता जो भगवान है
वीर का फरमान है, कर्म तू खपाए जा
मोक्षधाम पाए जा

मोह ये जजाल है, माया खाम खयाल हे
क्रोध, लोभ, मान से, खुद को तू बचाए जा
दूर ही हटाए जा

'चन्दन' चिराग बन, आदमी बेदाग बन
लहलहाता बाग बन, ज्ञान-गुल खिलाए जा
महक को फैलाए जा

नवा शहर,चातुर्मास २०००

सन्ता दी कर सगत बीबा ! जाग जाए जो तेरा नसीवा
उठ वेचारया ! तू..
करदे है जो पाप अठारा, नर्का बिच जा खादे मारा
सुन हकारया ! तू
कीते कम्म हमेशा बेजा, किसे जीव दा कदे कलेजा
न ठारया तू .
रत्न-अमोलक जीवन पाके, 'चन्दन' कहन्दा पाप कमाके
क्यो हारया तू .

मण्डी गोनेआना
२००५ वैसाख कृष्ण १४

## ११—वीर-विनय

तर्ज़—अव जाग उठे हैं हम

अय वीर ! विनय से हम, सिर तुम को झुकाते है
हो मस्त खुशी मे जय, जय तेरी बुलाते है
जब पाप-घटा छाई थी, आ तुम ने उडाई थी
हम तेरी अहिसा पे, नही फूले समाते है
यह शिक्षा जमाने को, तुम आए सुनाने को
गैरो को सताए जो, नही चैन वे पाते है
दया धर्म बता भगवन् ! दिया देश जगा भगवन् !
नर-नारी सभी 'चन्दन', गुण तेरे ही गाते है

डेरा बसी २००३ वीर जयन्ती

## १२—गाए जा

तर्ज—ज़िन्दगी है प्यार की

जिन्दगी है धर्म से, धर्म मे बिताए जा
पाप कर्म छोड कर, धर्म-धन कमाए जा
धर्म-राग गाए जा .

धर्म से तू प्यार कर, पाप सब बिसार कर
धर्म-हेत अपना सर, शौक से कटाए जा
धर्म तू निभाए जा

'वीर' सा तू वीर वन, 'वीर' सा गभीर बन
वीर वेनजीर वन, वीरता दिखाए जा
वीर तू कहाए जा

वो ही तू इनसान है, वनता जो भगवान है
वीर का फरमान है, कर्म तू खपाए जा
मोक्षधाम पाए जा

मोह ये जजाल है, माया खाम खयाल है
क्रोध, लोभ, मान से, खुद को तू वचाए जा
दूर ही हटाए जा .

'चन्दन' चिराग वन, आदमी वेदाग वन
लहलहाता वाग वन, ज्ञान-गुल खिलाए जा
महक को फैलाए जा

नवा शहर, चातुर्मास २०००

## १३–श्री वर्द्धमान का

तर्ज़—अफसाना लिख रही हू

अफसाना लिख रहाँ हू, 'श्री वर्द्धमान' का
जिसने पता बताया, ऊचे निशान का
दुखियो की जब पुकार ने, सीने पे चोट की
आनन्द छोड आए, थे स्वर्गो विमान का
इक लाल वह अनमोल था,'त्रिशला'की गोद का
चर्चा जहा मे हो रहा है, जिस की शान का
सत धर्म, शील, त्याग और, तप के प्रभाव ने
देखो तो तोहफा दे दिया, 'केवल ज्ञान' का
यज्ञो मे लाखो प्राणियो के, जब गले कटे
प्यासा था खू का हर कोई, लेवा था जान का
प्रभु ने बजाई बसरी, सत धर्म, प्रेम की
देखा जो हाल बदतर, हर बेजबान का
दुनिया का मैल दूर कर, कुन्दन बना दिया
'चन्दन' अमर पद पा लिया, मुक्ति स्थान का

जीरा २००५ दीवाली

## १४—जो कुछ बने बना

तर्ज—सावन क वादलो

वन्दे ! तू सर उठा, सोया है क्यो पडा
गफलत की नीद तज कर, सामा सफर बना

मजिल तेरी कठिन है, जीवन तेरा रतन है
मोह, क्रोध रहजनो से, जीवन को तू बचा .
तू जल का बुलबुला हे, हस्ति तेरी ये क्या है
जीवन है तेरी नैया, और धर्म नाखुदा
दो दिन की जवानी है,और सपने की कहानी है
है मनुष्य-जनम पाया, जो कुछ बने बना ..
जिस धर्म को अपनाया,शुभ उसने ही फल पाया
'चन्दन' के इस भजन को, जनता मे तू सुना.

फरीदकोट

## १५—ज्ञातवंशी वीर ने

लाखो पापी थे तिराए, ज्ञातवशी 'वीर' ने
ज्ञान दे राह पर चलाए, ज्ञातवशी वीर ने
यक्ष के वश 'माली, अर्जुन', खून पर बाधी कमर
दे के दीक्षा दुख मिटाए, ज्ञातवशी वीर ने
गो, 'हरिकेशी' हुए उत्पन्न कुल चण्डाल मे
प्रेम से सीने लगाए, ज्ञातवशी वीर ने
'चण्डकौशिक सर्प' ने था, डक मारा चर्ण पर
स्वर्ग-सुख उसको दिखाए, ज्ञातवशी वीर ने
कट गई थी विपदा सारी, 'चन्दना' की एकदम
दाने जब उडदो के खाए, ज्ञातवशी वीर ने
वन गया था भक्त भारी, भूपति वह 'बिम्बसार'
वचन सच्चे जब सुनाए, ज्ञातवशी वीर ने

धर्म बिना यह जीवन फीका, धर्म बिना है कौन किसी का
मतलब के सनसारी

सेठ सुदर्शन, चन्दनबाला, सहकर कष्ट धर्म को पाला
पहुँची मुक्त सवारी

अन्त समय जब सिर पर आए, धर्म सिवा कुछ सग न जाए
वाणी 'वीर' उचारी

दया से कर २ प्रीत ऐ प्यारो ।
'चन्दन' लो अब जीत ऐ प्यारो !
जीवन-बाजी हारी .

जैनेन्द्र गुरुकुल पचकूला
२००३ चातुर्मास

## ७२—वीरता संचार दे

तर्ज़—मेरे लिए जहान मे

सोया पडा जवान ! क्यो नीद को बिसार दे
बिगडी दशा जहान की, बलवीर बन सुधार दे

आलस यहा अपार है, दिल जिससे धुआ धार है
देरी लगा न तू जरा, शीघ्र इसे निवार दे

शेरे बबर सा दिल बना, जुलमो सितम को दे मिटा
वीरो की गा के बीरता, वीरता सचार दे

डका बजा दे जैन का, घर-घर फैला दे तू दया
बेडा भवर मे है फसा, 'चन्दन' इसे उभार दे

## ७३—तरनें वाले

तर्ज़—गम दिये मुस्तकिल

प्यारे प्राणी ! तू सुन, 'वीर-वाणी' तू सुन
धर्म कमाले, जीवन अपना आदर्श बनाले

पाया मानव-जनम, भूला अच्छे करम-
जाने वाले ! जीवन अपना आदर्श बनाले

नेमीनाथ जिनेश्वर सा त्यागी
बनजा जम्बू यति सा वैरागी

तोड़ कर जाल को, जो गए मुक्त हो
तरने वाले, जीवन अपना आदर्श बनाले

तारा, रोहित, हरिचन्द दानी
तारी चन्दना सती-सीता राणी

प्यारी उनकी कथा, अपने दिल मे बसा
दिल दीपाले, जीवन अपना आदर्श बनाले

'वीर स्वामी' बनो मे गये थे
धर्म की खातिर वडे दुख सहे थे

तुझको 'चन्दन' कहे आगे, उस वीर के
सर झुकाले, जीवन अपना आदर्श बनाले

ज़ीरा
२००५ चातुर्मास

## ७४—दरया प्रेम बहा

तर्ज—पी वे ढोला पी ..

गा, ओ गाफिल ! गा, वीतराग-गुण गा .

वीतराग-गुण गादा जा, एइयो तान लगादा जा
बीतराग बन जा

राग-द्वेष दुखकारी ने, दुश्मन तेरे भारी ने
फतह एना ते पा, गा, ओ

दुखिया देख के प्राणी नू , अर्पण कर जिन्दगानी नू
दरया प्रेम बहा, गा, ओ

प्रभु दा दर्शन पाना जे, अपना पन प्रगटाना जे
अपना आप भुला, गा, ओ

'चन्दन मुनि' सुनाँदा ए, तरना जे तू चाहदा ए
ध्यान प्रभु दा ला, गा, ओ

जैजो १९९९ चातुर्मास

## ७५—दीवाली

तर्ज —आए भी वो, गए भी वो .

आज दीवाली देख लो, दिल को लुभाने आगई
'वीर प्रभु' की याद ये, हम को दिलाने आगई

कर्मो की काट शृङ्खला, सिद्ध गति को पालिया
जगद्-गुरु की वीरता, जग को दिखाने आगई

गौतम के दिल मे रोशनी, कौन तिथि को थी हुई
'चन्दन' ईशारे से हमे, साफ सुनाने आगई

## ७६—कर सन्ध्या

तर्ज़—जगया

नर ! जन्म अमोलक तेरा, कि मुफत ए जावे वीतदा
वन्दया ! कि छड्ड के गफलत नू, कर सन्ध्या
नही औनी उमर ए मुडके, कि मन मे तू सोच अपने
भैडे कम्मा तो प्रीत हटा लै, कि लग जा तू प्रभु जपने
जदो मौत पुकारी सिर ते, कि कम्म नही औना धन ने
जीहनू रोज मसलदा साबुन, कि खाक होना उस तन ने
विषय-भोग तेरी मत मारी, कि एहना दी न चाह कर तू
जो चाहे जगत तो तरना, कि धर्म दा राह फड तू
तज क्रोध - मान दा करना, कि शुद्ध होवे तेरी आत्मा
दिलो लोभ - कपट नू भुल के, कि याद रख परमात्मा
करें पाप खुशी क्यो होके, कि नर्का च पऊ रुलना
'मुनि चन्दन' दी ए शिक्षा, कि एहनू नही दिलो भुल्लना

फरीदकोट
१९९७ चातुर्मास

## ७७—भगवान महावीर

तर्ज—जब तुम ही नही अपने

दया धर्म का नाद मधुर, महावीर बजाया था
सोई हुई दुनिया को गफलत से जगाया था
च हुओर पाखण्डो की, छाई थी घटा काली
उदय ज्ञान - रवि करके, अन्धेरा मिटाया था

यज्ञो मे जो बेचारे, जाते थे पशु मारे
रो - रो के जो सब हारे, प्रभु आन बचाया था
दुनिया मे मुहब्बत की, इक गग बहाई थी
हर जाति के बन्दो को, सीने से लगाया था
कोई पुरुष हो या नारी, मुक्ति के है अधिकारी
तरते हैं धरम-धारी, यह साफ सुनाया था
जो कर्म करे जैसा, फल पाएगा वह वैसा
सिद्धान्त अटल अपना, हरइक को बताया था
दुनिया को बना गुलशन, गए मुक्त वे अय'चन्दन'
देवो ने दीवाली का, तब पर्व मनाया था

मण्डी गोनेआना
२००५ फाल्गुन कृष्णा १४

## ७८—बन्दया गाफला !

तर्ज—ओ तू उड जा भोलिया पछिया

ओ तू सुन लै बन्दया गाफला ! बीबा ! जन्म न मुफ्त मे खो
तैनू सुत्तया मुद्दता होइया, वेदार तू हुण ता हो
जाना सच्च ते रहना झूठहै, ऐस जन्म दे अर्थ है दो
ऐथे रहे न फुल्ल गुलाब दे, बीबा ! खिड-खिड हस्से जो
ओए जिस्म नू धोने वालिया ! कुछ दाग तू दिल दे धो
बीबा ! पापा दी तू पोटली, सिर अपने ते न ढो

जिन्हा ऐथे जन्म गवाया, गए अन्त दुखी ओ-हो
मुनि कहन्दा 'चन्दन लाल' है, कुछ बीज धर्म दे बो

नवाँशहर
२०००, चातुर्मास

## ७९—प्यारा प्रभु का नाम है

वतज—जीया वेकरार है

प्यारा प्रभु का नाम है, जपता जो सुबह शाम है
कर्म फन्द को काट कर, पाता मुक्ति धाम है
प्यारा प्रभु का नाम है

लाख चौरासी रुलते-रुलते, नरभव उत्तम पाया रे !
काम, कपट और लोभ मे फसकर, काहे धर्म भुलाया रे !
प्यारा प्रभु का नाम है

शहद लुटे पर शहद की मक्खी, शीश धुने-पछताय रे !
ऐसे वक्त हाथ से खोकर, करेगा हाय हाय रे !
प्यारा प्रभु का नाम है ..

बुरे कर्म को छोड दीवाने, उत्तम कर्म कमाले रे !
अब तक रहा तू खुद को भूला, अब तो खुद को पाले रे !
प्यारा प्रभु का नाम है

चार दिनो की झूठी ममता, माया और जवानी रे !
तरने को कहे 'चन्दन' सुनले, श्री जिनेन्द्र-वाणी रे !
प्यारा प्रभु का नाम है

मुकेरिया
२००७ ज्येष्ठ पूर्णिमा

## ८०—मिलता चल

तर्ज—हमे तो शामे गम मे

जो है कल्याण की इच्छा, तो कुछ करता-कराता चल
खुदी को त्याग और खुद से, ख़ुदा को तू मिलता चल
किसी दुखिया को तू ससार मे देखे दवा बन जा
तू उसके जख़मे दिल पर प्रेम की मरहम लगाता चल
मिटादे दर्द गैरो का, तेरा खुद दर्द मिट जाए
किसी को देके जीवन अपना तू जीवन बनाता चल
कही उपदेश मुनियो के, न कानो तक ही रह जाए
इन्हे अपने तू मन मे बाअमल हो कर बसाता चल
अगर मन साफ है तेरा, वही एक प्रेम मन्दिर है
अन्धेरी कोठडी मे ज्ञान का दीपक जलाता चल
उपासक 'वीर' का बन और अहिसा का पुजारी बन
तू बन कर वीर सच्चा धर्म का झण्डा झुलाता चल
धर्म की राह मे 'चन्दन' तुझे काटे भी कलिया है
तू ऐसे प्रेम-रस से इक, नई लोला रचता चल

नालागढ
१९९९ जेठ

## ८१—फाटे दिल नू सी

तर्ज—पी वे ढोला पी

पी, ओ प्यारे । पी, नाम दा अमृत पी
पाकर गर्म मसाले तू, भर-भर के नित प्याले तू
पीना है क्यो टी

नाम प्रभुदा भुल्या क्यो, वदी करन ते तुल्य क्यो
कर-कर नेको जी
नरका तो घवरादा जे, स्वर्ग नू पाना चाहदा जे
वीज तू चगे बी
रट-रट 'नाभिनन्दन' नू, कट चौरासी बन्धन नू
तैनु होर मै आखा की
'चन्दन' प्रेम वढादा जा, सब नू गले लगादा जा
फाटे दिल नू सी

कालाँवाली
१००९ मगसिर कृष्णा ९

## ८२–नाम का सहारा

तर्ज—आजा मेरी वरवाद मुहवत के सहारे

सा हो कैसा, कैसा श्री जिनदेव का शुभ नाम है प्यारा
लाखो को प्यारे नाम ने है पार उतारा
इक वार सच्चे दिल से, तुम जप के देख लो
आयगा नजर आपको, इक सुन्दर नजारा
कोई मुसीवत भी नही नजदीक आयगी
ले कर के जरा देख लो इस नामका सहारा
प्यारे हृदय स्थल मे, वहे नाम का दरया
'चन्दन' जो इसमे तर गया मुक्ति को सिधारा

फरीदकोट
२००५ ज्येष्ट कृष्णा २

## ८३—इनसान बन के

तर्ज—तेरे प्यार का आसरा चाहता हू

न कर पाप दुनिया मे इनसान बनके
दिखादे जमाने को भगवान बनके

मिली चार दिन की तुझे जिन्दगी है
भुलाई क्यो प्यारी प्रभु-बन्दगी है
पडा है जो गफलत मे नादान बनके...

नही पुरुप-तन सा कोई और तन है
कि हर सास लाखो व क्रोड़ो का धन है
गवाता है हीरे क्यो धनवान बनके .

कभी जो हसाए-कभी जो रुलाए
कभी जो उठाए-कभी जो गिराए
लगा 'मन' को भक्ति मे बलवान बनके .

मिला है सुनहरी समय न गवा तू
अहिसा-सचाई की दौलत कमा तू
पडा क्यो है गफ़लत मे अनजान बनके

नही कान तक भी उन्होने हिलाये
गए अकडी गर्दन को 'चन्दन' झुकाए
जो आए थे दुनिया मे तूफान बनके

वरनाला
२०२१ चातुर्मास

# देश सुधार के गीत

ज़िन्दगी मे सादगी हो, सरलता हो, ज्ञान हो
भय हृदय मे पाप का हो, याद और भगवान हो
दिल दया से यह भरा हो, धर्म का ही ध्यान हो
शील हो, तप, भावना हो, प्रेमपूर्वक दान हो
झूठ हो न, क्रोध-छल न, लोभ-लालच-मान हो
फिर न क्यो 'चन्दनमुनि' इस जीव का कल्याण हो

## ८४—यदि तू मनुष्य है तो .

मुहव्वत भरे गीत गाता चला जा

मुहब्बत की बशी बजाता चला जा

मुहव्वत का झँडा झुलाता चला जा

मुहव्बत का प्याला पिलाता चला जा

वखेडे हैं ऊचे व नीचे के जो भी

उन्हे जड से इक दम मिटाता चला जा

सभी हम से छोटे है कहते जो ऐसा

विनय पाठ उनको पढाता चला जा

नही कोई ऊचा जनम से ही होता

कर्म जैसे वैसा वताता चला जा

प्रभु वीर जी का ये पैगाम उल्फत

जहॉ भर को 'चन्दन' सुनाता चला जा

जैनेन्द्र गुरुकुल पचकुला
२००३ चातुर्मास

## ८५—वहाना हो गया

तर्ज—आए भी वो गए भी वो

दुनिया से धर्म देख लो, अव तो रवाना हो गया

किस को सुनाए हाले दिल, वहरा जमाना हो गया

लडके का वाप पूछता, कन्या के साथ दोगे क्या ?

मोटर विना तो व्याह का, मुशकिल रचाना होगया

लडकी सुशीला हो न हो, सीता-सुभद्रा हो न हो
लडके का लालची पिता, धन पर दीवाना हो गया
मिलनी का फक्त नाम है, मोहरो से उनका काम है
काम अमीरो का हा गजब । लूट के रवाना हो गया
लाए बहू जो दाज कम, करते है उसका दम ख़तम
बेटी के बाप को सितम, सर पर उठाना हो गया
लडको का जब विवाह करे, गिरवी हवेली पिता धरे
बाद मे कठिन औलाद को, कर्ज़ चुकाना हो गया
सोने से जिनके भरे है घर, डूबे है हाय । वे वशर
बेचते है लख्ते-जिगर, व्याह-बहाना हो गया
माला फिराएँ रात दिन, छुरियाँ चलाएँ रात-दिन
'चन्दन' हरा भरा चमन, ग्राज वीराना हो गया

भटिंडा
२००५ वैशाख कृष्णा ११

## ८६—दर्द भरी कहानी

तर्ज—जव तुम ही नही अपने

हिंदियो । सुनते जाना, पुरदर्द कहानी है
अग्नि के हुई अर्पण, अवला की जवानी है
इक फूल सी कन्या की, हुई धूम से शादी थी
शादी थी या वरवादी, जाने गुरु ज्ञानी है

किस्मत ने मगर अपना, किया खेल शुरू न्यारा
गया पल मे पलट नक्शा, हुई सबको हैरानी है
कुछ दाज को कम पाकर, लडके का पिता ठाकुर
क्रोधित हो लौटा घर, कही एक न मानी है
"इक कार हो अमरीकन, सौ तोले बने भूषण
वारात को दे वर्तन, तब लडकी ले जानी है
घर अच्छा जो पायगे, वहाँ पुत्र विवाहेगे
लडकी रहे घर अपने, क्या हमने बनानी है"
गए लालची हत्यारे, रहे रोते इधर सारे
रो-रो के भी सब हारे, हुआ खुश्क न पानी है
लडकी ने मुसीबत का, खुद को ही सवब समझा
वलिदान से ही विपता, माँ बाप की जानी है
इक दर्द भरी चिट्ठी, लिख करके जली लडकी
परलोक गई 'चन्दन' वनी स्वर्ग की राणी है

गद्दीवाला
२००६ द्वि आषाढ कृष्णा ३

## ८७—जो पढाऐंगे-पछताएंगे

तर्ज जिन्दगी है प्यार मे

लडके और लडकियो की, साथ जो पढाई है
लाभ इसमे कुछ नही, हानि है-बुराई है
वात आजमाई है

कौन अकलमन्द है, जिसको ये पसन्द है
देश मे यह गन्द है, शर्म की सफाई है
सभ्यता भुलाई है.

लडके और लडकियाँ, पढते पाठ जो वहाँ
जानता है सब जहाँ, कहने की मनाही है
शील की तबाही है.

दोनो इक जमात मे, मत पढाओ साथ मे
'चन्दन' की बात मे, दर्द है-सचाई है
साफ़ कह सुनाई है

लुध्याना
२००७ पौष पूर्णिमा

## ८८–फ़ैशन का रोग

बहर तवील

भाई भारत के ये पहले सादा बडे, अब तो सादापने को हटाने लगे
करे नित्य आडम्बर बडे मे बडा, रोज फैशन नया हैं चलाने लगे
घर के भोजन से देखो हुई अरुचि, जाके होटल मे खाना है खाने लगे
अण्डे व्हिस्की से नफरत जरा न रही, धर्म अपना वहा हैं गंवाने लगे
छोड धोती को तहमद लगा भट लिया, पाव नखरे से फिर हैं उठाने लगे
विनय-भाव किया दूर दिल मे सभी, शेखी, मान-घमण्ड जताने लगे
मधुर भाषा न जिव्हा मे निकले जरा, ओ यू डैम ! हैं सबको सुनाने लगे
इल्म हासिल किया अमल कुछ न हुआ, यूं ही पूंजी पिता की लुटाने लगे

बीडी-सिगरेट बिना बाबू पूरा नही, बनके इंजन धूआ है उडाने लगे
सीजर आदि पे करके रकम यू खरच, अपना फैशन जगत को दिखाने लगे
वेश सादा गया खर्च ज्यादा बढा, इसलिए कष्ट हैं लोग पाने लगे
देश फैशन ने है ये तबाह कर दिया, बचो 'चन्दन' तुम्हे समझाने लगे

जैतो मण्डी
१९९७ जेठ

## ८९—भारतीय से

तर्ज़—ओ दूर जाने वाले

इक बात तो बतादे, भारत के रहने वाले।
घी-दूध की कहा है, नदिया-कहा है नाले ?
तेरे वतन की शोभा, गौए वे अब कहा है
अब कृष्ण से कहा है, गोपाल और ग्वाले ?
जिन वर्तनो मे वर्फी, पेडे भरे थे रहते
सूखे है उनमे बिस्कुट, चाहे कभी चबा ले !
रबडी को तरसता है, मिलती नही मलाई
किस्मत मे अब हैं काफी, चाय के दो प्याले !
तलवार' 'डालडा' पर डाली नजर है तूने
मुख मे रहे न माखन के रस भरे नवाले।
पीता था तू रोज़ाना, वो दूध ताज़ा-ताजा
अब रह गया चुरट है, सीना जला जो डाले !
अपनायेगा न जब तक, भारत धर्म-अहिसा
किस की है ताब 'चन्दन' किस्मत को जो जगाले

टाडा
२००७ प्र० आषाढ पूर्णिमा

## ९०—प्यारे भारत में

होवे धर्म प्रचार, प्यारे भारत मे

ईर्ष्या करे न कोई भाई, दिल मे सब के हो नरमाई
सरल बने नर-नार, प्यारे.

मदिरा, मास, जुआ और चोरी दूर हो जगसे रिश्वत खोरी
न खेले कोई शिकार, प्यारे

मुनिजनो का लेना शरणा, सुन उपदेश अमल कुछ करना
लेना जन्म सुधार, प्यारे .

तज कर निदा, झूठ, लडाई, गले मिले सब भाई-भाई
बहे प्रेम की धार, प्यारे.

मुख से कोई न देवे गाली, वोली वोले इज्जत वाली
मीठी और रसदार, प्यारे .

महावीर के वने पुजारी, सत्य, अहिसा-धर्म के धारी
मन्त्र जपे नवकार, प्यारे

धर्म का झण्डा लहरे मारे, प्रेम परस्पर फैले सारे
होवे जय-जय कार, प्यारे

'चन्दन' कहे सुनो नर-नारी । सादा हो पोशाक तुम्हारी
खिले अजव गुलजार, प्यारे

कपूरथला
दिसम्बर १९६१

## ९१—हमारे भारत मैं

फैला भ्रष्टाचार हमारे, भारत मे

लडको का जब व्याह रचावे, श्रीमुख से श्रीमान् सुनावें-
चाहिए तीस हजार, हमारे

घडी, अगूठी, सूट चाहिए, सैडल, चप्पल, बूट चाहिए
हार, रेडियो, कार, हमारे

इक मशीन हो सीने वाली, सोफा सैट, कटोरी-थाली
मेज, कुर्सिया चार, हमारे

सिस्टम एक और भी खोटा, कहे बराती—थाली-लोटा-
हमको भो दरकार, हमारे

सब्र न इतने पर भो आया, दोनो ओर का और किराया
मागे हाथ पसार, हमारे

खाने को जब बैठे मिलके, लाउडस्पीकर बोला दिल के--
टुकडे हुए हजार, हमारे

महाभ्रष्ट रिकार्ड गन्दे, सुन-सुन होते है खुश अन्धे
फैकी शर्म उतार, हमारे

सुने न जब तक गन्दा गाना, हजम न होता हरगिज खाना
डूब रहे मझधार, हमारे

ऐसे आते कई बराती, पीते मद्य-शर्म न आती
गिरते बीच बाज़ार, हमारे

आशा थी कुछ युवावर्ग से, लेकिन वह भी नास्तिक पन के
रखता उलट विचार, हमारे

"पाप-पुण्य की झूठ कहानी, गई उमर न हरगिज आनी
लूटो मौज बहार," हमारे ..
गन्दा खेल अगर आ जाए, युवक देखने दौडा जाए
सत्सग से इनकार, हमारे ..
गन्दी है तसवीरे जिन पर, ऐसे ला-ला भ्रष्ट कैलण्डर
भरते है दीवार, हमारे...
जब से आया नया जमाना, मद्य-मास का पीना-खाना
सीख रहे नर-नार, हमारे ..
राज्य हटाना चाहता रिश्वत, लोगो को पर ग दी आदत
गुप-चुप बेडा पार, हमारे...
जब से धर्म भुलाया 'चन्दन' सुख के कही न होते दर्शन
दुखी हुआ ससार, हमारे...

मण्डी गीदडवाहा
२००९ चातुर्मास

## ९२—प्यारे अपने देश में

तर्ज—जिया बेकरार है

प्यारे अपने देश मे, लोग विदेशी वेश मे
देखकर अय भाइयो ! पडती जान क्लेश मे
दृढ जजीर गुलामी की जब, तुमने तोड गिराई रे !
चिन्ह ईसाइयो का फिर गल मे, कैसे है नकटाई रे !

हिन्दी छोड हिद के बासी, गजब हैं कैसा ढाते रे।
वोर्ड दुकान के ऊपर देखो, इगलिश के लटकाते रे।
'स्वागतम्' से शब्द मनोहर, हिन्दी हमे सिखाती रे।
फिर भी दर पे लिखो 'वैलकम' शर्म नही कुछ आती रे।
'मिस्टर' 'डियर' और 'डार्लिग को, दासत्व की वाणी रे।
बोलोगे तुम बोलो कब तक, होकर हिन्दोस्तानी रे।
देश हुआ स्वाधीन है जबकि, दिल स्वाधीन बनाग्रो रे।
'चन्दन' चिन्ह गुलामी के सब, हिद से दूर हटाओ रे।

होशियारपुर
२००७ द्वि आषाढ कृष्णा १५

## ९३—क्या जाने !

तर्ज—मत प्रीत करो परदेसी से

जो बन्दा मोह-नशा मे है, वह दया धर्म को क्या जाने
वह धर्म-मर्म को क्या समझे, वह धर्म-मर्म को क्या जाने
जिस पाप किया उस दुख पाया, सास न सुख का इक आया
वह जीवन-बाजीहार चला, वह नेक कर्म को क्या जाने
कुसगत मे जो जाता है, सब कुछ पीता-खाता है
है ऐश ही जिसका दीन-इर्मां, वह भला शर्म को क्या जाने
जो खुदी मे अपनी चूर हुआ, ग्रौर नूर से कोसो दूर हुग्रा
'मुनिचन्दन' नर अज्ञानी, वह पुरुष परम को क्या जाने

जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला
२००३ चातुर्मास

# ९४—पन्द्रह कर्मादान

तर्ज—सुनो-सुनो ऐ दुनिया वालो

तजो-तजो ऐ दुनिया वालो। कर्मादान महादुखदाई

'कर्म इगाल' से द्रव्य कमाना, महापाप बतलाया है
'जगल का कटवाना भी' बस, इस गिनती मे आया है
'साडी कर्म' भी कर्म बन्ध का, कारण खोल सुनाया है
इसी भाति से 'भाडीकम्मे', 'फोडीकम्मे' गाया है
'दान्त', 'लाख' और 'केस' वणज से, करो न हरगिज पाप कमाई

मदिरा आदि 'रस' का 'विप' का, वणज बुरा कहलाता है
'जन्तू पीलणया कर्म' भी इकदम, दुर्गत ही दिखलाता है
'कर्म निलछन' करने वाला, पत्थर दिल बन जाता है
जानो महा सितमगर उसको, 'वन' जो पुरुप जलाता है
मरने जीव तडपकर जैसे, आखिर मरता वो अन्याई

महापाप है ठेका लेकर, सर, द्रह, कूप, सुखाने मे
पोपण करना 'असईजन' का, भारी पाप जमाने मे
कर्मादान कहे ये पन्द्रह, 'चन्दन मुनि' ने गाने मे
तत्पर रहते है जो हरदम, नर्कगति दिखलाने मे
दूर रहे जो प्राणी इनमे, मुक्त हुए कर नेक कमाई

मडी गीदड्वाहा
२००६ ज्येष्ठ

## ९५—आदमी से

तर्ज—अफसाना लिख रही हूं

दुनिया के अन्दर रोशन, उसका ही नाम है
पर हित पे प्राण गवाना, बस जिसका काम है
गर आजादी की तेरे, दिल मे है आरजू
क्यो मन अपने का मूर्ख! बनता गुलाम है
छल और कपट की छुरिया, तेरी बगल मे है
क्या पाय मुख मे तेरे, गर राम-राम है
विन छाने जल पीने से, खाने से रात को
इस चौरासी मे रुलना, पडता मुदाम है
शुभ छोड के धन्धे करता, हिसा के काम क्यो
ऐसा धन अन्त दिलाए, दोजख ईनाम है
नही नर्कगति मे पडता, नही रुलता बार-बार
नवकार की फेरे माला, जो सुबह-शाम है
'चन्दन' दो दिन जीवन है, आखिर को कूच है
नही इस दुनिया मे तेरा, दायम मुकाम है

फरीदकोट २००५ माघ कृष्णा ६

## ९६-ओ सोने वाले

ओ गाफिल! सोने वाले ओ जीवन खोने वाले!

मद मोह माया के तस्कर, है खडे ये तेरे दर
तेरे धन पर काबू पा कर तेरा सारा माल चुरा कर
है रफू ये होने वाले

झट नीद को दूर हटा तू , ओ गाफिल ! होश मे आ तू
ये लुटता माल बचा तू, न सो कर समय बिता तू
उठ नरम बिछौने वाले !...

कुछ देश-भलाई करले, कुछ नेक कमाई करले
धर कान सुनाई करले, हृदय की सफाई करले
ओ तन को धोने वाले !

शुभ काम किया कर जग मे, क्यो पाप भरे रग-रग मे
मत बो कांटे तू मग मे, ये चुभेगे तेरे पग मे
सुन कण्टक बोने वाले!

जो यहा है गाफिल होते, वे फिकर मस्त हो सोते
नही बीज धर्म का बोते, कहे 'चन्दन' अन्त वे रोते
सुन आलस ढोने वाले !

जीरा २००२ ज्येष्ठ

## ९७-अनमोल निशानी

तर्ज—जब तुम ही नही अपने

लज्जा ही तो जीवन की, अनमोल निशानी है
जिस मे ये नजर आए, कुलवान वह प्राणी है

जिस दिल मे यह रहती है, इक गग सी बहती है
दुनिया भी यह कहती है, यह पुरुष ज्ञानी है

जहा इसका न डेरा है, वहा दिन भी अन्धेरा है
नर्को मे बसेरा है, जहा होती हैरानी है

यह एक अमर फल है, अमृत सी ये निरमल है
इस मे वो अधिक बल है, कोई जिसका न सानी है
निश-दिन जो नजर नीची, रखता है बशर अपनी
दुनिया मे 'मुनि-चन्दन' इक नेक वह प्राणी है

जीरा २००५ चातुर्मास

## १८-स्वर्ण शिक्षाएं

तर्ज—ओ दूर जाने वाले...

गर चाहते हो अपना, जीवन सफल बनाना
दिल से दया धर्म को, हरगिज न तुम भुलाना
मुख से मधुर वचन ही, निकले सदा तुम्हारे
मिथ्या कभी भी भाषा, मत भूल कर सुनाना
मारो न हाथ उस पर, जो चीज है पराई
हक छीनना किसी का, सब ने बुरा है माना
जानो पराई नारी, भगिनि समान जग मे
पुत्री या बहन कह कर, हरदम उसे बुलाना
सीखो प्रति-क्रमण को, नव तत्व को भी जानो
दो वक्त 'वीर स्वामी' का ध्यान तुम लगाना
लाजिम तुम्हे है माया, मोह, क्रोध, लोभ तजना
फैशन के झगडो से, पीछे कदम हटाना
मुनि कह रहा है 'चन्दन' रटो नाम त्रिशला-नन्दन
कट जाए कर्म बन्धन, हो मोक्ष मे ठिकाना

# ९९- कवि से

कवि ! गा तू ऐसा गाना, सुन हो जाए देश दीवाना
यह दुनिया सोई जागे, सब आलस जगत त्यागे
हर भाई दौडे-भागे, हो एक, एक से आगे
मिल गावे प्रेम तराना

बल हीनो मे बल भर दे, कुछ ऐसा जादू कर दे
कोई प्रेम का ऐसा स्वर दे, हर देश पे अपना सर दे
दिल धर्म मे हो मस्ताना

कोई ऐसा राज बता दे, कोई ऐसा पाठ पढा दे
कोई ऐसा नशा चढा दे, कोई ऐसी आग लगा दे
हो मुशकिल जिसे बुझाना

हुई युवक वर्ग को भ्रान्ति, कहे आलस को वह शान्ति
यक बकन मचादे क्रान्ति, उठ खडा हो शेर की भान्ति
याद आए धर्म पुराना

मोह प्राणो का न तिल भर, कोई करे कभी दिल अन्दर
वह मन पर फूक दे मन्त्र, जो धर्म-शमा के ऊपर
सीखे हस-हस मर जाना

बढ पाप रहा है दिन-दिन, घट धर्म रहा है छिन-छिन
है मोना मग दया बिन, फिरें मूर्ख करते हिन-हिन
अब जाता जुल्म सहा न

हो पैदा वीर निराले, दया धर्म पे मरने वाले
सब टूटे छुरिया-भाले, वे मधुर पिलादे प्याले
सीखे दुख-दर्द बटाना
वह 'चन्दन' चले हवाए, जो महक चमन की लाए
मन आकर मस्त बनाए, बस मुक्ति जिस से पाए
अब जाता कैद रहा न

गूजरवाल २००० होली

## १००—अरे नौजवाना !

अरे नौजवाना ! जमाना हिलादे
जमाने को जौहर निराले दिखादे
जो आलम की छाई अन्धेरी घटाए
तू बन करके तूफान पल मे उडादे
तेरा देश तेरी तरफ तक रहा है
कदम अपना आगे बढादे-बढादे
वजद मे जिसे सुनके आ जाए रौनक
नगमा वो पुर जोश दिलकश सुनादे
अगर खूने कौमी की है बूंद बाकी
हथेली पे तू जान धर के दिखादे
तू महका दे दुनिया को बन करके 'चन्दन'
जमाने मे हर शै मोअत्तर बनादे

लुधियाना २००० माघ

# १०१—आज का आदमी

तर्ज—गीतिका छन्द

धर्म भी जजाल अब तो, है जमाने के लिए
वक्त मुशकिल है निकलना, ज्ञान पाने के लिए
आत्मा के हित की जानिब, ध्यान कुछ करता नही
जन्म है इसका तो गुलछर्रे-उडाने के लिए
धर्म या ईमान जो कुछ भी है वो बस मौज है
मौज से देखे सिनेमा, सर दुखाने के लिए
इष्ट सिमरन हो न हो, पर बूट की पालिश जरूर
है सुबह होती इसे, रेजर चलाने के लिए
है फक्त सन्ध्या यही बस, आज के इनसान की
ये नही तैयार सत्सगी कहाने के लिए
बूट-सूट और हैट पहने साईकिल पे हो सवार
शान दिखलाता है भाईयो को डराने के लिए
धर्म की ज्योति वुझा कर, कर रहा ऐसा खयाल
"मैं हुआ पैदा हू केवल पीने-खाने के लिए"
डूब न जाए कही पर, तेरे जीवन का जहाज
ये मिला 'चन्दन' तुझे तरने-तराने के लिए

फरीदकोट
१९९७ चातुर्मास

# १०२—आज के अमीर

तर्ज़—गीतिका छन्द

मान है इतना इन्हे नित राग़ गाते हम ही हम
धर्म का पर प्रेम देखो, है नमक आटे के सम
व्याह-शादी पे रुपैया कर्ज भी ले व्यय करे
दान का सुन नाम आता है लबो पर उनका दम
सन्तजन-उपदेश सुनने का समय उनको नही
पर सिनेमा मे वे देखो, कुर्सी पे बैठे है जम
जुआ, सट्टा, फाटका ही उनका दी-ईमान है
घेरे रहता है उन्हे हर वक़्त इज्जत का ही गम
सब्र या सतोष कहते है किसे, नही जानते
लोभ की खातिर ये निश-दिन खा रहे झूठी कसम
अच्छे है उन से परिन्दे निश मे जो भोजन तजे
इन की रसना रात दिन मे बैठती शायद ही थम
दूध और बिस्कुट मिठाई रोटी से चलता न काम
बर्फ, लैमन, सोडा, व्हिस्की, चाहिए चाय गरम
मौत न देती दिखाई सरके ऊपर जो खडी
ऐशो इशरत मे गवाते है अमोलक ये जनम
पाके दौलत जो नही करते अमीरी का गुमा
ऐसे भी दुनिया मे 'चन्दन' है, मगर है बहुत कम

फरीदकोट
१९९७ चातुर्मास

## १०३–अनमोल बातें

तर्ज़—ओ दूर जाने वाले...

मानव कहाने वाले । इक बात सुनते जाना
तेरे भले की तुझको, चाहता हू मै सुनाना
अपनी बहन व बेटी नारी को क्यो अकेले
सिनमा मे भेजता है, हो कर के भी सयाना
किसी गैर नारी-नर का, हरगिज न कर भरोसा
गर खुद न साथ जाए, सिनमा नही दिखाना
तेरा कोई भी कितना, प्यारा है या सम्बन्धी
उस पर भी क्या भरोसा, आखिर तो है बेगाना
सैरे चमन से पहले, यह बात भी समझ ले
अगवा की वारदाते, होती है क्यो रोजाना
नौकर जवान घर मे, मत मुफत मे भी रखना
धन धान्य, शान, जीवन, चाहे अगर वचाना
इक जा जवान लडके, और लडकिया पढे क्यो
अग्नि का मेल घी से, क्या है मुझे वताना
इक वात याद रख तू, देना जो घर किराए
जिस घर मे खुद वसे तू, पर को नही वसाना
वहनो व वेटियो को, वारीक साडियो मे
शोभा नही है देता, वाजार मे घुमाना

'चन्दन मुनि' की बाते, कडवी है या हैं मीठी
खुद वक्त ही कहेगा, कैसा है यह तराना

अबोहर
२००९ मगसिर शुक्ला २

## १०४—हिन्दोस्तां होगा

तर्ज—कभी सुख है कभी दुख है

तरक्की के शिखर पर ये, तभी हिन्दोस्ताँ होगा
जो इसके नौ निहालो मे, सचाई का निशाँ होगा
पलट जायगी काया एकदम, इस देश भारत की
न मरता रेडियो-मोटर पे जब कोई जवाँ होगा
नशा दौलत का है जिनपर, सरे वाजार बिकते हैं
जरा सोचो वतन वालो। भला उनका कहाँ होगा
ग़रीबो का लहू चूसे, जो रिश्वतखोर हो करके
इलावा नर्क के उनका, कही पर न मकाँ होगा
सुरा के स्वाद मे बरबाद है जो कर रहे जीवन
नही उनसा पशु कोई, जगत के दरम्या होगा
बराती तोडकर जाते है शीशे-चारपाइया भी
विदेशी घी को खाकर क्यो न कोई पहलवाँ होगा
फरिश्ता जान लो उसको, पुरुप जो है दया-धारी
उसी के दम से इक जगल भी 'चन्दन' बोस्ता होगा

'रामा मण्डी
२००६ चैत्र

## १०५—अहिंसा

तर्ज—जब तुम ही नही अपने .

दुनिया मे अहिसा ही, सुख स्वर्ग दिखाती है
नर्कों के महा दुख से, प्राणी को बचाती है

'मत जीव सताओ तुम, मत जुल्म कमाओ तुम,
हम सब को अहिसा ये, सन्देश सुनाती है

शाति की नदी प्यारी, सीने मे करे जारी
दुख-द्वेष की अग्नि को, इक पल मे बुझाती है

नफरत के लिए तोडे, टूटे हुए दिल जोडे
आमिल के अहिसा ही, दुख-दर्द मिटाती है

इनसान की रक्षक है, कर्मो की यह भक्षक है
तलवार से, खजर से, भय भूल न खाती है

इस देवी अहिसा के, गाधी भी पुजारी थे
भक्ति से जिन्हे जनता, नित शीश झुकाती है

सबका ही भला करना, करने से बुरा डरना
बस ये ही तो अय 'चन्दन' अहिसा कहाती है

जैतो मण्डी
२००६ अषाढ कृष्णा ५

## १०६—आज के स्त्री पुरुष

तर्ज—आए भी वो गए भी वो

भारत की गभीरता दौड है क्यो सरपट गई
क्यो यह हमारी सभ्यता, हाय सितम उलट गई

फैशन ने बनाई है, नारी-पुरुष की ये दशा

होटल मे गए मर्द जब, नारी सिनेमा मे झट गई

रेशमी सूट के बगैर, ज़िन्दा रहे न नारिया

बाबू बेचारा क्या करे, आमदनी भी घट गई

धर्म के काम जो करे, देवियो को समय कहा

उमर तो पाउडर-क्रीम और, सुर्खी लगाते कट गई

मर्ज यह पश्चिमी देश की, हिंद मे जबसे आ गई

आरोग्यता और सभ्यता, दूर है हमसे हट गई

सीता सती को प्रेम था, शील के सिगार से

स्वर्ण के भूषणो की चाह, आज गले चिमट गई

माला फिराए आज कौन,स्थानक मे जाए आज कौन

देवी से जब वो मिस बनी,काया ही सब पलट गई

होटलो के लजीजतर, खाने से है तबाह हुए

'चन्दन' जब जबान से, प्यारे प्रभु की रट गई

## १०७—आशियां होगा

तर्ज—यही बदला वफा का

खुशो की मजिलो का तब, हमे लुत्फे गिरा होगा

हमारा काफला जब, राहे नेको पर रवां होगा

मुअत्तर होगा फूलो से, जो गुलजारे वतन अपना

उसी सोने की चिडिया का, यहा फिर आशियाँ होगा

कहगे शौक से फिर हम, मिली है हमको आजादी
रसूमे बद से जब आजाद यह हिन्दोस्ता होगा
किसी की झौपड़ी पर ऑख रखे जो महल वाले
कभी उनके महल पर कोई काबज कामरा होगा
अरे लाला ! सरे बाजार क्यो वेचे है लालो को
भुला बैठा तुझे लालच ने, ले जाना कहा होगा
तू जिस धन के लिए है बेचता दीनो धर्म अपना
छलावा है या क्या है आखरश तुझ पर अयॉ होगा
तिलस्म तेरे कर्मो का, रहेगा टूटता तुझ पर
न तू जब तक गरीबो, वेकसो पर मेहरबा होगा
जहेजो की चटानो से जो टकराया जहाज अपना
तो इस बहरे फना मे कौन 'चन्दन' पासबा होगा

## १०८—सितमगर से

तर्ज—अफसाना लिख रही हू

कल्याण जो चाहे अपना, जीवो मे प्यार कर
पायगा क्या सितमगर ! तू उनको मार कर
तडपा रहा है जैसे, औरो को तेग से
तड़पेगा तू भी ऐसा, इस पर विचार कर
नेकी का फल है मीठा, कडवा है वदी का
सुन, कहते है क्या सूत्र, तुझको पुकार कर

औरो की गर्दनो का उडाने से पेश्तर

नाखुन तू देख ले अपना, कच्चा उतार कर

है तेरे जैसी सब मे, जीने की आरजू

सतगुरुओ की वाणी पे तू ऐतबार कर

अण्डे और मास करते, मन को मलीन है

ऐसा न भूल कर के, हरगिज आहार कर

दया धर्म के मार्ग पर ही, धर-धर के तू कदम

'चन्दन' कहे जाना जग से, जीवन सुधार कर

कोटकपूरा

२००५ फाल्गुण कृष्णा २

## १०९—प्रेम से रहना रे !

तर्ज—जिया वेकरार है

प्यारे हिन्दोस्तान मे, इसके हर इन्सान मे

प्रेम होना चाहिए, बूढे-बाल-जवान मे

हिन्दी और पजाबी बदले, करो न मुफत लडाई रे।

पढनी हो गर पढो मूर्खो। उत्तम प्रेम-पढाई रे..

आई फूट देश मे जबसे,लड-लड मर गए भाई रे।

अन्य बने इस देश के स्वामी,कैसी खाक उडाई रे

'जयचन्द' 'पृथ्वीराज' यदि दो,प्रेम से मिलकर रहते रे।

खाता वह महमूद तो मुँह की, कष्ट न हिन्दी सहते रे .

'वीर प्रताप' से 'मानसिह' की, अनवन भी रग लाई रे।

लाखो वीर मरे थे रण मे, ऐसी हुई तबाही रे।

कान खोलकर सुनलो भाइयो ! 'चन्दन मुनि' का कहना रे !
फूट-पुजारी बनो न हरगिज, सीखो प्रेम से रहना रे !.

जेजो २००९ चातुर्मास

## ११०—लानते जहेज़

तर्ज—हमे तो शामे गम मेकाटनी है

सभी देशो का ही सरताज यह भारत हमारा हो
जो इसके नौ निहालो ने, चलन अपना सुधारा हो
पशु विकते तो देखे मडियो मे सैकडो-लाखो
न विकता हमने देखा लाल, जो नयनो का तारा हो
सगाई जिसको कहते है, वह केवल सौदावाजी है
उधर झुकते है लाला जिस तरफ जर का इशारा हो
हया को छोड लडकी के पिता से शर्त मनवाए
"हो मोटर, रेडियो और थाल गहनो से सिगारा हो"
जनम कन्या का होने पर, मनाए शोक क्यो दुनिया
न उनके कारजो का सर पे गर इक बोझ भारा हो
करेगे पुत्री-हत्या लोग, रस्मे वद के कारण से
हमे डर है—कलकित देश न इस से हमारा हो
वेचारे देश की कन्याग्रो पर, फिर क्यो सितम टूटे
जो लेना और देना दाज का दिल से विसारा हो
नही सपने मे भी 'चन्दन' तरक्की देश की होगी
रसूमे वद से जव तक देश न आजाद सारा हो

महिला संसार के गीत

बहनो ! बनाओ अब तो, जीवन पवित्र अपना
सीता समान उज्ज्वल, करलो चरित्र अपना
फैशन, विलास, निन्दा बे-पर्दगी हटा दो
'चन्दन मुनि' का कहना, बन देविया दिखा दो

## १११—अय देवियो !

तर्ज—आजा मेरी बरमाद मुहब्बत के सहारे

कैसे, हो कैसे २ पडी हो नीन्द मे, गफलत को भगादो
भारत की सच्ची देविया बन करके दिखादो..
तुम हृदय-स्थल के बीच मे, बहादो प्रेम का दरया
फैशन के भूत को सिरसे तुम दूर हटादो..
भैरव-भवानी के कभी, पडना न फेर मे
छोडो अडगे-बहम ये, सारे ही मिटा दो..
जिन्दा चिता मे जल गई, गढ मे चितौड के
तुम शक्ति उनकी देवियो! घर-घर मे गुजादो...
'चन्दन' कहे भय-लोभ से, मत शील को तजो
तुम शेरनी हो दहाड से पर्वत को हिलादो...

## ११२—बहनों से

तर्ज—नदी किनारे बैठ के आवो

प्यारी बहनो! अपना प्यारा! जीवन सफल बनाना
रत्न अमोलक मिला जन्म यह, इसे न मुफत गवाना
उलटे फैशन दूर हटा कर, शील—शिगार सजाना
भारत की बन सच्ची देवी, गौरव देश वढाना
साडी और दुपट्टे पतले, दिल से दूर हटाना
लज्जा का है अद्‌भुत भूपण, इससे शान वढाना

छोडो लाली पाउडर मलना, नाखुन सुरख सजाना
भारत देवी को नही अच्छा, ऐसा स्वाग रचाना
कटुक-कठोर किसी को वाणी, कहकर नही दुखाना
मधुर-रसीले-मिश्री जैसे, कोमल वचन सुनाना
उत्तम जन्म मनुष्य का पाया, इससे लाभ उठाना
'चन्दन बाला' 'त्रिशला' बन कर, शोभा जग मे पाना
प्रभु-भजन का शर्बत पी कर, दिल की प्यास बुझाना
'चन्दन' प्राण धर्म पे दे कर, सत्यवती कहलाना

लुध्याना
२००० माघ

## ११३—शील का गहना

तर्ज—जब तुम ही नही अपने

गहनो मे अति सुन्दर, शुभ शील का गहना है
सजती है वही देवी, जिस गहना ये पहना है
जो शील निभाती है, सुशीला कहाती है
नही नर्क मे जाती है, पडे कष्ट न सहना है
जब सर पे विपत आई, सीता नही घबराई
रावण पे विजय पाई, दृढ तुम ने भी रहना है
यह शील अमर फल है, इसमे वो अधिक बल है
मिले मोक्ष गति 'चन्दन', भगवान का कहना है

फरीदकोट
२००५ पौष पूर्णिमा

## ११४—बारीक बाना

तज—दद दिल.

बहुत ही बारीक वस्त्र पाय कर

बहने चलती आज कल इतराय कर

साडी वाली बहन को लखा एक दिन

हो रहा था बहुत ही वेपर्द तन

सर झुकाया मैने लज्जा खायकर

मन मे आए तब मेरे थे खयाल ये

मर्द ही इनको सिखाते चाल ये

वस्त्र जो देते इन्हे मगवाय कर

लज्जा भूपण नारी का सबसे वडा

सीता आदि ने जिसे धारण किया

हो गई प्रसिद्ध सती कहलाय कर

अब तो इस से उलटी बहने जा रही

पग तले लज्जा को है ठुकरा रही

खेल देखे वे सिनेमा जायकर

यह तो आजादो का कुछ मकसद नही

छोडकर शर्मो हया घूमो कही

साफ 'चन्दन' कह रहा है गाय कर

सिरसा
१९९८ मगसिर

## ११५—शील-सिंगार

तर्ज—तेरे पूजन को भगवान

शील जगत मे है सुखकार, कर तू देवी ! शील सिगार..
शील का गल मे होवे जम्पर, शील दुपट्टा सोहे तन पर
सजे शील की शुभ सलवार.
शील की पहु ची-शील की बाली, शील की होवे छाप निराली
शील का कगन-शील का हार
शील का स्वर हो-शील का गाना,शील ही साजग्रोर शीलतराना
छिडे शील का फिर मल्हार..
शील का खाना, शील-का पीना, शीलका मरना,शीलकाजीना
शील का सारा हो संसार..
शील ही सुनना-शील ही कहना, शील की माला जपते रहना
शील की दुनिया है गुलजार
फैशन सारे दूर हटाओ, शील की रट दिन-रात लगाओ
'चन्दन' होवे बेडा पार·
जेजो १९९९ चतुर्मास

## ११६—हिन्द देवी का गीत

तर्ज—आए भी वो गये भी वो..

वीर प्रभु के नाम की, माला फिराऊंगी सदा
वनके सुशील मैं सुना, जग को दिखाऊ गी सदा
छल से जाऊ न मैं छली, क्रोध मे जाऊ न मैं जली
भारत मा की लाडली, देवी कहऊंगी सदा

भूषण शील और सत्य के, डालूगी अपने मै गले
इगलिश फैशन जो चले, उनको हटाऊगी सदा
भैरव-भवानी छोडकर, गूगा-मसानी छोडकर
प्यारे 'जिनेन्द्रदेव' का, ध्यान लगाऊगी सदा
छाने बिना मै जल कभी, काम मे लाऊगी नही
'चन्दन' ज्ञान के दीप से, जनम दीपाऊगी सदा

जैतो मण्डी
२००५ ज्येष्ठ शुक्ला २

## ११७—बालिकाओं का गीत

तज—प्रभु दे दुआरे उत्ते

पर्व पर्यूपण भैणो ! जग नू जगाई जादा
शिक्षा ए प्यारी-प्यारी, सब नू सुनाई जादा
सोहना सन्देश देके, मिटठा उपदेश देके
झगडे-क्लेश सारे, साडे मिटाई जादा
मिलना सिखावे सानू खिलना सिखावे सानू
द्वेष दे भाव दिल तो, दूर हटाई जादा
प्यारी है जान सब नू, प्यारे है प्राण सब नू
धर्म अहिंसा सच्चा, सानू सिखाई जादा
जीवन सुधार कर लौ, बेडा ए पार कर लौ
धर्म दे राह ते 'चन्दन' देखो लगाई जादा

फरीदकोट, २००२ चातुर्मास

## ११८—सती राजमती

तर्ज—बालम आन बसो मोरे मन मे

बालम छोड गए मोहे बन मे...

सुन कर पशुअन करुण पुकारा, जग से कीना नाथ किनारा
खूब विचारा-जनम सुधारा, मस्त हुए निज मन मे...
धन्य है स्वामी जग के त्यागी, बन-बन घूमे बन बैरागी
ऐसी सुरतिया मुगत से लागी, योग लिया यौवन मे...
जग से तजकर अपना नाता, सयम धारु मै भी माता!
जग से मेरा मन घबराता, अब न रहू महलन मे
तजकर 'चन्दन' झूठ पसारा, राजमती तब सयम धारा
सयम धारा-खुद को तारा, सिद्ध हुई जा गगन मे

फरीदकोट
२००३ वैसाख

## ११९—की मत मारी है

दो गुत्ता वाली ऐथे, हुन आई नई बीमारी है
हर देवी दे मन भाई, की व्याही ते की क्वारी है .
करके सिरका दूर मिरा तो, खूब बाल चमका के
फिरदिया रहन बाजारा अन्दर, सुर्खी-पाउडर लाके
पर पुरुष तो ना ए मगन, की फैशन ने मत्त मारी है .
इक वेला सी सीता वाकन, रहन्दिया भैणा सादा
शर्म-हया ते शील धर्म दा, ध्यान बहुत सी ज्यादा
हुण होया उलट जमाना गई, दूर सादगी मारी है

पति नू घर दे विच बिठाके, देखन आप सिनेमा
खाना खावन होटल अन्दर, हिद देश दिया मेमा
जे करे कोई हित शिक्षा, महाभारत हुन्दा जारी है. .
फैशन ते कुर्बान देविया, पढ के नई पढाई
करदिया सैरा साइकिल चढके, सारी शर्म गवाई
'चन्दन' द्रोपद, चन्दन बाला, जही न हुन इक नारी है .

बरनाला
२००८ चातुर्मास

## १२०–एह तां विचार लौ

तर्ज—झोक

जीवन सुधारो बहनो ! जीवन सुधार लौ
मिलया है मौका, वेडा पार उतार लौ. .
फ़ैशन-विलास छड्डो, मेमा दा भेप जी !
जीवन तुहाडा सुधरे सुखिया हो देश जी
भारत दी नैया डुवदी जादी है तार लौ ..
जेवर सजादे तन नू, झूठा ए मान है
शील है जिस दे पल्ले, सुन्दर महान है
चन्द्रमा उत्ते जरा, झाती ते मार लौ...
मार के कीडे रेशम, हुन्दा तैयार है
फिर भी नही रेशम नालो, हटदा प्यार है
काहदे लई हुन्दी हिसा, एह ता विचार लौ...

भुलके वी कडवी वाणी, मुहो न बोलना
शब्दां दे मोती सुच्चे, ऐवे न रोलना
मिश्री तो डाडी मिठ्ठी, वाणी उचार लौ...
नइंओ नतीजा चगा, करना क्लेश दा
गौरव है घटदा साडी, कौम ते देश दा
शिक्षा है मन्नण वाली, हृदय बिच धार लौ...
मिलदा आराम ओहनू, धरम जो पालदी
शिक्षा एह याद रखना, 'चन्दन लाल' दी
धर्म दा लैके शरणा, पाप निवार लौ .

अमृतसर
१९९८ पोष

## १२१—वहने ही जानें !

तर्ज़—ये भोला वालम क्या जाने

ये प्यारी वहनें ही जाने ..
क्यो रेशम लोग वनाते है, क्यो जीव सताए जाते है
क्यो दया न दिल मे लाते है, क्यो फैशन फैले मन माने
क्यो व्याह मे उधम मचाती है, क्यो गीत निकम्मे गाती है
क्यो गा-गा कण्ठ बिठाती है, क्यो घड़-घड देती है तानें.
क्यो होई-तीज मनाती है, क्यो चान्द देखकर खाती है
क्यो कवर पूजने जाती है, क्यो सुने न 'चन्दन' के गाने .

जामल २००८ फागुण

## १२२—देवियाँ का गाना

तर्ज—गम दिए मुस्तकिल

'वीर' प्यारे को हम, तारन हारे को हम, सिर झुकाएं
देवियाँ बन सुशीला दिखाए .
सोलह सतियो के सम, करके ऊचे करम, गीत गाए
देवियाँ बन सुशीला दिखाए
शील धर्म पे जीवन को वारे, शक्ति सीता सति जैसी धारे
पाले अपने धर्म, रक्खे लज्जा शर्म, प्राण जाये...
पद्मा,द्रोपदी सती चन्दन वाला,कष्ट राजुल ने सरपर सम्भाला
नेक राह पर चली, दूर सर से हुई, सब बलाए
फिलमी-फैशन बुरे जो चले है,दुनिया वाले जिन्होने छले हैं
दूर उनको हटा, धर्म'चन्दन' कमा, नाम पाए .

जीरा
२००५ चातुर्मास

## १२३—देवी कहाई जाना

तर्ज—प्रभु दे द्वारे उत्ते धूनी

जीवन अनमोल बहनो। सफल बनाई जाना
वीर जिनेश्वर जी दे, गुण तुम गाई जाना
कडवा न बोल कहना, कोई गर कह दे सहना
ज्ञान दा सुन्दर गहना, तन ते सजाई जाना
भारी गुणवान बनना, सतिया दी शान बनना
सीता समान बनना, देवी कहाई जाना

जीवन सुधार करना, शील–सिगार करना
बेडा ए पार करना, धर्म कमाई जाना
धर्म–ख्याल रखना, जीवन दे नाल रखना
कदम सम्भाल रखना, जीव बचाई जाना
वक्त ए मिलिया आला, धर्म दा पी लौ प्याला
वन के तुम 'चन्दन वाला' जग नू जगाई जाना
'चन्दन' चितार दिल मे, मन्त्र नवकार दिल मे
शिक्षा ए धार दिल, कर्म खपाई जाना

लुध्याना
२००० फाल्गुण

## १२४—मंगल गान

आवो री सखी ! मिल मगल गाए
मगल गाए, हर्ष मनाए, जय-जय शब्द गुजाए
आज जन्म लिया वीर जिनेश्वर, सुर-नर-मुनि हर्षाए .
माता त्रिशला-पिता सिद्धार्थ, फूले नहीं समाए
लाड-लडाए, गोद खिलाए, देख-देख बलि जाए...
याचक आन बधावा बोलत, मगल-गीत सुनाए
हर्ष मगन हो भूपति नाचो, हीरे-रत्न लुटाए .
महि-आकाश मुदित है सारी, मुदित है सर्व दिशाए
भारत-भाग्य उदित हुआ दिनकर 'चन्दन' हर्ष मनाए

जीरा

## १२५—चाहिए

तर्ज—यह तो मैं क्योकर कहू तेरे खरीदारो मे हू

जन्म ये सादा तुम्हे, अपना बनाना चाहिए
दूर फैशन के अडगे को भगाना चाहिए
क्या धरा टाकी-सिनेमा के नज्जारो मे भला
खेल गन्दे देखने हरगिज न जाना चाहिए
पर पुरुप पहनावें चूडी, यह कहा का धर्म है
धर्म अपने आप अपना, न गवाना चाहिए
स्वर्ण-चादी-भूषणो का, मोह तज कर अव तुम्हे
लज्जा-भूपण से वदन, अपना सजाना चाहिए
भेप, भूपा, भापा, भक्ति, सबमे होवे सादगी
सादगी का ही जवा पर, अव तराना चाहिए
धारकर सम्यक्त्व तुमको, वनना चाहिए श्राविका
दूर इस मिथ्यात पापन को हटाना चाहिए
हर सुवह और शाम सामायक करो तुम प्रेम से
नित श्री नवकार की, माला फिराना चाहिए
है ये काबिल कण्ठ करने के 'मुनि चन्दन' का गीत
याद करके रोज सबको हो सुनाना चाहिए

फरीदकोट
१९३७ चातुमास

## १२६—बहनों का दर्शनार्थ जाना

फैशन की मतवाली बहने, दर्शन को जब जाती है
टीप-टाप के किए बिना नही, अपने कदम बढाती है
जम्पर आदि जितने घर मे, बक्स मे लेती सारे भर
बन-ठन करके गाडी मे है, करती बहने सदा सफर
सूट बिना नही दर्शन फलते, ऐसा खयाल जमाती है
छाप, अगूठी, बटन, गोखरू, काटे आदि जो मशहूर
और जगह चाहे पहने न, पर दर्शन मे ये होय जरूर
गोल्ड वाच भी बडी जरूरी, इसको अवश्य लगाती है
और तो और सुनो अब आगे, बूट भी ऊची एडीदार
चलना होवे मुश्किल जिनसे, देख हँसे सब नर और नार
कर आस्रव बनावे सम्बर, गगा उल्ट बहाती है
दर्शन कर जब वापिस आकर, घर मे जाती है ये ठहर
हाल सुनाए सखियो को हम, देखे ऐसे-ऐसे शहर
कही का बाग, बाजार कही का, सारा कुछ बतलाती है
पूछे अगर कोई यूँ उनसे, कहा-कहा क्या सुना व्याख्यान ?
टाल की बात बनावे कुछ पर, सूत्र का नही जरा है ज्ञान
कहती है कभी इतनी बातें, याद कहाँ रह पाती है ।
दर्शन मे सदा रेशमी वस्त्र, सजते है क्या करें ख्याल
सच तो बात हुई है ऐसी, बिना नमक ज्यों खीर मे दाल
बहनों का भी मुफ्त ही, अपने साथ ये बोझ उठाती है

दर्शन को जब जावे 'चन्दन', भूपण हो न ज्यादा पास
सूट-बूट को छोड-छाड कर, होवे सादा-शुद्ध लिबास
अमल करे जो सादगी ऊपर, श्रविका वही कहाती है

फरीदकोट
चातुर्मास १९९७

## १२७—रेशम

जिस रेशम नूँ पाके भैणाँ, अपनी शान वधादिया ने
उस रेशम दे बनने अन्दर, लखा जाना जादियाँ ने
रेशमी कीडे पुत्रा वागू, पहला पाले जादे ने
विच तूत दे पत्तया दे ओ, खूब सभाले जादे ने
खा-खा पत्ते मु हो वेचारे, तार उगाले जादे ने
रिझदे-रिझदे पानी अन्दर, फेर उबाले जादे ने
तडप-तडप ओ मरदिया रुहा, पत्थर नू पिघलाँदिया ने
इज रेशम दे वनने अन्दर, लखा जाना जादिया ने
इक गज रेशम बनदा ए जद, जीव हजारा मरदे ने
भोले-भाले जीव तडप के, खतम जिदगी करदे ने
जेहडे सूट सिलावन इसदा, नही पाप तो डरदे ने
'वीर प्रभु'दी वाणी ते नही, ध्यान जरा ओ धरदे ने
'चन्दन' चन्द दिना दया मौजा, आखिर नर्कबखादिया ने
इस रेशम दे बनने अन्दर, लखा जाना जादिया ने

फरीदकोट २००२ चातुर्मास

## १२८—आज की औरत

तर्ज—हिमालय की चोटी पर से

सानी इसका मिलना मुश्किल, किसी भी और जमाने
आज की औरत ले गई नम्बर, फैशन खूब बनाने
सीता सती सी बनने की न, हरगिज बात विचारेगी
फिल्मस्टारो से भी बढ कर, किन्तु बाजी मारेगी
फैशन की मतवाली ही अब, बिगडी दशा सुधारेगी
दूर हटो अब देवी ऐसी, भारत नैया तारेगी।

छुपी हुई आजादी बैठी, देखो इसके बाने मे।
सर पे डाल दुपट्टा चलना, यह भी है अब उसे मुहाल
कंधे पे रख सिरका अपने, किया सारा दूर जजाल
कान के काटे दुनिया देखे, और ये फैशन एबुल बाल
टीप-टाप का रहना है, हर वक्त लगा बस उसे खयाल
[illegible] समझती है ये फैशन, दुनिया को दिखलाने मे
साड़ी और [illegible] दिन को, पतले-पतले भाते है
[illegible] गले के भूषण, नजर कि जिन मे आते है
[illegible] सूट रेशमी, शौक से पहने जाते है
[illegible] गर्म [illegible] को, बट्टा जो लगवाते है
[illegible] है मह अपना पाउडर से चमकाने मे
[illegible] अब, भारत मे है [illegible] हुआ
[illegible] आम ये आज [illegible] हुआ

पैर का जूता-सैण्डल भी अब, फैशन मे सरताज हुआ
शर्मो हया का सुन्दर भूषण, विदा जगत से आज हुआ
नक्शा खैंच दिया शहरो का, 'चन्दन मुनि' ने गाने में

नवा शहर
२००० चातुर्मास

## १२९-जनम मुफ़्त क्यों हारो

तुम देवियो! जनम सुधारो
बिन बाहो की देख के बण्डी, करे तुम्हारी दुनिया भण्डी
कुछ तो जरा विचारो
जालीदार दुपट्टा सर पर, लेकर दौडी फिरती घर-घर
आखे जरा उघाडो
छोडो रेशमी सूट निकम्मे, ऊ ची एडी बूट निकम्मे
पैर न इन मे डारो
सती सुभद्रा, चन्दन वाला, बनकर करदो ज्ञान उजाला
धर्म-शील शुभ धारो
सकट-चौथ और नौ नौराते, कुछ भी लाभ नही पहुँचाते
जन्म मुफत क्यो हारो
नाम प्रभु का प्यारा है जो, जग से तारन हारा है जो
'चन्दन' उसे चितारो

सुनाम
२००२ फाल्गुण

# १३०–सती राजमती का वैराग्य

तर्ज—कभी सुख है कभी दुख है

सखी! रोको न तुम मुझ को, मै गढ गिरनार जाऊंगी
　कि प्यारे नेम स्वामी के, वहा जा दर्श पाऊंगी
दया पशुओ की ला मन मे, मेरे प्रीतम गए वन मे
　लिया है योग यौवन मे, उन्हे जा सर झुकाऊंगी
किसी ससार के सुख की, नही खाहिश जरा मुझको
　चले जिस राह पर स्वामी, कदम मै भी बढाऊंगी
ये झूठी जग की माया है, धरा क्या खाक है इसमे
　बचाऊंगी स्वय को मैं, बचाऊंगी-बचाऊंगी
कठिन इस योग का पालन, करेगे गर मेरे बालम
　तो मै भी हो के क्षत्राणी, भला क्यो खौफ खाऊंगी
सखी! ससार के सुख ये, असल मे सुख नही हरगिज
　जिन्हे प्रीतम ने पाया है, उन्हे ही मै भी पाऊंगी
हटा दो मखमली बिस्तर, नही ये फूल, कांटे है
　वैरागन नेम की हू, [illegible] ही बिछाऊंगी
उतारो हार यह गले से, उतारूं चूडिया कगन
　लिया वैराग जब मैने, नही तन को सजाऊंगी
वैरागन हू [illegible] मुझे [illegible] की अब सखियां!
　[illegible] मै अब मन को लुभाऊंगी

निकालो कान से हीरे व मोती के जडे जेवर
मै हर प्रकार से जीवन, सखी। सादा वनाऊगी
मुझे इक श्वेत साडी दो, न हो रगीली-चमकीली
हुआ वैराग जब सच्चा, वैरागन वन दिखाऊगी
ये इत्रो तेल कघी और शीशा भी हटा डालो
मुझे महन्दी नही चाहिए, धर्म महन्दी रचाऊगी
सजावट और बनठन से, हुई नफरत मेरे जी को
मै सुरमे की जगह, भगवान को आखो मे वसाऊगी
चलूगी नकशे पा पर अब तो, बस मै नेम प्यारे के
किसी के और कहने से न, राह अपनी भुलाऊगी
'मुनि चन्दन' रत्न जीवन, बडी मुशकिल से पाया है
तपस्या की भुजाबल से, इसे ऊचा उठाऊगी

## १३१- सखियों का राजमती से

कैसे फुरक़त तेरी हम सहेगी सखी।
कैसे तेरे बिना हम जियेगी सखी!
याद तेरी सदा हम को कल्पायेगी
चैन हम को नही एक पल आयेगी
हाय। नैनो से नदिया बहेगी सखी!
खूब महलो मे हम गीत गाती रही
और हस-हस के दिल को लुभाती रही
बात सुख-दुख की किससे कहेगी सखी!

## १३०–सती राजमती का वैराग्य

तर्ज—कभी सुख है कभी दुख है

सखी! रोको न तुम मुझ को, मै गढ गिरनार जाऊगी
कि प्यारे नेम स्वामी के, वहा जा दर्श पाऊगी

दया पशुओ की ला मन मे, मेरे प्रीतम गए वन मे
लिया है योग यौवन मे, उन्हे जा सर झुकाऊगी

किसी ससार के सुख की, नही खाहिश जरा मुझको
चले जिस राह पर स्वामी, कदम मै भी बढाऊगी

ये झूठी जग की माया है, धरा क्या खाक है इसमे
बचाऊगी स्वय को मै, बचाऊँगी-बचाऊगी

कठिन इस योग का पालन, करेगे गर मेरे बालम
तो मै भी हो के क्षत्राणी, भला क्यो खौफ खाऊगी

सखी! ससार के सुख ये, असल मे सुख नही हरगिज
जिन्हे प्रीतम ने पाया है, उन्हे ही मै भी पाऊगी

हटा दो मखमली बिस्तर, नही ये फूल, काटे है
वैराग्य नेम की है, त्याग शय्या ही बिछाऊगी

उतारो हार यह गल से, हटाऊ चूडिया कगन
लिया वैराग्य जब मन ने, नही तन को सजाऊगी

वैराग्य है [illegible] कहा सबने भवन की जय मणियां!
[illegible] नेम स्वामी से मै अब मन को [illegible]

निकालो कान से हीरे व मोती के जडे जेवर
मै हर प्रकार से जीवन, सखी । सादा बनाऊंगी
मुझे इक श्वेत साडी दो, न हो रगीली-चमकीली
हुआ वैराग जब सच्चा, वैरागन बन दिखाऊगी
ये इत्रो तेल कघी और शीशा भी हटा डालो
मुझे महन्दी नही चाहिए, धर्म महन्दी रचाऊगी
सजावट और बनठन से, हुई नफरत मेरे जी को
मै सुरमे की जगह, भगवान को आखो मे बसाऊंगी
चलूगी नकशे पा पर अब तो, बस मै नेम प्यारे के
किसी के और कहने से न, राह अपनी भुलाऊगी
'मुनि चन्दन' रत्न जीवन, बडी मुशकिल से पाया है
तपस्या की भुजावल से, इसे ऊचा उठाऊगी

## १३१- सखियों का राजमती से

कैसे फुरकत तेरी हम सहेगी सखी ।
कैसे तेरे विना हम जियेगी सखी !
याद तेरी सदा हम को कल्पायेगी
चैन हम को नही एक पल आयेगी
हाय । नैनो से नदिया वहेगी सखी !
खूब महलो मे हम गीत गाती रही
और हस-हस के दिल को लुभाती रही
बात सुख-दुख की किससे कहेगी सखी !

तेरा कोमल कमल सा ये नाजुक बदन
कैसे संयम करेगी तू धारण कठिन
देख दुखिया तुझे सब जरेगी सखी ।
साथ तेरे थी दुनिया हमारी सुखी
होगा जीवन तेरे बिन ये भारी दुखी
हाल किससे कहेगी-सुनेगी सखी ।
गर इरादा बदल आप सकती नहीं
छोड़े तुझको अकेली ये भक्ति नहीं
कहे 'चन्दन' तेरा साथ देगी सखी ।

नवाशहर दोआबा
२००० [illegible]

## १३२-सती चन्दन बाला

तर्ज—सारे देशां विच्चों देश पंजाब

चन्दन बाला सतियां विच प्रधान नी भैणो ।
राजा 'दधिवाहन' दी पुत्री प्यारी, माता धारणी राणी
चम्पा नगर दी शान वधारी, हर थां धर्म निशानी
सन्त बणके, रखया धर्म ईमान नी भैणो ।
सारी उस [illegible] चलके, विच बाज़ार विकाई
'धन्ना सेठ' ने खरीददा उसनू पई धर्म-कमाई
[illegible] उसने [illegible] दी पहचान नी भैणो ।

धनदत सेठ दी नारी 'मूला', दिल दी पापण-काली
सोचे, सेठ बनाऊँ इस नूँ, मैनू छड्ड घर वाली
उत्तो कहन्दा पुत्री, बेईमान नी भेणो ।
इक दिन सेठ गया सी बाहर, सी कोई कम्म जरूरी
मूला खुशी मनावे दिल विच, आशा हो गई पूरी
हुण की करदी, देखो धरके ध्यान नी भैणो ।
मुन्ने बाल, लगाई बेडी, भोरे विच्च गिराई
जडके जिन्दा दुष्ट सेठानी, पेकया दे घर आई
आया सेठ, होया बहुत हैरान नी भैणो ।
पता लगाके कढया बाहर, दित्ते उडद दे दाने
सद्दन गया लुहार नू आए, वीर पारना पाने
कट्टे बन्धन, दित्ता खुश हो दान नी भैणो ।
सँयम लै फिर करनी कीती, दुनिया बहुत सुधारी
मुख तो बोलन धन-धन 'चन्दन' सारे ही नर-नारी
पाई मुक्ति, पाकर केवल ज्ञान नी भैणो ।

जीरा
२००२ ज्येष्ट

## १३३–सती राजमती

मैं जाना तज सनसार नी माए । बरज न मैन ..
जल्दी दे आज्ञा मैं स यम धारा, जीवन अपना तुरत सधारा
झूठा जग-व्यवहार नी माए । वरज न मैंन

ज्ञान दी जोत जगी मन माही, जगत दे अन्दर मै रहना नाही
होना भवजल पार नी माए, वरज न मैनूँ
दुनिया ए झूठा धुन्ध पसारा, जल्दी करा मै एतो किनारा
मन्त्र जपा नवकार नी माए । वरज न मैनूँ
की लैणा मैं करके ऐश-बहारा, तनमन क्यो न मै धर्म ते वारा
हो जाए मेरा उद्धार नी माए । वरज न मैनूँ
धर्म दे नाल जो प्रीत लगावे, जन्म मरण दा भय मिट जावे
पावे मोक्ष द्वार नी माए । वरज न मैनूँ
रत्न के मनी ने दृढता भारी, आज्ञा लै माता दी दीक्षा धारी
हो गई जय-जयकार नी माए । वरज न मैनूँ
'चन्दन' जद इस दीक्षा पाई, गनिया दी सरदार कहाई
देखो मस्त बहार नी माए । वरज न मैनूँ

सरदूलगढ २००३ पौष

## १३८–बाल जन्म पर बहनों का गीत

तर्ज—श्री दूर जाने वाले

भगवान 'वीर' की जय, बहने बुला रही है
बालक के शुभ जनम पर, खुशियाँ मना रही है
त्रिशला-सिद्धार्थ को, मुनिराज व सती को
जिन धर्म स्वामी को, हम सर झुका रही है
जिनधर्म का उपासक, जिनधर्म का प्रकाशक
कुलका बनेगा दीपक, आशा लगा रही है

मा बाप का पुजारी, होगा यह आज्ञाकारी
महिलाए मिलके सारी, मगल मना रही हैं
'गौतम' सा ज्ञान पाए, 'भामा' सा दिल बनाए
कुलवान कुल दिपाए, कर भावना रही है
माता जी लाडले की, दिलकश सुनाए लोरी
बालक की बहने प्यारी, झूला झुला रही है
झूला वो प्रेम का है, दिल मे लटक रहा है
आशा की जिस मे कलिया, यौवन दिखा रही है
प्रिय इस को जैनमत हो, सच्चा ये गुर-भगत हो
'चन्दन' ये कुल की पत हो, सब गीत गा रही है

जीरा
२००५ चातुर्मास

## १३५—घोड़ी के समय बहनों का गीत

तर्ज़—आए भी वो गए भी वो

घोडी है प्यारे भाई की, मगल मनाए आज हम
शासन नायक वीर की, जय-जय बुलाए आज हम
शरणा है अरिहन्त का, सिद्ध प्रभु सत सन्त का
केवली ज्ञान अनन्त का, गुणवाद गाए आज हम
शरणे कहे ये 'चार है, जैनधर्म सिगार है
उत्तम मँगलकार है, मुख से सुनाए आज हम
मत्र श्री नवकार को, सब दु ख भजन हार को
इसके अनहद प्यार को, मन मे बसाए आज हम

## १३७—फेरों के वक्त देवियों का गीत

तर्ज—जब तुम ही नही अपने

जोडी ये वधु-वर की, आदर्श कहाएगी
आशा है किया प्रण जो, पूर्ण ये निभायगी
बन करके सदाचारी, दिखलाए गे हितकारी
कोई बात बुरी दिलमे, दोनो के न आयगी
कोई काम बिना पूछे, पतिजी न करे इनके
पत्नी भी कदम कोई, ऐसा न उठायगी
दोनो के कमल दिल मे, सत प्रेम भरा होगा
कोई बात कदूरत की, दिल मे न समायगी
दृढ धर्मी बनेगे ये, पराक्रमी बनेगे ये
आशा है सदा जोडी, मीठे फल खायगी
स्थानक मे सदा जाकर, गुरुदेव-दर्श पाकर
प्रभु वीर के गुन गाकर, आनन्द मनायगी
'चन्दन'का मधुर गाना, मत भूल कभी जाना
हर एक कली इस की,हर दिल को लुभायगी

फरीदकोट

२० ५ माघ शुक्ला ८

## १३८—सखी की बिदायगी का गीत

तर्ज—कभी सुख है कभी दुख है

पिता माता को 'जय जिनदेव' कह, सुसराल जाना तुम
लिए जिनदेव का शरणा, कदम आगे बढाना तुम

समझना सास को माता, श्वसुर अ

विनय और प्रेम से रहकर, सदा शु

चचा तुम जेठ को कहना, अदब करना

पिया का छोटा भाई, भैया कह क

देरानी और जेठानी, ननद आदि जो

बुलाओ जब भी तुम उनको, मधुरता से

धर्म-भागी श्री पतिदेव की, आज्ञा मे

पति-सेवा मे वन करके, सती सीता

सदा नन्दन सचाई का, सजाना सूट तुम

अहिंसा धर्म के पालन मे तन अपना

## १३९—सुशीला बहनों !

तर्ज़—जगया

एह जनम अमोलक भारी, न फेशन दे विच गालियो
बहनो ! कि लज्जा गहने नू, तुसा नित पहनो
तजो चटक-मटक दे कपडे, कि सादा सारा भेष करो
रहो रोज प्रेम से मिलके, कि-कदे नही क्लेश करो
नही खानी कदे भी चुगली, कि-ऐसा होर पाप नहीं
जपो वीर प्रभु दी माला, कि-ऐसा होर जाप नहीं
नही देना किसे नू मेहना, कि-सीने विच तीर वजदा
करो सफल जनम नू जल्दी, समय जान्दा हत्थों भजदा
इतिहास पुराने पढ लौ, जिको एह गल्ल दस्दे
जग अन्दर होई रोशन, प्यार जीहदा नाल सत दे
'मुनि चन्दन' दा ए कहना, कि जनम-सुधार करो
सत, शील, छिमा अपनाके, कि- बेडा पार करो

अहमदनगर

१९०८ जेठ

## १४०—हो कल्याण देवियो !

कर लौ अग्गे दा हुण उठके, तुम सामान देवियो !
नीद-नशे दे अन्दर होई, क्यो गलतान देवियो !
काया ऐसी उत्तम पाई, करलौ हुण ताँ नेक कमाई
ऐथे-ओथे होऊ सहाई, धर्म-ध्यान देवियो !

शील, सत्य, सन्तोष है अपना, बाकी दुनिया है सब सपना
प्यारा नाम हमेशा जपना, 'जिन भगवान' देवियो।
खान-पान जो रखन मन्दे, निशदिन कर्म कमावन गन्दे
पैन उन्हाँ दे गल्ल विच फन्दे, नर्क स्थान देवियो।
रखो अपना बाना सादा, रखो अपना खाना सादा
आना सादा-जाना सादा, सादा हो गुजरान देवियो।
'चन्दन' दा है एह्यो कहना, लज्जा दा शुभ पहनो गहना
बनके सीता जग विच रहना, हो कल्याण देवियो।

जैना गान्धी
१००, [illegible]

## [illegible]—फैशन दा बोलबाला

विच मजलसा जिसतरा गौन शायर,
ओमे गौंदिया ने एह छन्द स्यापा
खाने-पीने दी फेर न होश रहन्दी,
देवे ऐहनाँ नू ऐडा आनन्द स्यापा
लख देइये उपदेश न कदे छड्डन,
कोता गले दा है गुलुबन्द स्यापा
मिट्ठा नही ते नही है एह कौडा,
मिश्री-मधु ते नही गुलकन्द स्यापा
'चन्दन मुनि' ए प्रेम दे नाल पुच्छे,
गले विच क्यो डालया फन्द स्यापा

रामाँ मण्डी
१९९६ चामर्तुास

## १४३—मुकान

तर्ज—बैंत

नाम रखया जदो 'मुकान' इसदा,
नही ऐस नू दस्सो मुकादिया क्यो ?
बहन्दे आसुआ नू लोड सी रोकने दी,
नाल लग्ग के आप बहादिया क्यो ?
मच दे दिला ते पाना ता नीर चाहिये
जाके भामडनू होर भडकादिया क्यो ?

उच्चा नाम होवे जिमे देविया दा,
धीरज धार के नही दिखादिया क्यो ?
आने-जाने दा नियत समय करके,
कष्ट कदे दा नही मिटादिया क्यो ?
थोडे चार दिहाडे अफसोस नू न,
कई रोज ए क्रम चलादिया क्यो ?
मेल मोया दा मूल न होवनाई,
सेहत अपनी व्यर्थ गवादिया क्यो ?
'आर्त ध्यान' नू बुरा भगवान कहन्दे,
अमल ओसते नही कमादिया क्यो ?
मिलया जनम अमोल सी तरन खातिर,
हीरा रेत दे विच रुलादिया क्यो ?
लख-लख रुपये तो वध महगे,
रोने-धोने च साह लुटादिया क्यो ?
'चन्दन मुनि' दी सच्ची-सुधार वाली,
शिक्षा उत्ते न ध्यान लगादिया क्यो ?
प्यारे देश दिया उच्च देविया बन,
जीवन अपना नही चमकादिया क्यो ?

बरनाला
२०२३ चातुर्मास

ऐ अकल नू ला के कुण्डे, लभदे फिरदे मूर्ख मुडें
ओथे जदो सतौदे गुण्डे, चेते औदी नानी है
जगत अगर ऐ पुत्र पावे, कुडी किसे दे घर क्यो आवे
वे अकला नू पर समझावे, केहडा ऐसा ज्ञानी है
वहमा अन्दर उमर गवाई, कदे न किन्तु शान्ती पाई
क्यो न होए ढोग सहाई, ऐ सब झूठ कहानी है
'चन्दन मुनि'ए करे ईशारा, दुख तो करना अगर किनारा
नाम प्रभु दा प्यारा-प्यारा, सच्ची स्वर्ग निशानी है

फरीदकोट
१९९७-जेठ

## १४५—परम सुशीला बहनों से

प्यारी परम सुशीला बहनो ! प्यारा जनम सवारो तुम
प्रभु-भजन नू मिलया वेला, पापा विच न हारो तुम
मरदे जिन लई लखा कीडे, रेशम दे न पहनो लीडे
छड्डो पाँना दे भी बीडे, चाटा दूर विसारो तुम
ओढो मत बारीक दुपट्टा, धर्म-शील नू लगदा बट्टा
व्याह विच करो कदे न ठट्ठा, लज्जा-धर्म चितारो तुम
ठीक न सिनमा देखन जाना, हुन्दा नाच निकम्मा गाना
छड्डो सिरते भार चढाना, अपने मन नूँ मारो तुम
रखो दिल बिच सदा सफाई, शान्ति-प्रीती ते नरमाई
करो कदे न भुल्ल लडाई, धर्म, छिमा उर धारो तुम

## १४७—भारत नारी दा

तर्ज—रेशमी सलवार

शील बडा सिगार, भारत नारी दा
शील बडा आधार, भारत नारी दा

दिल समता धार धरम ते, रही पक्की चन्दन बाला
सत-शील बिना न बनया, जद कोई भी रखवाला
उस बेचारी दा .

श्री हनुमान दी माँ ने, सी हजुआ हार परोया
सस-सौहरे उते लेकिन, न असर जरा भी होया
आहोज़ारी दा

श्री नेम प्रभु ने जिसदम, जा बन बिच ध्यान लगाया
उस राजमती ने सुनके, झट सारा सुख ठुकराया
दुनियादारी दा

जद पहने देखे कगन, सब भुल्लया खादा-पीता
तद कला दे हत्था उत्ते, झट पतिदेव ने कीता
वार कटारी दा .

श्री जनक दुलारी सीता, जग मा है जीहनू कहन्दा
न शूर्पनखा दा कोई, है नाम भुल्लवी लैन्दा
कर्मामारी दा

जद बाहुवली ने बन विच, सी जा के ध्यान लगाया

जा आह्मो, सुन्दरी जी ने, ओ सारा नशा मिटाया
उस हकारी दा
यश कुन्ती और शिवा दा, चहु ओर अति है छाया
दमयन्ती ने 'मुनि चन्दन', मुख भारी है चमकाया
सृष्टि सारी दा...

बरनाला
२०१६ वैसाख

## १८८—बहनों से

तर्ज—तेरे प्यार का आसरा .

अरी भोली बहनो ! जरा तुम विचारो
बिना सोचे समझे न, कुछ भी उचारो .
समझ करके अपनों को, हो तुम बेगाने
खरी-खोटी लगना हो, झटपट सुनाने
मुनासिब किसी को, नहीं देना ताने
करो वाणी अपनी, स्वयं ही सुधारो
वही मान पाती, जगत बीच नारी
नहीं जीभ जिसकी है-कैंची-कटारी
सुने कोई क्योंकर कहो वाणी खारी
इन काग-कोयल का अन्तर निहारो

कभी कोई कडवी कहे बात बाई
करो भूल कर भी न उससे लडाई
सहन-शीलता से ही मिलती बडाई
बडप्पन को वाणी के बदले न हारो .

सती द्रोपदी इक थी देवी कल्याणी
कही कडवी उसने, हसी मे जो वाणी
जमाने को विपदा, पडो थी उठानी
न बोली की गोली, कभी भूल मारो

बडी हमने दुनिया, अरे! देखी भाली
मधुर बोली पाई, सभी से निराली
नही इससे बढकर, कोई लाल-लाली
हमेशा-हमेशा इसे उर मे धारो .

वचन इक मिटाए, वचन इक बसाए
वचन एक रुलाए, वचन इक हसाए
वचन इक फसाए, वचन एक छुडाए
वचन से ही डूबो-तरो और तारो .

सुनोगी वही जो किसी को कहोगी
दुखाओगी दिल तो, सुखी न रहोगी
सदा को ही सीने पे सकट सहोगी
अत 'मुनि चन्दन' कलह को निवारो ..

बरनाला
२०१९ होली

## १४९—अद्भुत लज्जा अञ्जन

तर्ज—घुट नीर पिलादे नी .

दिल शील वसाओ नी, देवियो ! तज के झूठे फैशन
ए सफल बनाओ नी, देवियो ! दुर्लभ पाया जीवन
काहनू गल विच अपने पाए, फैशन वाले फन्दे
करो देश दा मुखड़ा उजला, तज के कारज गन्दे
निज नयन रचाओ नी, देवियो ! अद्भुत लज्जा अञ्जन
राजमती ते तारा, सीता, सोमा चन्दन बाला
सत्य शील दा पालन करके, कीता सब उजाला
न कदे भुलाओ नी, देवियो ! नाम उन्हां दा पावन
चोरी, चुगली, कोप, कपट दे, कदे निकट न जाना
जीव बचाना-धर्म कमाना, गीत प्रभु दे गाना
रग-रग च वसाओ नी, देवियो ! सन्त जना दे भाषण
सब दी सहना-कुछ न कहना, जिसके [illegible] विच रहना
शील, क्षिमा ते शान्ति जेहा, होर नहीं है गहना
तन मन्न सजाओ नी, देवियो ! मुनि पुकारे 'चन्दन'

# विविध प्रकार के गीत

हो स्थानक मे गुरु तो दर्श पाना चाहि
बिन किए दर्शन न कुछ भी, पीना-खाना चा
जैन-वाणी सुन के इच्छा है अगर कल्याण की
धार कर बारह व्रत, श्रावक कहाना चाहि
ज्ञान ज्योति से जगत को राह दिखाने के लिए
अय 'मुनि चन्दन' चिरागे दिल जलाना चाहि

## १५०—अय प्यारे प्रभो !

तर्ज—तेरे प्यार का आसरा

न फूलो मे पाया, न खारो मे पाया
तुझे न खिजा न बहारो मे पाया
न सोने के महलो-चौबारो मे पाया
न माया के ऊचे अम्बारो मे पाया
न पेडो, न पौधो, मीनारो मे पाया
न फर्शो न दुआरो-दीवारो मे पाया
न रेलो-जहाजो-गुब्बारो मे पाया
स्कूटर न मोटर न कारो मे पाया
न पछी की मोहक उडारो मे पाया
न सर्कस न सिनमा-स्टारो मे पाया
न छीको-उवासो-डकारो मे पाया
न नीदो के मीठे खुमारो मे पाया
न नदियो की धारो, फव्वारो मे पाया
न सडको, न गलियो-बाजारो मे पाया
न कोयल की कुहकु मे आया नज़र तू
पपीहे की भी न पुकारो मे पाया
न गुल की महक मे, न चिडिया-चहक मे
न हसो की प्यारी कतारो मे पाया

## १५२—हम भी देखेंगे

तर्ज—तेरी महफिल मे किस्मत आजमाकर

पडे गफलत मे भाइयो को, जगा कर हम भी देखेंगे
प्रभु महावीर की वाणी, सुनाकर हम भी देखेंगे ।

नही करते दया दीनो पे, जो इनसान बन करके
सताते है यतीमो को, सदा नादान बन करके
सही अर्थो मे इक मानव, बनाकर हम भी देखेंगे

रचा कर ब्याह बेटे का, रहे जो लूट दुनिया को
बडे सतोषी है हम तो, बताते झूठ दुनिया को
हुई जब बेटी उनके, मुस्करा-कर हम भी देखेंगे ।।

जवानी और दौलत का, भला अभिमान कैसा है
जवानी है नदी पानी, पतगा और पैसा है
भला कब तक चलेगे सर उठाकर हम भी देखेंगे ।

भलाई, भाव भक्ति और जो ईमानदारी है
इन्ही ने जिन्दगी जग मे, सभी की ही सवारी है
[illegible] इन्हे [illegible] दिल लगा कर हम भी देखेंगे ।

[illegible] 'चन्दन' [illegible], [illegible] है
[illegible], दीवानी बनती जाती है
पडे गफलत मे भाइयो को, जगा कर हम भी देखेंगे ।।

## १५३—मटका माटीका

मटका माटीका, मटक-मटक कर चलता

गर्भ-गुफा से बाहर आया, दिल से सारा कष्ट भुलाया

रह-रह रोज मचलता।

आते ही बस नई जवानी, अकल एकदम बनी दीवानी

न समझाए समझता

इष्ट बनाकर अपना कर्जन, कपडे सिलवा दर्जन-दर्जन

नये-नये रूप बदलता

रहे ऐण्ठता दिन और राती, जाती दुनिया नजर न आती

रग-रग भरी चपलता

सारा चाहे हँसे जमाना, साहब बनकर पर दिखलाना

पाउडर मुह पर मलता

गल मे डाले इगलिश टाई, हिन्दु से ये बने ईसाई

फिरे जगत को छलता

दूध-दही से होकर खाली, पीता काफी-टी की प्याली

बिस्कुट खा-खा पलता

भक्ति-भजन जरा न भाए, राग-रग मे भागा जाए

जीव असख्य कुचलता

ऊपर से नित करे सफाई, अन्दर भारी भरी बुराई

क्रोध व कपट कुटिलता

## १५५—प्यारा भगवान-नाम

तर्ज—रेशमी सलवार

प्यारा भगवन नाम, हमेश चितारो जी।
हीरा जनम अमोल, मुफत न हारो जी।...

रगीन नजारे जग के, जो दिल को बहुत लुभाते
हैं केवल एक छलावा, फिर नर्क-गति दिखलाते
नयन उघाडो जी। .

न चीज उठाओ पर की, न भूल करो बेईमानी
नित सदाचार को पालो, न बोलो कडवी वाणी
सत्य उचारो जी। ..

है प्यारे प्राण सभी को, सब जीना चाहते प्राणी
इस दिल मे करुणा भरके, तुम बनो दयालु-दानी
जीव न मारो जी। .

तन इत्र से जिन के तर थे, और मुख मे पान के बोडे
इक रोज जो देखा उनको, इस देह मे पड गए कीडे
मान निवारो जी। .

इक बार जो पत्ता टूटे, न जुडता फिर दोबारा
इस जीवन के तईं 'चन्दन' है करता साफ ईशारा
जरा विचारो जी। .

बरनाला
२०१६ वैसाख

## १५७—प्यारे प्राणी !

तर्ज़—जादू नगरी से आया

जो है दुनिया का आधार, करले परम पिता से प्यार
प्यारे प्राणी ! न आनी उमरिया जाय कर ! .
राग-रग मे हो दीवाना, जीवन अपना व्यर्थ गँवा न
पल २ छिन २ कर उपकार,दान-दया के खोल भण्डार
प्यारे प्राणी ! .
मोह, माया, मद, काम लुटेरे, घूम रहे है चार चफेरे
रह कर इन से होशियार, करना अपना तुम उद्धार
प्यारे प्राणी ! .
मस्त जो बुलबुल फूल पे होती,देखी है हमने अन्त मे रोती
झूठी जग की मौज-बहार, पतझड आनी आखिर कार
प्यारे प्राणी ! ..
वक्त जो अपना व्यर्थ गवाते,मल-मलतलिया फिर पछताते
खाते नर्कों मे जा मार, बहती नयनो से जल-धार
प्यारे प्राणी ! .
चाहे अगर भव-सागर तरना,नाम की नैया पे पग धरना
सदाचार की ले पतवार, पहुँच अय 'चन्दन' परले पार
प्यारे प्राणी ! .

वरनाला
२०१६ जेठ

## १५९—उत्तम प्राणी जी

तर्ज़—रेशमी सलवार

गुण पे हो बलिहार, बनो तुम ज्ञानी जो
कहती है ललकार श्री जिन वाणी जी

जब जल और दूध मिला कर, कई हस के आगे धरता
वह केवल दूध ही पीकर, झट पेट है अपना भरता
तजता पानी जो ।

जो बालू मे हो चीनी, न चीटी देर लगाती
वह छोड के फीका रेता, बस मीठा ही है खाती
बडी सयानी जी

है देखा छाज सभी ने, हर चीज जो साफ बनाता
वह सार-सार को रख कर, सब ककड फूस गिराता
रीत पुरानी जी

जल जलधि का जो खारा, जब बादल है पी जाता
वह उसको मधुर बना कर, फिर मोती है बरसाता
कैसा दानी जी

है कोयल चाहे काली, सुन बोली खुश हो जाते
विष, विषधर का तज 'चन्दन' बस मणी वहा से लाते
उत्तम प्राणी जी...

बरनाला
२०१६ बैसाख

## १६५— गुरुदेव सुनादें

तर्ज़—मीरा जैसी धीर जी

सुनो सूत्र-व्याख्यान जी, गुरुदेव सुनादे

लख चौरासी घुम्म-घुमाके, अनगिनती दे कष्ट उठाके
बन आए इनसान जी

सुर-दुर्लभ ए जन्म कहावे, जेहडा खोवे ओ पछतावे
भटके जग दरम्यान जी

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित्र, जीवन करदे परम-पवित्र
मिलदा पद निर्वाण जी

इष्टदेव है ओइयो प्यारा, काम, क्रोध, मद, मोह तो न्यारा
सत्य, दया दी खान जो

शोक बिना है-हर्ष बिना है, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श बिना है
सिद्धप्रभु-भगवान जी.

पज महाव्रत जो भी धारे, सच्चा साधु दुनिया तारे
कर लेना पहचान जी.

धर्म-अहिंसा, सयम, तप है, जित्थे न ए कोरी गप्प है
कैसे हो कल्याण जी

त्रस-स्थावर जीव बेचारे, धर्म वताके जेहडा मारे
मूर्ख ओ नादान जी

शील, तपस्या, भाव उचेरे, आन न देदे दुख नू नेडे
अभय, सुपात्र-दान जी

## १६६— मानव कहाने वाले

तर्ज—ओ दूर जाने वाले

सुनले घडी की टिक-टिक, घडिया लगाने वाले !
  क्षण हाथ ये न आएँ, हाथो से जाने वाले

गफलत की नीद सोता, अनमोल सास खोता
  आखिर रहेगा रोता, हीरे लुटाने वाले !

परलोक भूल करके, नास्तिक बने हुए थे
  इक रोज उड गए वे, गप-शप उडाने वाले

जो तोडते सितारे, और मोडते थे धारे
  कहाँ वीर वे करारे, धरती कम्पाने वाले

लकेश, कस, कीचक, कौरव महा [illegible]
  रहते भला वे कब तक, [illegible]

सतोप-सत्य-सागर, [illegible]
  है देवता से बढकर, [illegible]

दुनिया मे उनके घर-घर, [illegible]
  जो थे दया के [illegible], [illegible] मिटाने वाले

'चन्दनमुनि' सुनाता, जीना है [illegible]
  क्यो होश मे न आना, मानव कहाने वाले।

[illegible]
[illegible], पौष

ी को करेला, किसी को टमाटर
ी को है मूली किसी को है गाजर
ी को खुमानी, नरगी, घिया, तर
ी को कचालू, सभी से है बढकर
किसी को अलीची, बगीची की जाई

सी को तमाशा, किसी को तराना
सी को है प्यारा रिकार्डों का गाना
सी को है सरकस, सिनेमा मे जाना
सी को है प्यारा, दुतारा बजाना
किसी को सरगी, किसी को शहनाई .

सी को सुधाकर, किसी को सितारे
सी को है प्यारे, पहाडी नज़ारे
सी को सरोवर के 'चन्दन' किनारे
सी को है प्यारे नदी-नद के धारे
किसी को है घाटी की शीतल तराई .

किसी को करेला, किसी को टमाटर
किसी को है मूली किसी को है गाजर
किसी को खुमानी, नरगी, घिया, तर
किसी को कचालू, सभी से है बढकर
किसी को अलीची, बगीची की जाई

किसी को तमाशा, किसी को तराना
किसी को है प्यारा रिकार्डो का गाना
किसी को है सरकस, सिनेमा मे जाना
किसी को है प्यारा, दुतारा बजाना
किसी को सरगी, किसी को शहनाई .

किसी को सुधाकर, किसी को सितारे
किसी को है प्यारे, पहाडी नजारे
किसी को सरोवर के 'चन्दन' किनारे
किसी को है प्यारे नदी-नद के धारे
किसी को है घाटी की शीतल तराई .

बरनाला
२०१९, जेठ

## १७५—प्यारया तर जाना

उस रब नाल कर के प्यार,
प्यारया ! तर जाना, बन्दया! तर जाना

## १७३—निन्दिया को त्याग अरे !

तर्ज—तेरे नयना हैं जादू भरे

हो वन्दे ! क्यो न भगवान का ध्यान धरे
डट के छुप-छुप पाप करे

मौत खडा सर देख न पाए, कपट-भण्डार भरे
सन्त तुझे सन्मार्ग बताए, काहे तू दूर टरे
हो वन्दे ! क्यो न .

वीर वहादुर दुनिया उजागर, छाती पे तीर जरे
अचला कपाते व्योम हिलाते, वे भी तो अन्त मरे
हो वन्दे ! क्यो न

हिंसा भुला के धर्म कमा के, लाखो ही लोग तरे
'चन्दन' सुनाए, तुझको जगाए, निदिया को त्याग अरे
हो वन्दे ! क्यो न .

## १७४—मुझे प्यारी

किसी को है हलवा, किसी को मिठाई
मुझे प्यारी भक्ति, अहिंसा, सच्चाई
किसी को है प्यारा जलेबी-बेदाना
किसी को है मिश्री, मलाई, मखाना
किसी को बनाशा, बरफ, साबूदाना
किसी को कचौरी समोसे उडाना
किसी को है बिस्कुट, किसी को खताई

किसी को करेला, किसी को टमाटर
किसी को है मूली किसी को है गाजर
किसी को खुमानी, नरगी, घिया, तर
किसी को कचालू, सभी से है बढकर
किसी को अलीची, बगीची की जाई

किसी को तमाशा, किसी को तराना
किसी को है प्यारा रिकार्डों का गाना
किसी को है सरकस, सिनेमा मे जाना
किसी को है प्यारा, दुतारा बजाना
किसी को सरगी, किसी को शहनाई .

किसी को सुधाकर, किसी को सितारे
किसी को है प्यारे, पहाडी नज़ारे
किसी को सरोवर के 'चन्दन' किनारे
किसी को है प्यारे नदी-नद के धारे
किसी को है घाटी की शीतल तराई. .

बरनाला
२०१९, जेठ

## १७५—प्यारया तर जाना

उस रब नाल कर के प्यार,
प्यारया ! तर जाना, बन्दया ! तर जाना

## १७३—निन्दिया को त्याग अरे !

तर्ज—तेरे नयना हैं जादू भरे

हो बन्दे ! क्यो न भगवान का ध्यान धरे

डट के छुप-छुप पाप करे.

मौत खड़ा सर देख न पाए, कपट-भण्डार भरे

सन्त तुझे सन्मार्ग बताए, काहे तू दूर टरे

हो बन्दे ! क्यो न ..

वीर बहादुर दुनिया उजागर, छाती पे तीर जरे

अचला कपाते व्योम हिलाते, वे भी तो अन्त मरे

हो बन्दे ! क्यो न

हिंसा भुला के धर्म कमा के, लाखो ही लोग तरे

'चन्दन' सुनाए, तुझको जगाए, निंदिया को त्याग अरे

हो बन्दे ! क्यो न .

## १७४—मुझे प्यारी

किसी को है हलवा, किसी को मिठाई

मुझे प्यारी भक्ति, अहिंसा, सच्चाई

किसी को है प्यारा जलेबी-बेदाना

किसी को है मिश्री, मलाई, मखाना

किसी को बताशा, बरफ, साबूदाना

किसी को कचौरी समोसे उड़ाना

किसी को है बिस्कुट, किसी को खटाई

किसी को सुधाकर, किसी को सितारे
किसी को है प्यारे, पहाड़ी नज़ारे
किसी को सरोवर के 'चन्दन' किनारे
किसी को है प्यारे नदी-नद के धारे

किसी को है घाटी की शीतल तराई

बटाला
२०१५, जेठ

## १७५—प्यारया तर जाना

उस रब नाल कर के प्यार,

प्यारया ! तर जाना, बन्दया ! तर जाना

याद जिन्हां नू सी रब, तेरे जग सिन्धु सब,
तैनू मिलिया सबब, ओहनू भुल्लना नही ।
कम पाप ते कमर, जे तू होया बेखबर,
फेर मुक्ति दा दर, तैनू खुल्लना नही ।
छड्ड भैडे विषय-विकार...

हो के नेकी तो अलग, भोले बन्दया नू ठग्ग,
लाए माया दे जो ढग्ग, नाल चल्लने नही ।
टूम-टल्ले छल्ले-छाप, भैण, भाई ते न बाप,
नाल जान पुण्य पाप, पाप टलने नही ।
कर दिल चो दूर खुमार

पा के मोह वाली भंग, कीता काफिया तू तग
रेहा साधुआं तो सग, न निकट आवें तू ।
जेहड़े लोग निर्लज्ज, पीदे दारू रज्ज-रज्ज,
ओन्हा नाल भज्ज-भज्ज अहमका-ओ जावें तू ।
कर कुछ ना सोच विचार

जो ए सोहना गलजार, चार दिन चमकार,
फेर घोर अन्धकार, सोच लै ओ प्यारया !
हाल तन असीत, न न ककराच गाल,

## १७६—अज्ज जन्म प्रभु दा

सब गाओ मँगलाचार जी।

अज्ज जन्म प्रभु दा

दशवे स्वर्ग को तजकर आए
कुन्दन पुर मे दर्श दिखाए
सुखी हुए नर-नार जी

चेत सुदी तिथी तेरस सुन्दर
जन्मे जो महावीर जिनेन्द्र
चौबीसवे अवतार जी...

धन्य सिद्धार्थ-नयन-सितारा
जिसने जीवन धर्म पे वारा
कर गए वेडा पार जी

फूले लोग जरा न समाए
भूप सिद्धार्थ के घर आए
वोले जय-जयकार जी

मिलकर सारे मगल गाओ
वीर-जन्म दिन आज मनाओ
'चन्दन' कहे पुकार जी

मण्डी अहमद गढ
१९९८ वीर जयन्ती

## १७७—बातें करते हैं

अय वीर। सुनो दुनिया वाले, किस ज्ञान की बाते करते है।
अपना न इन्हें कुछ इल्म अभी, भगवान की बाते करते है।

मोह, ममता, मद मे, माया मे
नित रहते छल की छाया मे
ये काम-दाम के दीवाने, कल्याण की बाते करते है।

कुछ सुनते न, कुछ कहते न
दो भाई भी मिल रहते न
बन पूर्व-पश्चिम पर देखो, निर्माण की बाते करते है।

नही निन्दा-चुगली तजते है
नही नाम प्रभु का भजते है
सुख-चैन-गिन के अन्वेषक, तूफान की बाते करते है।

न नर्क कही, न स्वर्ग कही

## १७८—दिल में बसाते जाइये

तर्ज—गीतिका छन्द

ोर-बाणी बन्धुओ। दिल मे बसाते जाइये।
ाफल इस अनमोल जीवन को बनाते जाइये।
आदमी हो काम के तो, काम आते जाइये।
आबरू लुटती किसी की, लख बचाते जाइये।
र्पा, निन्दा, कलह के, गढ गिराते जाइये।
ीत, सच्ची प्रीत के, दिन-रात गाते जाइए।
देखकर गिरते किसी को, झट उठाते जाइये।
दोन-दुखियो को, कलेजे से लगाते जाइये।
मूल कर भी शूल पथ मे, न बिछाते जाइये।
नेकियो के फूल की खुशबू फैलाते जाइए।
जो किसी ने की बुराई हो भुलाते जाइये।
बैर की अग्नि क्षमा-जल से बुझाते जाइये।
धर्म-मार्ग पर कदम, अपने बढाते जाइए।
कष्ट भी आये अगर, तो मुस्कराते जाइये।
शान घटती मान से है, 'मैं' मिटाते जाइए।
सादगी और सरलता से, दिल सजाते जाइये।
शील, सत, तप के तिरगे को, झुलाते जाइये।
शान्ति - सन्देश सबको ही सुनाते जाइये।
देखकर त्यागी, गुणी को, सिर झुकाते जाइये।
जय अहिन्सा-धर्म की निशदिन बुलाते जाइये।

ज्ञान के दीपक हृदय मे,  जगमगाते  जाइये ।
आत्मा मे फिर प्रभु  का,  दर्श  पाते  जाइये ।
प्राण दे कर  भी प्रतिज्ञा  को  निभाते जाएंगे ।
नाम वीरो मे  'मुनि चन्दन'  लिखाते जाएंगे ।

बरनाला
२०२१, दीवाली

## १७९—तरना होगा कि नहीं ?

तर्ज—मेरे मन की गगा

ज्ञान-गुणो की गगा और तप-जप की यमुना मे
बोल बन्दे ! बोल, तरना होगा कि नहीं
"मेरे जैसा कोई भी न, जनमा और जमाने मे"
रहा मनाता खुशिया निश-दिन, जुल्म-सितम के ढाने मे
यम की महामार मे डरना होगा कि नहीं
गया भूल भगवान, दया को, राग-रंग की महफिल मे
किया दीवाना दौलत ने यों, कभी न सोचा अपने दिल मे

## १८०—महावीर-जयन्ती

तर्ज़—गम दिए मुस्तकिल

लाल त्रिशला ने जब
वाल त्रिशला ने जब
प्यारा जाया
सारी दुनिया के दुख को मिटाया
'कुन्दन पुर' का नगर
मसले शमशोकमर
जग मगाया
सारी दुनिया के दुख को मिटाया

चैत्र शुक्ला त्रयोदश प्यारी
'वीर' जन्मे अहिसा के धारी
देव ले दुन्दुभि
पुरुप होकर खुशी
मगल गाया
सारी दुनिया के दुख को मिटाया

साल था तीसवा जब कि आया
'वीर' बन वीर बन को सिधाया
जैन धर्म का फिर
नेक कर्म का फिर
नाद बजाया

ज्ञान के दीपक हृदय मे, जगमगाते जाइये ।
आत्मा मे फिर प्रभु का, दर्श पाते जाइये ।
प्राण दे कर भी प्रतिज्ञा को निभाते जाइये।
नाम वीरो मे 'मुनि चन्दन' लिखाते जाइये।

बरावा
२०२१, दीवाली

## १७३—तरना होगा कि नहीं ?

तर्ज—मेरे मन की गगा

ज्ञान-गुणो की गगा ग्रौर तप-जप की यमुना मे
बोल बन्दे ! बोल, तरना होगा कि नहीं
"मेरे जैसा कोई भी न, जनमा और जमाने मे"
रहा मनाता खुशिया निश-दिन, जुल्म-सितम के ढाने मे
यम की महामार मे तरना होगा कि नहीं

## १८०—महावीर-जयन्ती

तर्ज़—गम दिए मुस्तकिल

लाल त्रिशला ने जब
वाल त्रिशला ने जब
प्यारा जाया
सारी दुनिया के दुख को मिटाया
'कुन्दन पुर' का नगर
मसले शमशोकमर
जग मगाया
सारी दुनिया के दुख को मिटाया

चैत्र शुक्ला त्रयोदश प्यारी
'वीर' जन्मे अहिसा के धारी
देव ले दुन्दुभि
पुरुप होकर खुशी
मगल गाया
सारी दुनिया के दु ख को मिटाया

साल था तोसवा जब कि आया
'वीर' बन वीर बन को सिधाया
जैन धर्म का फिर
नेक कर्म का फिर
नाद वजाया

महावीर ने जगत दे बिच आके
दया धर्म दा नाद बजा दित्ता।

२

'कुन्दन पुरी' नगरी डाडी भागवाली
पैदा चवीवें जित्थे अवतार होए।
'त्रिशलाराणी' 'सिद्धार्थ' सब दुख भुल्ले,
सोहनी शकल दे जद दीदार होए।
भारत वासिया दे चेहरे चमक उट्ठे,
खुशी बिच सी मस्त नर-नार होए।
इन्द्रपुरी दे देवता स्वंग तज के,
आए दर्शनां नू बेकरार होए,
श्रद्धा वालया देवा ने आन मस्तक,
भक्ति-भाव दे नाल झुका दित्ता।
'महावीर' ने जगत दे बिच आके,
दया-धर्म दा नाद बजा दित्ता।

३

भुल्ले होए सी लोग जो धर्म ताईं,
ओन्हा धर्म दा मर्म बतान खातर।
छड्ड राह नू जेहडे कुराह चल्ले,
सिद्धे राह ते ओन्हा नू पान खातर

## १८२—सदा जय हो-सदा जय हो

तर्ज़—तेरे कूचे मे

प्रभु महावीर अर्हन की, सदा जय हो-सदा जय हो
कि पाई पदवी भगवन की, सदा जय हो-सदा जय हो

महाराजा 'सिद्धार्थ के लिया जब जन्म आ घर मे
हुई थी वृद्धि तब धन की, सदा जय हो - सदा जय हो

महाराणी जी 'त्रिशला' के, प्रभु जब गोद मे खेले
कली इकदम खिली मन की, सदा जय हो-सदा जय हो

सुरेन्द्र, सुर-असुर आए, प्रभु का दर्श पाने को
उठी आवाज धन-धन की, सदा जय हो-सदा जय हो

वडे हो करके स्वामी ने, दिया फिर दान वर्षी यो-
कि वर्षे ज्यो घटा घन की, सदा जय हो-सदा जय हो

बिसारी मौज महलो की, जगत-कल्याण के कारण
मुनि बन राह ली बन की, सदा जय हो-सदा जय हो

किया हासल था केवल ज्ञान, करके तप महाभारी
कटी जजीर कर्मन की, सदा जय हो-सदा जय हो

अहिन्सा धर्म फैला कर, बनाया स्वर्ग भारत को
खुली तकदीर जग-जन की, मदा जय हो-सदा जय हो

तेरे दर्शन से अय स्वामी ! करोडो तर गए पापी
शरण ले प्यारे चरणन की, सदा जय हो-सदा जय हो

ये ही व्यतीत सब जीवन, तेरी ही याद के अन्दर
यही इच्छा है 'चन्दन' की, सदा जय हो-सदा जय हो

फरीदकोट
१९९७ दीवाली

## १८३—नेमप्रभु का वैराग्य

तर्ज—आए भी वो गए भी वो

नेम की जब बारात ले, कृष्ण रवाना हो गया
शोभा की देख शान को, शाद जमाना हो गया

चलते हुए वो धूम से, जूना नगर में आ गए
स्वागत में उग्रसेन का, आगे से आना हो गया

चारों ही ओर आनन्द के, होने लगे सामा बड़े
मंगल-बधाई का शुरू, गाना-बजाना हो गया

आगे जरा से जब बढ़े, पशुओं के बाड़े थे भरे
देख प्रभु को रो पड़े, शोर मचाना हो गया

पाप को देख ये दशा, हाथी का मुंह फिरा दिया
यादव को उस वीर का, कठिन मनाना हो गया

शगन का कंगना तोड़कर, धर्म से नाता जोड़कर
'चन्दन' जिन फकीर बन, बन को रवाना हो गया

मानसा
२००४ माघपुणी ११

## १८४—नेम प्रभु का उपकार

तर्ज—आए भी वो गए भी वो

नेम प्रभु ने जैन का, जगत मे नाद बजा दिया
मार्ग बताया मुक्ति का, पाठ अहिंसा पढा दिया
जिनको कि प्रिय कबाब था, जिनका कि शुगल शराब था
ऐसी सुधारी जिन्दगी, आवागमन मिटा दिया
भूल के अपने आप को, करते थे पुरुष पाप को
उनको दिखा के रोशनी, दया का रूप दिखा दिया
सब को ही प्यारे प्राण है, पछी है या इनसान है
मौत से सब हैरान है, प्यार से यू फरमा दिया
नर्क की दावानल भी है, स्वर्ग भी है आत्म-बल भी है
कर्म है-उनका फल भी है, खोल के साफ सुना दिया
दीनो का वेडा पार कर, दुखियो के कष्ट निवार कर
'चन्दन' जन्म सुधार कर, 'नेम' ने नाम दिपा दिया

मानसा मण्डी
२००४ माघ शुक्ला १

**मत भूलो**

| | |
|---|---|
| महावीर भगवान को | गुरुओ के व्याख्यान को |
| मात-पिता के फर्मान को | सत्य, शील, दया, दान को |

# १८७—श्री पार्श्व प्रभु

तर्ज—माही नी मेरा गुस्से गुस्से

तुम प्रेम से नित नर-नारी । जपो श्री पार्श्व प्रभु
काशी शहर की शोभा भारी, राजा अश्व सैन सुखकारी
रानी वामा देवी महतारी, जपो श्री पार्श्व प्रभु
प्रभु जोडा नाग बचाया, महामन्त्र उसे सुनाया
वो पहुँचा स्वर्ग मझारी, जपो श्री पार्श्व प्रभु
यह छोड जगत दुखकारी, बडे प्रेम से दीक्षा धारी
दे शिक्षा दुनिया तारी, जपो श्री पार्श्व प्रभु
दया धर्म का नाद बजा कर, गए मुक्ति देश जगा कर
जावे विघ्न कहीं न सारी, जपो श्री पार्श्व प्रभु
जो नाम है पार्श्व ध्याता, बन पार्श्व है वो जाता
है उनकी महिमा भारी, जपो श्री पार्श्व प्रभु
नहीं फेर चौरासी आवे, मिट जन्म-मरण यह जावे
कट जावी तुरत बीमारी, जपो श्री पार्श्व प्रभु
यह नाम है ऐसा प्यारा, जैसे अमृत की हो धारा
तर जावे पी संसारी, जपो श्री पार्श्व प्रभु
प्रभु प्रेम-सुधा बरसाए, सब ने मिल मङ्गल गाए
कहे 'चन्दन' महक क्यारी, जपो श्री पार्श्व प्रभु

[illegible]



[illegible]

## १८८—महावीर स्वामी

यहा यज्ञ-भूमि मे कटती थी गैया
नही बेजबा का था कोई रखैया
फसी जब भवर मे थी भारत की नैया
कहो कौन आया था बन कर खिवैया ?
महावीर स्वामी, महावीर स्वामी

प्रभु वीर जब कि जगत मे पधारे
नजर आए हरसू खुशी के नज्जारे
मची धूम राजा सिद्धार्थ के दुआरे
मुबारक-मुबारक ये कहते थे सारे
महावीर स्वामी, महावीर स्वामी

हुए जीव महरूम जब थे अमन से
किया लाल त्रिशला ने पैदा वतन से
ये कहने लगे लोग खुश हो दहन से
बचाएँगे हम को ये दर्दे कुहन से
महावीर स्वामी, महावीर स्वामी

सुनाकर ये अमृत भरी जैन-वाणी
मिटा डाली दुनिया से खू की रवानी
किए पार जिस ने हजारो ही प्राणी
कहो कौन था वो महा पुरुप ज्ञानी ?

महावीर स्वामी, महावीर स्वामी

अहिंसा का सन्देश जग को सुना कर
गया कौन निद्रा से भारत जगा कर
किया जिसने रोशन जहाँभर को आकर
कहो कौन था वो धर्म का दिवाकर

महावीर स्वामी, महावीर स्वामी

सदा हिन्द वाले जपे जिस की माला
पिलाया था जिसने मधुर प्रेम-प्याला
भटकतों को जिसने था रस्ते पे डाला
कहो कौन ऐसा था रहबर निराला ?

महावीर स्वामी, महावीर स्वामी

सुरेन्द्र भी जिन को कि करते थे वन्दन
वो कल्याण दुनिया में कर के नि[illegible]
रटे नाम जिन का करें [illegible]
कहो कौन थे वो प्रभु प्यारे नन्दन' ?

महावीर स्वामी, महावीर स्वामी

नेम प्रभु की सुनकर वाणी, भाव हृदय मे आए
जन्म सुधारू अपना जल्दी, व्यर्थ बीतता जाए
किया मन दृढ भारा, बाणा फकीरी धारा
मोह-बन्ध तोडा-तोडा...

महाकाल श्मशान मे जा फिर, बैठे ध्यान लगाए
सोमल ब्राह्मण क्रोध मे आकर, सर अगार टिकाए
स्वामी थे ज्ञान के धारी, समता दिखलाई भारी
सिद्धो से मन जोडा-जोडा

क्षमा धर्म से स्वामी जी ने, सारे कर्म खपाए
'चन्दन' केवल ज्ञान को पाकर, मुनिवर मुक्ति सिधाए
पाया पद परमानन्द, तोड दिए पाप-फन्द
कर्म-कठ मरोडा-मरोडा.

फरीदकोट
२००२ चातुर्मास

## १९०—मुनि मृगापुत्र

दोहा

भूप नगर 'सुग्रीव' मे करे वलभद्र राज
राणी घर मृगावती, सतियो मे सरताज

बहर-खडी

श्री मृगापुत्र विद्वान कवर, इन दोनो को अति प्यारा है।
उस महल मे बैठे एक दिवस, कोई जाता मुनि निहारा है॥

प्रभु शरण मे जाऊ गा
जगत से प्रीत हटा, सब कर्म खपाऊ गा

माता

मत कर नादानी तू
कमल वदन मेरे ! क्या दिल मे ठानी तू
दुनिया मे आराम करो
राज के सुख भोगे, महलो विश्राम करो

कवर

झूठ जगत की माया है
मोह मे फस के बशर, यू ही इस मे लुभाया है
दिल नही डिगाऊ गा
मोह पर पाकर विजय, मैं वीर कहाऊ गा

माता

मेरे मान के कहने को
सुत ! स्वीकार करो , घर वीच मे रहने को
ज़िद और वढाओ ना
सुन मेरा जिगर फटे, घर छोड के जाओ ना

कवर

मेरा ठीक ये कहना है
माता ! यकीन करो, जग वीच न रहना है

दिल वज्र बना माता ।

खुश हो जोग दिला, महा लाभ उठा माता

माता

महा लाभ उठाऊं मैं

कवर ये ठीक है पर, कैसे मोह हटाऊं मैं

जब याद तू आयगा

दुःख मेरे प्यारे पिसर ! सहा मुझ से न जायगा

कवर

यह मोह हटा माता !

जीवन सफल बने, झट हुक्म सुना माता !

शुभ गति तू पायगी

मुक्ति द्वार मुझे, मिल अवश्य ही जायगी

माता

नहीं योग से रोकती थी

संयम जान कठिन, तुम्हें प्रेम से टोकती थी

गर दिली लगावट है

संयम शौक से लो, नहीं मेरी रुकावट है

नोट

अब हुक्म ये पाया है

संयम हर्ष से ले, वह मुक्ति सिधाया है

'चन्दन' ये सुनाता है
सयम धार पुरुप, तर जगत से जाता है

रामा मण्डी
२००१ जेठ

## १९१—आदर्शाचार्य

पूज्य जीवन राम जो महाराज की महिमा महा
कौन कर सकता बया है, उनकी अद्भुत खूबिया
है नगर नोहर अति प्रसिद्ध बीकानेर मे
शुभ अठारह सौ बयासी मे गुरु जन्मे वहा
ओसवालो के सरोहिया वश को चमका दिया
वनके 'हीरा लाल' 'जयता देवी' के लाले महा
सुनके गगाराम जी गुरु देव के उपदेश को
धार सयम जैनमत का, वन गए फखरे जहा
शान्त चित और भद्रता से आप नित करते थे वात
शहद से मीठी थी गोया, आपकी प्यारी जबा
वीर के झण्डे को स्वामी ! आप ने लहरा दिया
जिन धर्म के प्रेम रग मे, रग दिया हिन्दोस्ता
आपके दिल मे न थी ख्वाहिश कि आचार्य वनू
प्रेम मे दुनिया ने डाला, आप पर वारे गिरा
आपके इस त्याग पन को, देख सब हैरा हुए
पदवियो को जो न चाहे, ऐसे त्यागी अव कहा

दीपमाला वीर के निर्वाण की शुभ रात को
करके सथारा विराजे स्वर्ग मे वो पासवा
वन गई इक स्वर्ग भूमि, वो रियास्त फरीदकोट
जव शहर मे शान से निकला गुरुवर का विमा
पालकी पर एक सौ इकतीस थे जर्री दोशाल
और चिता चन्दन को थी, सौगन्ध थी जिसकी महाँ
विक्रमी उन्नोस अठावन मे हुए वैकुण्ठ वास
चल दिए गोया चमन से वो चमन के बागवा
हिन्दियो को वो दिखाई जिनधर्म की खूबिया
गुण तेरे गाए न क्यो सव भारती नर-नारियां
आपकी खुशबुए तर से, महक 'चन्दन' को मिली
वरना जगल देश का था वो तो इक नखले खिज़ा

फरीदकोट
२००१ वैसाख

## १९२—दीवाली की याद

दीवाली हमे क्या, वताने को आई
ये सोए पड़े हम, जगाने को आई
श्री हीरालाल के लख्ते जिगर की
कहानी पुरानी सुनाने को आई
श्री जयना नन्दन, गुरु पूज्य जीवन
तुम्हारे गुणो के जताने को आई

गीतों की दुनिया

श्री श्री १००८ पूज्य श्री जीवन राम जी महाराज

अठारह सौ बयासी का सम्वत भला था
'नोहर' मे जनम दिन मनाने को आई
ऊगनी सौ छ मे ग्रही आप दीक्षा
गुरु 'ग गाराम' बनाने को आई
सरलता को मूर्त गुरुदेव जी को
आचार्य पद के दिलाने को आई
बनाए थे जैनी हजारो ही स्वामी
पतित को गले से लगाने को आई
शहर फरीदकोट की कहदे दीवाली
चमक ज्ञान घर-घर फैलाने को आई
'कर्म चन्द' उगनी-अठावन के माही
स्वर्गो मे स्वामी पहु चाने को आई

कर्म चन्द जैन भदौड

## १९३—श्री भगत राम जी म०

धन्य भगत राम जिन जीवन सफल बनाया .
अठरह सौ छियानवे आया जो सम्वत प्यारा
तब इस भूमि पर जनम आप ने धारा
हुआ जन्म जहा कहे उसे गाव 'हठयाया'
;द्ध रुचि धर्म की ओर झुकी थी भारी
यम लेने की मन मे इच्छा धारी
सतगुर की सगत मे समय बिताया

तुम रहनुमाए रहनुमा, दर्द आशना मुशकिल कुशा।
जिन धर्म के थे पेशवा, सानी तेरा न दूसरा।

अय पूज्य श्री, श्रीचन्द।
श्री वदामा जी के नन्द।

हर दिल मे तेरी याद है, दिल याद से आबाद है
आबाद है दिल शाद है, और गा रहा गुणवाद है

अय पूज्य श्री श्रीचन्द।
श्री वदामा जी के नन्द!

बाबू किशोरी लाल जैन एडवोकेट
फरीदकोट

## १०५—पूज्य श्री श्रीचन्द जी म०

महिमा पूज्य श्री चन्द की, न मुख मे जाए उचारी ..
गाव 'रोड का मुहाना', जिला रोहतक मझार
'बलदेव सहाय' वहा, बसते थे साहुकार
'बदामा देवी' पतिव्रता, इनकी थी नार जो
इन ही के गृह जन्मे, पूज्य श्रीचन्द आन
बढने लगे दिनो दिन, द्वितीय ज्यो चन्द्र जान
फिर जग-जग यह, बोले तोतली जबान
चलते चाल गयन्द की, जो लगे सभी को प्यारी
धीरे-धीरे सारी आयु, इन्हो ने बिताई बाल
इतने मे माता-पिता, दोनो गए कर काल
तब लगा लगने इन्हे, जगत है जञ्जाल जो

इन्ही दिनो आए वहा, गुरु श्री भगत राम
सत्य का सन्देश दिया, नगर के बीच आम
सुनने को वाणी तब, दोडा आया सब गाँव
क्या बात कहू आनन्द की, खुश हुए सभी नर-नारी .

श्रीचन्दजी वैरागी बने, सुना जब व्याख्यान
बडे भाई जी से तब, आज्ञा लेली झट आन
सयम को धारा फिर, 'झुम्वा' दरम्यान जी
दोक्षा को लेकर गए, गाँव-नगर मझार
दर्शनो के लिए भीड, लगी रहे बेशुमार
जगह-जगह पर फैली, महिमा आपकी अपार
वदामा मात के नन्द की, मची धूम जगत मे भारी .

शास्त्रो के ज्ञाता वडे, आप थे दया-निधान
झूम जाते श्रोता सव, सुधा सा था व्याख्यान
जगह-जगह घूम किया, जनता का कल्याण जी
और कहा तक गावे हम, गुणो का न आवे पार
सत्य, शील, छिमा आदि, आप मे थे बेशुमार
ज्ञान और क्रिया दोनो, ही के आप थे भण्डार
वलदेव पिता-सुख कन्द को,'मुनिचन्दन' है बलिहारी .

गिरला
,१९९, चातुर्मास

## ११६—श्री जवाहर लाल जी म०

मुनि-मुकुट जवाहर ज्ञानी, कर सफल गए जिन्दगानी
उन्नी सौ त्रेविशत, था मंगल कारी सम्वत
जब जयना मा की तुमने गुरुदेव! जगाई किस्मत
'सम्हीर' नगर की इकदम, बन गई वो भूमि जन्नत
'दीवान चन्द' की जग में, दो नन्द हुई तब इज्जत
उस जशन मनाया भारी, दिल खोल लुटाई दौलत
सब देखा नगर बधाइया, हो हर्ष-खुशी में उन्मत्त
नहीं फूला कोई समाया, मन बीच खुशी नहीं मानी
मैं गीत कहां तक गाऊं, है लम्बी बहुत कहानी
गुरु पूज्य श्रीचन्द जी का, शुभ दर्श आपने पाया
उन अमृत मयी रसीला, जिनधर्म-सन्देश सुनाया
सो सुन कर मीठी वाणी, वैराग्य आप को आया
फिर संयम लीना उन से, सब त्यागी झूठी माया
इक हर्षित नगर 'पिनाणा' जब साल पचास सुहाया
जो उत्सव हुआ वहां पर, न वर्णन जाय सुनाया
जो देखा महोत्सव भारी, हुए हर्षित भव्य प्राणी

'खिओ वाली' गाव मे जाकर, वो वाणी मधुर सुनाई
जमीदार सामायिक सीखे, प्रतिक्रमण करे कई भाई
यू जगह-जगह कर शिक्षा, कई तारे मूढ अज्ञानी
गुणवाद गा रहे सब ही, तेरी मुन के अमृत वाणी

'हरयाणा' 'जगल' 'वागड', 'पजाब' आपने तारे
फिर पहुचे 'राजपूताना', दे शिक्षा लोग सुधारे
'अजमेर' 'उदयपुर' 'देहली', वडी दूर दराज पधारे
हुआ धर्मोद्योत अपूर्व, शुभ चरण जहा-जहा डारे
उपकार आपके वेहद, कह सकू न मुख से सारे
फिर फरीदकोट मे आकर, कर अनशन स्वर्ग सिधारे
वो सम्वत हाय ! अठासी, ले ज्योति गया नूरानी
कर याद महीना मगसिर, भर नयन ये लाते पानी

वो शान्त सौम्य मुख मडल, नही दर्शक भूल सकेंगे
वो सूत्रो के अव भाषण, श्रवणार्थ स्वल्प मिलेंगे
वो ज्ञान थोकडो वाला, हम क्योकर सीख सकेंगे
रस त्यागी, स्वल्पाहारी, नर तुमसे विरल दिखेंगे
मिष्टान्न त्याग, कम निद्रा, गुण स्मरण सदैव रहेंगे
वो चरण चिन्ह शुभ छोडे, चल उनपर जगत-तरेंगे
तप, त्याग, धर्म की जग मे, गए छोड स्व अमर कहानी
'मुनि चन्दन' कहे कहा तक, है कहनी कठिन जबानी

[illegible]
२००३ चातुर्मास

कठिन जिन फकीरी के सहकर परोसे
दशा जैन जाति की जग मे सुधारी
गए छोड दुनिया को 'सिरसा' मे आखिर
न जाने वो ले आके कब सुध हमारी
वो फैला गए है रत्न बूए 'चन्दन'
है जिन कौम महकी हुई जिससे सारी

## १९८—गुरु-गुण-गान

तर्ज—जब तुम्ही चले परदेस, लगाकर ठेस

श्री पन्ना लाल महाराज, गुरु सिरताज, है धर्म सितारे
दुनिया मे पूज्य हमारे
इक कसबा छावा सुन्दर है
जो बीकानेर के अन्दर है
उस जगह पधारे आप, कटे सन्ताप, खुशी जन सारे
जब सूरत आप दिखाई थी
मा-तीजा वह हर्षाई थी
तब जीतमल श्रीमान्, किया था दान, रुपैये वारे
जब जन्म आप ने लीना था
क्या कहू जो उत्सव कीना था
कुल ओसवाल की शान, जगत दरम्यान, बढावन हारे

गुरु 'पूज्य श्री चन्द' पाए थे
उन अमृत वचन सुनाए थे
झट गए नींद से जाग, लिया वैराग, महाव्रत धारे ..
क्या महिमा 'चन्दन' गायगा
नहीं पार गुणों का आयगा
है आप लाल अनमोल, रहे मुख बोल, सभी जय कारे .

रामामण्डी
२००८ मगसिर पूर्णिमा

## [illegible]—महावीर जयन्ती

[illegible]

## २००—पुजारी से

पूजा ऐसी रचा अय पुजारी !
कट जाए चौरासी सारी

शुद्ध बना प्रथम मन का मन्दिर
प्रभु विठा फिर उस के अन्दर
मगल-आनन्द कारी, कट जाए ..

ज्ञान के गर ऐसे दीप जलावे
प्राण न जिस पे पतग गवावे
सव मन की मिटे अधयारी, कट जाए .

तोड के पेड न जोव सता तू
प्रेम के अद्भुत पुष्प चढा तू
भरी जिन मे सुगन्ध अति प्यारी, कट जाए .

धूप वना ध्यान वाली निराली
तप का वजा शख, सत्य की ताली
खुश हो जाए नर और नारी, कट जाए .

त्रर-स्थावर जीव न हण तू
पूर्ण अहिसक 'चन्दन वन तू
वाणी 'वीर' ने है ये उचारी, कट जाए ..

वुटलाडा मण्डी
२००४ होली

## २०२—अहिंसा

मुनिराजो-ऋषियो ने जिस को भजा है
मुक्त धाम जिस की बदौलत लिया है
जगत मे महा वो धर्म कौन सा है
जो हर इक के दर्दे कुहन की दवा है
अहिसा, अहिसा, अहिसा, अहिसा

हुआ जब प्रभु वोर का शुभ जनम था
तो भारत मे हर तरफ जुलमो सितम था
गया जो न पीछे, वो उनका कदम था
लहराया जो झण्डा ये उस पे रकम था
अहिसा, अहिसा, अहिंसा, अहिसा

जो किश्ती किनारे लगाए वो क्या है ?
बशर को भवर से बचाए वो क्या है ?
जो दोजख को जन्नत बनाए वो क्या है ?
जो गिरतो को ऊचा उठाए वो क्या है ?
अहिसा, अहिसा, अहिसा, अहिसा

फिदा जिस पे सौ जान से थे 'त्रिशला-नन्दन'
फिदा कर गए जिस पे गाधो जी जीवन
वो क्या शै है जिसको है इतनी पौजीशन
सुनो गौर से यह सुनाता है 'चन्दन'
अहिसा, अहिसा, अहिसा, अहिसा

सगरूर १९९८ माघ

## २०२—अहिंसा

मुनिराजो-ऋषियो ने जिस को भजा है
मुक्त धाम जिस की बदौलत लिया है
जगत मे महा वो धर्म कौन सा है
जो हर इक के दर्दे कुहन की दवा है
अहिसा, अहिसा, अहिसा, अहिसा

हुआ जब प्रभु वीर का शुभ जनम था
तो भारत मे हर तरफ जुलमो सितम था
गया जो न पीछे, वो उनका कदम था
लहराया जो झण्डा ये उस पे रकम था
अहिसा, अहिसा, अहिसा, अहिसा

जो किश्ती किनारे लगाए वो क्या है ?
बशर को भवर से बचाए वो क्या है ?
जो दोजख को जन्नत बनाए वो क्या है ?
जो गिरतो को ऊचा उठाए वो क्या है ?
अहिसा, अहिसा, अहिसा, अहिसा

फिदा जिस पे सौ जान से थे 'त्रिशला-नन्दन'
फिदा कर गए जिस पे गाधी जी जीवन
वो क्या शै है जिसको है इतनी पौजीशन
सुनो गौर से यह सुनाता है 'चन्दन'
अहिसा, अहिसा, अहिसा, अहिसा

सागर [illegible]

गीतो की दुनिया

## २०२—पुण्यवान

नहीं जिसके दिल मे जरा मान होगा

समझ लो उसे तुम वो पुण्यवान होगा

जो जीवन का समझेगा सब सार प्राणी

## २०४—ईश्वर की तलाश

कौन कहता है कि ईश्वर, वस्ती या जगल मे है
ढूढना चाहो जो उसको, ढूढ लो वो दिल मे है
ईट-गारे के मका मे, कैद वो रहता नही
न बसे परबत के ऊपर, न ठिकाना जल मे है
मूर्ति मे किस तरह हम, मान ले भगवान को
जब अमूर्त ईश है फिर, किस तरह पीतल मे है
जब्र नही रहता वो केले, आम मे, अगूर मे
मान ले फिर किस तरह वो, तुलसी व पीपल मे है
नाच घर और खेल-तमाशो मे नही मिलता है वो
अय दीवानो ! क्या धरा इस फालतू हलचल मे है
खूने नाहक से रहोमो पाक को नापाक कर
क्या हसो की बात है, कहना खुदा मकतल मे है
कौमी झगडो के तमाशे देखता, होता है शाद
फिर तो मायल उसका दिल, रहता सदा बल-छल मे है
घी को अग्नि मे जलाकर, गर तमाशे ईश है
फिर तो हलवाइयो की रहता वो सदा महफिल मे है
हलवा, पूरी, खीर, केले, सेव गर भाते उसे
साफ कहते हम तुम्हे, ईश्वर किसी होटल मे है
वो नही डेरे मे रहता, पाप और पाखण्ड के
वो तो 'चन्दन' ने सुना है कि हृदय निर्मल मे है

नवा शहर २००० चातुर्मास

## २०५—वही इनसान सच्चा है

तर्ज़—तेरे कूचे मे

अहिंसा को जो अपनाए, वही इनसान सच्चा है
किसी पर जुल्म न ढाए, वही इनसान सच्चा है

विनश्वर-रूप यौवन का, परिजन धन व विद्या का
न मन मे मान जो लाए, वही इनसान सच्चा है

न बोले झूठ कम तोले, न डोले धर्म मे अपने
अनीति से जो भय खाए, वही इनसान सच्चा है

पराई स्त्री, वेश्या वा मदिरा, मास, जूए के
कभी न निकट जो जाए, वही इनसान सच्चा है

न छोडे धर्म के पथ को, भले ही मौत हो सन्मुख
निभाकर नियम हरपाए, वही इनसान सच्चा है

करे नेकी विवेकी वन बदी से जो रहे वचता
न मन पापो मे उलझाए, वही इनसान सच्चा है

सदाचारी 'सुदर्शन' और दयालु 'मेघरथ' जैसा
वना कर दिल जो दिखलाए, वही इनसान सच्चा है

स्वयं दुःख सहके औरो को जो सुख पहुचाए अय 'चन्दन'
जमाना मुख से गुण गाए, वही इनसान सच्चा है

हनुमानगढ
२००२ पौष कृष्णा १०

## २०६—कर्मों के कारनामे

नजर भर देखलो प्यारे ! अजब कर्मो की माया है
कोई नर महल मे बैठा, उडाता ऐश मन माने
किसी ने टोकरी ढो-ढो, वक्त वन मे बिताया है
कोई नर पालकी चढकर, चला देखो हवा खाने
किसी ने शीश के ऊपर उसे अपने उठाया है
कोई नर इत्र को तन पर, लगाता है सदा सेरो
किसी को तेल इक तोला, नही खाने को पाया है
कोई नर पुष्प-शैया पर, खुर्राटे भर रहा लेटा
किसी ने ककरो पर नीद को देखो भुकाया है
कोई नर तख्त के ऊपर, है बैठा शान से डट कर
पडा इक जेल मे सडता, अति दु ख दिल मे छाया है
किसी के चाव से वेटे, है करते घर मे क्रीडाये
किसी को है यही चिन्ता, नहीं घर एक जाया है
किसी का स्वर सुधा सा जो, मिटाता दर्द सब दिल के
किसी का बोल गोली सा, गजब जिसने कि ढाया है
किये जो कर्म जिस-जिसने, रहा वो भोग फल वैसे
पकड कर्मो ने अय 'चन्दन' जगत भर को नचाया है

सिरसा
१९९४ माघ

## २०७—रंग बिरंगी

दुनिया है रंग बिरंगी बाबा ! दुनिया रंग बिरंगी . .

कौन किसी का मीत है जग मे, कौन किसी का संगी
माया लख कर मीत बने सब, शत्रु जब हो तंगी
बाबा ! दुनिया रंग बिरंगी

सुख मे सब परिवार है अपना, सुख की है अर्द्धंगी
दुख मे पास कोई न फटके, हालत हो बेढंगी
बाबा ! दुनिया रंग बिरंगी

कौन प्रभु बिन तेरा मूर्ख, जग मे सज्जन-अंगी
'चन्दन' शरण प्रभु की आजा, बात यही है चंगी
बाबा ! दुनिया रंग बिरंगी

खन्ना
२००० पौष

## २०८—कर्ता वादियों से

तर्ज—तेरे कूचे मे अरमानो

अरे ! ईश्वर ने दुनिया को, नही भाइयो ! बनाया है
अनादि की ये है दुनिया, अडंगा क्यो लगाया है
कहो गर कि बनाए बिन, न कोई वस्तु बन सकती
तो पूछेगे हमी-ईश्वर, कहो किस जा से आया है
अगर है वो बनाए बिन, जगत को भी यूँ ही समझो
जगत, ईश्वर अनादि के, जिनेश्वर ने बताया है

भला उसको जरूरत क्या, बनाए खामखा दुनिया
अमूरत वे जरूरत को, मुफत कर्ता ठहराया है
जगत रचने से क्या पहले, वो परमात्म अपूर्ण था
जो पूर्ण था बना जग को, नफा क्या उसने पाया है
जरा सोचो-बिचारो तो, असल मे चीज क्या जग है
इलावा 'जड' व 'चेतन' के, नही कुछ हमने पाया है
बनाई है अगर रूहे, अमर फिर हो नही सकती
बनी चीजे मिटे जैसे, मिटे बादल की छाया है
रहा मादा, बना ईश्वर, कभी उसको नही सकता
असत की सत् से उत्पत्ति, बता जग क्यो हँसाया है
बनाया आस्मा तक जब, बताते हो उसी का तुम
रहा फिर खुद कहा कोई, ठिकाना न बकाया है
अरे भाइयो ! जरा देखो, ये अपनी खोल कर आँखे
अन्धेरा आज तक ढो-ढो, जन्म यूँ ही गवाया है
नही है हाथ-मुख उसके, बनाया किस तरह जग को
यूँ ही कहने से क्या हासल, रचाया है—रचाया है
नफा जिद मे नही कोई, बने हो किस लिए जिद्दी
कि मानो त्यागकर हठ को, जो 'चन्दन' ने सुनाया है

रामा मण्डी
२००९ ज्येष्ट

## २०७—रंग बिरंगी

दुनिया रंग बिरंगी बाबा ! दुनिया रंग बिरंगी .

कौन किसी का मीत है जग मे, कौन किसी का संगी
माया लख कर मीत बने सब, शत्रु जब हो तंगी
बाबा ! दुनिया रंग बिरंगी

सुख मे सब परिवार है अपना, सुख की है अर्द्धंगी
दुख मे पास कोई न फटके, हालत हो बेढंगी
बाबा ! दुनिया रंग बिरंगी

कौन प्रभु बिन तेरा मूर्ख, जग मे सज्जन-संगी
'चन्दन' शरण प्रभु की आजा, बात यही है चंगी
बाबा ! दुनिया रंग बिरंगी

रचना
२००० पौष

## २०८—कर्ता वादियों से

तर्ज़—तेरे कूचे मे अरमानों

अरे ! ईश्वर ने दुनिया को, नही भाइयो ! बनाया है
अनादि की ये है दुनिया, अडंगा क्यो लगाया है

कहो गर कि बनाए बिन, न कोई वस्तु बन सकती
तो पूछेंगे हमी-ईश्वर, कहो किस जा से आया है

अगर है वो बनाए बिन, जगत को भी यूँ ही समझो
जगत, ईश्वर अनादि के, जिनेश्वर ने बताया है

# २११—संगठन

उठा दो जगत में घटा संगठन की
दिखा दो अनूपम छटा संगठन की
हृदय-स्थान में रहे भावना ये
हो सब में मुहब्बत सदा संगठन की
बिना मान छोड़े नहीं प्रेम होगा
ये चाबी रहा मैं बता संगठन की
करे कड़ हाथों मिलें जब ये डोरे
यूं शक्ति लो तुम भी बढ़ा संगठन की
बना जैन जाति का निर्बल बदन जो
उसे तुम पिलादो दवा संगठन की
सदा महके 'चन्दन' चमन ये तुम्हारा
लो नदिया यहां पे चला संगठन की

सिरसा १९९५

लगा दिल नेक कामों में प्रभु के गीत गाए जा
ओ आजादी के मतवाले! ये पीनुसखा पिलाए जा
गरीबो-दीन-दुखियों के, दुखों को तू मिटाए जा
अहिंसा के गुले तर से, चमन अपना बसाए जा
बसाए जा, बसाके महक हर जा सजाए जा
तू इस रीतिसे अय 'चन्दन', जगत-जन्नत बनाए जा।

## २१०—सिगरट दा दम

नर्ज़—ओ तू उड जा भोलया पछिण

ओ नौजवाना हिन्दिया ! न सिगरट दा दम ला

ए तेरे ताजा खून दी, झट देवे नदी सुका

धन मेहनत कर जो जोडया, न धूएँ वाग उडा

कर देश-दया हित दान तूँ, निज जीवन सफल बना

लै कारतूस नूँ मुँह विच, न सीने अग्ग लगा

नुकसान-नफे नूँ सोच तूँ, क्यो उलटे राह पया

ए घर है खुश्की-कब्ज दा, कई देवे रोग लगा

कुछ होश अगर है जल्द ही, तूँ अपना आप बचा

गुण पैदा कर जे हो सके, न झूठी शान दिखा

ए रहे जवानी रोज न, अभिमान नूँ दूर हटा

रह सादा बनके जगत विच, न जीवन मुफत गँवा

ए जीवन है दिन चार दा, तूँ 'चन्दन' धर्म कमा

बरनाला

२०१३ चातुर्मास

## २१३ चातुर्मास का आरम्भ

तर्ज—आए भी वो गए भी वो

देखो चौमासा आ गया, जग को जगाने के लिए
सत्य-पथ-दिखा-दिखा, पार लगाने के लिए
शिक्षा ये सब को दे रहा, जाप करो नवकार का
सुस्ती को दिल से दो हटा, माला फिराने के लिए

नेक कमाई पे मन लगा, भर लो खजाना ज्ञान का
फिकर करो सामान का, सग ले जाने के लिए
पूर्व पुण्यो का है असर, नर-तन जो पाया ऐ वशर !
धर्म का अब भी काम कर, कर्म खपाने के लिए
मौसम है बरसात का, छोडिए खाना रात का
आज चौमासा आगया, सब को सिखाने के लिए
एक जगह पर सत जन, रहते हैं अपना मार मन
करते कही भी न गमन, धर्म निभाने के लिए
ताश मे मन लगाओ क्यो, अन्त मे गिड गिडाओ क्यो
लालो रत्न लुटाओ क्यो, रज उठाने के लिए
'चन्दन' सीखना ज्ञान तुम, सुन करके व्याख्यान तुम
करना निज कल्याण तुम, मुक्ति पाने के लिए

फरीदकोट

१९९७ चातुर्मास

## २१४—चौबीसी

जपो जिन चौबीसो सुखकार

धर्म-रवि चमकाकर जिनवर, कर गए जगत उद्धार .

'ऋषभ' 'अजित' श्री सभवनाथ' 'अभिनन्दन' दया-भण्डार

'सुमति' 'पद्म' 'सुपार्श्व चन्द्र जो' कर गए खेवा पार .

'सुविधि' 'शीतल' 'श्रेयासनाथ जो', कीना खूब प्रचार

'वासुपूज' 'श्रीविमल' 'अनन्त' ने, दीने कर्म बिडार. .

'धर्मनाथ' जिन धर्म बताया, मरी दी 'शान्ति' निवार

'कुन्थुनाथ' 'अर' 'मल्लिनाथ' जी, तार गए सनसार .

'मुनि सुव्रत' 'नमो' व 'नेमनाथ जी', 'पार्श्व अमृत-धार

वर्द्धमान' जिनराज अन्त मे, शासन के सरदार .

'बीस विहरमान' औ-गणधर ग्यारह, मुक्ति-नगर-दातार

'चन्दन' निशदिन जय-जय मुख से, बोलो बारम्बार .

निरमा

१९९३ चातुर्मास

## २१५—दीक्षा महोत्सव

तर्ज—कभी सुख है कभी दुख है

ये शुभ दीक्षा महोत्सव है, मुबारिक दिन ये त्याग है

मुबारक वीर ये जिसने कि संयम जैन धारा है

अहिंसा धर्म का जग में, बजाने के लिए डंका

[illegible] व आत्मा के [illegible] को दिल मे बिसारा है

कमर मे चोल पट्टक और उज्जवल तन पे है चादर
लगाकर मुख पे मुखपत्ति, सजाया बाना सारा है
तरु तप-त्याग का पाले, अहिसा के मधुर जल से
महाव्रत धार कर पाँचो, जनम अपना सुधारा है
हविस दिल मे न है तकिए, गदैले, चारपाई की
विजय जब मन पे पाई नफस अम्मारा को मारा है
रहेगे दूर हुक्के, बीडी, सिगरट और सुलफे से
नियम ये जैन साधु का, दिगर सन्तो से न्यारा है
नगन सर और पावो से, सफर सर्दी व गर्मी का
तपस्या ये महा है 'वीर' ने मुख से उचारा है
मधु मीठा जबा से ज्ञान का है चाटना पडता
ये सयम जैन का इक तेज वो खण्डे की धारा है
न खाएँगे-न पीएँगे ये सूरज अस्त होने पर
ये पालेगे व्रत दृढता से, ये दावा हमारा है
अहिसा का पुजारी बन के निकला शेर मैदा मे
गिला कष्टो का क्या जब धर्म पे सर्वस्व वारा है
तरेगे क्यो न पापी जीव, जिन-मुनियो की सगत से
न लोहा डूबता है जिस को लकडी का सहारा है
श्री जिनधर्म की-जिनदेव की भक्ति से अय 'चन्दन'
जहाजे जिन्दगी को अन्त मे मिलता किनारा है

जीरा

२००५ मगसिर कृष्णा ३

## २१७—अरिहन्त

प्रात काल जो नींद बिसारा करे
तेरे तन से जो सुस्ती किनारा करे
हो कर प्रेम मे मस्त पुकारा करे
नाम प्यारा ये पल-पल उचारा करे
अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त

राहे नेकी जगत को दिखा कर गए
डका जैनधर्म का वजा कर गए
हिसा, झूठ, पाखण्ड मिटा कर गए
कौन जगत को जन्नत वना कर गए ?
अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त

किया किसने विजय राग को द्वेष को ?
माया, मान और लोभ, कपट, क्लेश को ?
गए निद्रा से कौन जगा देश को ?
देकर सत्य के सुखकारी सन्देश को ?
अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त

सच्चे धर्म के रहवर थे ज्ञाता यही
दया-सिन्धु, अभयदान दाता यही
जगत-स्वामी यही, पिता-माता यही
'मुनि चन्दन' सदा नाम ध्याता यही
अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त, अरिहन्त

गीदड्वाहा मण्डी २००१ फाल्गुण

## २१८—महापर्व पर्यूषण

तर्ज—ये तो मैं क्योंकर कहूँ

'श्री अन्तकृत' मंगल मयी, शास्त्र सुनाने के लिए
ज्ञान, तप, वैराग्य और शान्ति सिखाने के लिए
जो पडे है नीद मे, उन को उठाने के लिए
मार्ग मुक्ति का दिखा, उस पर चलाने के लिए
आगया जिन धर्म का महापर्व वो ही आज है
यह पर्यूषणपर्व सब पर्वो मे बस सरताज है

## २१९—करुणा-नदी बहाऊँ रे !

तर्ज—जिया बेकरार है

पूरा जो अरमान हो, मेरा बस ये ध्यान हो
दया धर्म पर आज मे, जीवन ये कुर्बान हो
नर-नारी औ भूखे त्यागी, जहाँ भी सन्त मै पाऊँ रे।
आदर-मान करूँ मैं दिल मे, चरणो मे झुक जाऊँ रे

## २२०—छमच्छरी

तर्ज—ओ दूर जाने वाले .

फिर साल बाद आखिर, आई छमच्छरी है
चहु ओर बनके रौनक, छाई छमच्छरी है
धर्मात्मा दिलो को, भाई छमच्छरी है
सन्देश जिनधर्म का, लाई छमच्छरी है
श्रद्धा के साथ इसको, मिल प्रेम से मना लो
'चन्दन' कदूरतो को, दिल से निकाल डालो

## २२१—रहना सदा कहां है

तर्ज—आवाज दे कहा है...

मदहोश क्यो जहा है, रहना सदा कहा है
दिन-मास जा रहे हैं, यू—
बीते जिन्दगी के, ये श्वास जा रहे है
चलने को इस जगत से, बूढा व नौजवा है
रीति यही यहा है, रहना...
दुनिया पे छा रही है, क्यो पाप की स्याही
फैशन नये ये 'चन्दन' है दे रहे गवाही
नव ठाठ-बाठ तज कर, होना तुरत रवा है
हर इक पे ये अयाँ है, रहना .

रामा मण्डी
२००६ चैत्र शुक्ला ४

## २२३—महापर्व छमच्छरी

बैंत

दृश्य खूब है अज्ज आनन्द वाले
खुशी छाई जमीन—आसमान उत्ते
भूमि जगलाँ दी बनी सब्ज मखमल
आई देखो बहार मैदान उत्ते
पछी गामदे गीत आनन्द वाले
पत्ते झूमदे ऐन्ना दी तान उत्ते
पशु, पछी ते पुरुष प्रसन्न होए
खुशी आ गई अज्ज जहान उत्ते
कोयल गामदी कास नू शाख उत्ते
कानू बुलबुला रग जमाया होया है
महापर्व छमच्छरी जैनिया दा
रोज पचमी दे अज्ज आया होया है

जेहडी खुशी दे विच है मस्त दुनिया
ओस खुशी दा कोई शुमार नईयो
कली आवदी मालिया ! सच्च दस्साँ
डिट्ठी एहो जी कदे बहार नईयो
सारे बैठे ने धार तपस्या नू
करना किसे ने अज्ज आहार नईयो
भगतो रज्ज के करन छमच्छरी नू
वड्डा एस तो होर त्योहार नईयो

## २२२—गीत प्रीत दे गाइये

तर्ज—माही नी मेरा गुस्से गुस्से

आओ रल मिल खुशी मनाइये, छमच्छरी आई-आई..

सुदी भादो पचमी आई, क्या रौनक अजब लगाई
चहु ओर खुशी है छाई, छमच्छरी आई-आई...

है ध्यान जिधर नू जादा, दृश्य नजर खुशी दा आदा
हर बाल वृद्ध है गादा, छमच्छरी आई-आई.

दुख-संकट सब दा नस्या, दिल धर्म है सब दे वस्या
सब बैठे धार तपस्या, छमच्छरी आई-आई

अज्ज दिल नू साफ बनालो, अज्ज ज्ञान गंग विच नहा लो
अज्ज अपने आप नू पालो, छमच्छरी आई-आई

है [illegible] पूरन सयाने, जो सुनदे वेर पुराने
[illegible] सब नू पाठ पढाने, छमच्छरी आई-आई

अज्ज आओ विरोध मिटाइये, अज्ज गीत प्रीत दे गाइये
[illegible] मिल के सबों [illegible] माइये, छमच्छरी आई-आई

'मुनि [illegible] [illegible] मनादा, जिनधर्म दी जय बुलादा
है बार-बार [illegible] गाता, छमच्छरी आई-आई

## २२३—महापर्व छमच्छरी

बैंत

दृश्य खूब है अज्ज आनन्द वाले
खुशी छाई जमीन-आसमान उत्ते
भूमि जगलाँ दी बनी सब्ज मखमल
आई देखो बहार मैदान उत्ते
पछी गामदे गीत आनन्द वाले
पत्ते झूमदे ऐन्ना दी तान उत्ते
पशु, पछी ते पुरुष प्रसन्न होए
खुशी आ गई अज्ज जहान उत्ते
कोयल गामदी कास नू शाख उत्ते
कानू बुलबुला रग जमाया होया है
महापर्व छमच्छरी जैनिया दा
रोज पचमी दे अज्ज आया होया है

जेहडी खुशी दे विच है मस्त दुनिया
ओस खुशी दा कोई शुमार नईयो
कली आखदी मालिया ! सच्च दस्साँ
डिट्ठी एहो जी कदे बहार नईयो
मारे बैठे ने धार तपस्या नू
करना किसे ने अज्ज आहार नईयो
भगनो रज्ज के करन छमच्छरी नू
वड्डा ऐस तो होर त्योहार नईयो

## २७२—गीत प्रीत दे गाइये

तर्ज—माही नी मेरा गुस्से गुस्से

आओ रल मिल खुशी मनाइये, छमच्छरी आई-आई ..

सुदी भादो पञ्चमी आई, क्या रौनक अजब लगाई
चहु ओर खुशी है छाई, छमच्छरी आई-आई .

है ध्यान जिधर नू जादा, दृश्य नजर खुशी दा आदा
हर बाल वृद्ध है गाता, छमच्छरी आई-आई

दुख-संकट सब दा नस्सा, दिल धर्म है सब दे वस्सा
सब बैठे धार तपस्या, छमच्छरी आई-आई

अज्ज दिल नू साफ बनालो, अज्ज ज्ञान गंग विच नहा लो

अन्धकार-अज्ञान मिटावने नू
सत्यज्ञान दी जोत जगाई जादी
हर भाई दे नाल प्रेम कर के
दुनिया स्वर्ग है धाम बनाई जादी
'चन्दन लाल' ओ खुशी दी घडी आई
जिस नू देख हर कोई हर्षाया होया है
महापर्व छमच्छरी जैनिया दा
रोज पचमी दे अज्ज आया होया है

नवा शहर
२००० चातुर्मास

## २२४—क्या जाने

तर्ज—ये भोला बालम क्या जाने

ये भोला मानव क्या जाने
क्यो जनम मनुष्य का पाया है, क्यो हाथ समय शुभ आया है
क्यो फिर भी धर्म भुलाया है, क्यो पाप है करना मन माने

क्यो लोग दया उर धरते है, क्यो हिंसा-छल से डरते है
क्यो दिन मे भोजन करते है, क्यो पीते जल न बिन छाने

क्यो जगत चला यह जाता है क्यो रहने न कोई पाता है
क्यो अन्त पुरुष पछताता है, क्यो 'चन्दन' गाता है गाने

मूनक
२००८ फाल्गुण

जिधर नजर उठा के देखद हा
रग खुशी दा हो बस छाया है
महापर्व छमच्छरी जैनिया दा
रोज पचमी दे अज्ज आया होया है

बच्चे-वृद्ध-जवान सब होए कट्ठे
छमच्छरी दा पर्व मनावने नू
कीती खूब तपस्या देविया ने
जीवन अपना सफल बनावने नू
गीत वीर भगवान दे गान सारे
जय-जय बोलदे व्योम गु जावने नू
ऐसे प्रेम दे विच ने मस्त होए
भुल गए पीवने-खावने न
शुद्धि आत्मा वल्ल ध्यान सबदा
क़िस्सा जग दा होर भुलाया होया है
महापर्व छमच्छरी जैनिया दा
रोज़ पञ्चमी दे अज्ज आया होया है

जीहदे आवने ते दिल नू साफ करके
प्रेम-ग गा हे खूद वहाई जादी
वैर-पाप, ते कपट-क्रोध तज के
धर्म हेत है रूह लगाई जादी
गी । गी जैनिया

अन्धकार-अज्ञान मिटावने नू
सत्यज्ञान दी जोत जगाई जादी
हर भाई दे नाल प्रेम कर के
दुनिया स्वर्ग है धाम बनाई जादी
'चन्दन लाल' ओ खुशी दी घडी आई
जिस नू देख हर कोई हर्षाया होया है
महापर्व छमच्छरी जैनिया दा
रोज पचमी दे अज्ज आया होया है

नवा शहर
२००० चातुर्मास

## २२४—क्या जाने

तर्ज—ये भोला बालम क्या जाने

ये भोला मानव क्या जाने
क्यो जनम मनुष्य का पाया है, क्यो हाथ समय शुभ आया है
क्यो फिर भी धर्म भुलाया है, क्यो पाप है करना मन माने

क्यो लोग दया उर धरते है, क्यो हिंसा-छल से डरते है
क्यो दिन मे भोजन करते है, क्यो पीते जल न बिन छाने

क्यो जगत चला यह जाता है, क्यो रहने न कोई पाता है
क्यो अन्त पुरुष पछताता है, क्यो 'चन्दन' गाता है गाने

मूनक
२००४ फाल्गुण

## २२५—फैशन का दीवाना

तर्ज—एक सहारा तेरा प्रभु जी

एक सहारा तेरा फैशन ।

एक सहारा तेरा

सादा यदि बनाऊ जीवन, चारो ओर अन्धेरा,फैशन !

एक सहारा तेरा

जान तुम्ही हो, प्राण तुम्ही हो

और इस तन की शान तुम्ही हो

तुम न रहो तो बिल्कुल फीका, बने ये जीवन मेरा,फैशन !

एक सहारा तेरा

तुम्हारे मिलने पर मिल जाता,

मुझे है स्वर्ग दुआरा

धर्म-कर्म का नाम भुला कर,

सब कुछ तुझ पर वारा

मौज उडालू, पी लू-खा लू, दुनिया रैन बसेरा,फैशन !

एक सहारा तेरा

सिरसा २००४ चातुर्मास

---

| चढें जो जञ्ज जनानिया, किसका कहो कसूर |
| 'चन्दन' प्राय पुरुष ही, हैं करते मजबूर |

---

## २२६—रब दी रचना !

जेकर सृष्टि रब रचादा

हुन्दी जग दे विच खुशहाली
प्रेम वृक्ष दी फलदी डाली
खा-खा के फल जिसदे मिट्ठे
बनदो दुनिया ए मतवाली

पौधा प्रेम पया लहरादा

हिन्दु-मुस्लिम जात न हुन्दी
झगडे दी कोई बात न हुन्दी
प्रेम दा सूरज रहन्दा चढया
भेदभाव दी रात न हुन्दो

दूई दिल बिच न कोई ल्यादा

मन्दिर-मसजिद खडे न हुन्दे
हत्थ कुहाडे फडे न हुन्दे
घडयाला ते बागा पिच्छे—
आपस दे बिच लडे न हुन्दे

प्रेम-ग ग बिच सब कोई न्हादा

वाम, नास्तिक, काफर बन्दे
नरक दे कीडे, दिल दे गन्दे
वेश्यादास, लालची, लम्पट
गट्ठ दे पूरे अक्ख दे अन्धे

एहना तई क्यो रब बनादा

सुरा न हुन्दी, नशा न हुन्दा
चोर न हुन्दे, जूआ न हुन्दा
जीव न हुन्दे मासाहारी—
किसे दे हत्थो बुरा न हुन्दा
सारा जग पया ढोले गादा

कदे भूचाल न आफत ढादे
गडे कदे न खेत सुकादे
डिगदी कदे न अरशो बिजली
त्रिच दरयावा हड न आदे
झूटा स्वर्ग पुरो दा आदा

खटमल, पिस्सु, मक्खी,मच्छर
बिच्छु, किरलो, जू, भमक्कड
सर्प, सिह, रिच्छ, कन्न खजूरा
डेम्बू लडदे पादे धप्फड
खुर न खोज इन्हादा पादा

लाभ बाज दा की ए सानू
रब बनाया क्यो कागा नू
बिल्ली दी की लोड सी मारी
अक्ख बचा जो लावे दा नूँ
चूहा क्यो ताऊन फैलादा

खेती जम्मे जो कडयारी
पट-पट जीनू दुनिया हारी

ओह दी भैण पयाजी वूटी—
वक्त किसान ते पावन भारी
क्यो जट वाघू [illegible]

कदे ता मीह हन ऐने पैदे
धरड-धरड कर कोठे ढदे
कदे समानो बून्द न डिगदी
लोग तरसदे मीह नू रहन्दे
ऐडा कौन हुनेर [illegible]

क्रोध न हुन्दा, जग न हुन्दे
लड-लड लोकी तग न हुन्दे
इक हकूमत हुन्दी सुखदी
वखो वखी ढग न हुन्दे
सारा जग आनन्द मनादा

नजर धर्म न ऐन्ने आदे
लड-लड जेहडे खून वहादे
हुन्दी इक धर्म दी पोथी
पढकर जीवन सफल वनाँदे
'चन्दन' ए जग स्वर्ग कहादा

मण्डी गीदड़वाहा
२००२ फालगुण

| पलटे से पलटे नही, 'चन्दन' ये तकदीर |
| कर्म कमाए भोगते, राजा - रंक - फकीर |

## २२७–ईश्वर

ईश है पूर्ण गुण भण्डार .
राग, द्वेष, मोह, मद, मत्सर
काम, कपट, छल, कोप अहितकर
लालच, चिन्ता, निर्बलता, भय
उस मे नही है बाकी तिलभर
अजर-अमर पद अक्षय धार..

सृष्टि रचे न वो सहारे
जग-प्रपच से रहे किनारे
देता नही कर्म के फल को
देखो गीता साफ पुकारे
पँचम लो अध्याय बिचार..

अग-पावन मे, नही है थल मे
पर्वत पे न कही है जल मे
दूर है वस्ती-जगल उस से
रहता नही किसी महफिल मे
सर्व शुद्ध वह अपरम्पार..

मृगो मे गर ईश्वर रहता
झपट सिह की कभी न सहता
खाता खौफ अगर वो फिर भी
कौन बली तब उसको कहता
निर्बल बनता जग मझार

सर्व व्यापो ईश्वर गर है
वेश्या के भी तब तो घर है
रोके क्यो न पाप वहाँ वो ?
मान रहा क्या उसका डर है
बैठा देख रहा व्यभिचार

बात वास्तव मे नही ऐसो
लोग समझते उस को जैसी
सर्व व्यापक उसे जो कहते
वाकफियत है उनको कैसी
मगज रहे हैं यू ही मार

यह तो जाने सव ससारी
जनम-मरण मे है दु ख भारी
उसे जरूरत क्या जो आए
बीच गर्भ के वो अविकारी
लेता कभी नही अवतार

नही जगत का वो सचालक
क्या मतलव वने जो मालिक
इच्छा रहित है जव कि इकदम
खेल करे क्यो वन कर वालक
सोचो दिल मे करो विचार...

सर्व शक्ति का गर है धारो !
क्यो नही रोके चोरी-यारी ?
फल भुगताने मे ही गर वो
खर्च करे है शक्ति सारी
कर्माधीन कहे सनसार .

पापो को गर देवे मुआफी
फैले तब तो बे इनसाफी
जुल्म करे ख्वाह जितना कोई
क्षमा मागना बस है काफी
किन्तु नही वो वक्षन हार .

जैसा जो कोई कर्म कमावे
वैसा उस का फल वो पावे
मूर्ख बन्दा महा अज्ञानी
दोषी ईश्वर को ठहराये
भूला फिरता ये सनसार .

परम पवित्र और वो प्यारा है
जग से 'चन्दन' वो न्यारा है
दया भाव है उसकी भक्ति
पाप कटे जिस से सारा है
दुनिया को कहदो ललकार .

फरीदकोट
२००२ चातुर्मास
गीतो की दुनिया

## २२८—दीवाली

तज—तेरे प्यार का आसरा

'महावीर स्वामी' ने हम को जगाया
अहिसा धर्म के पुजारी बनाया
अति दीन दुखियो के दुख को लखा जब
लुटाया खजाना-वर्ष भर लुटाया
तजा तख्त शाही जगत हित के कारण
भलाई मे सारा हो जीवन बिताया
मिटाने को पाखण्ड रूपी अन्धेरा
नया एक दुनिया मे सूर्य चढाया
चहु-ओर यज्ञो मे होती बली को
प्रभु ने हटाया, प्रभु ने हटाया
बना था ये भारत, जो काटो की भूमि
बना करके गुलशन इसे फिर दिखाया
सुना कर प्रभु वीर ने जैन-वाणी
बेतरनी नदी से जगत को तराया
करू वयान क्या-क्या मैं उपकार उनके
नही हाल जाता है सारा सुनाया
जगत हित के खातर विताकर ये जीवन
था निर्वाण कातिक अमावस को पाया

मनाया सुरो ने ये निर्वाण-उत्सव
बडा 'पावापुर' मे था जलसा सुहाया
वही आज'चन्दन'दीवाली का शुभ दिन
महावीर स्वामी की है याद लाया

फरीदकोट
१९९८ दीवाला

## २२९-ज़ालिम से

*तर्ज—जब तुम ही नही अपने*

दुनिया' मे अरे जालिम! क्यो जुल्म कमाता है
पत्थर न बना दिल तू, इनसान कहाता है
गर जुल्म कमायगा, मर नर्क मे जायगा
किया कोई करम हरगिज, निष्फल नही जाता है
नाखुन तेरी अगुली का, कट जाए कभी कच्चा
दु ख उसका बता कितना, मन तेरा मनाता है
सुन कान लगा प्यारे! कहते है धर्म सारे
खजर है चले उस पर, खजर जो चलाता है
गर मौत का कुछ डर है, क्यो हाथ मे खजर है
तुझे मोक्ष की चाहना है, क्यो धर्म भुलाता है
सुख चाहे अगर पाना, दया-धर्म का सुन गाना
मद्य-मास तू मत खाना, 'चन्दन' ये सुनाता है

मण्डी गीदडवाहा
२००६ ज्येष्ट कृष्णा १०

## २३० ये बूट और सैंडल

बुटो की अब चर्रमर्र ने, भारत पायमाल किया
जो थे सादा तबियत वाले, उनका खस्ता हाल किया

चमक-दमक के बूटो से जो अपने पाव सजाते है
उन्हे पता क्या उनकी खातर, लोग जुल्म क्या ढाते है
गाय-भैंस और बछडे लाखो, जव कि जान गवाते हैं
तब कही बनकर बूट, व सैंडल, मारकीट मे आते है
कहो जरा अय धर्मी पुरुषो ! दिलमे कभी ख्याल किया?

तन्दरुस्त और युवा पशु को, पहले खूब खिलाते है
मार-मार कर बैतो से फिर, उस के होश भुलाते है
सिम आता जब रक्त चर्म मे, पापी हर्ष मनाते है
सर मे खोब कटार चीरते, चले पूछ तक जाते है
धन और फैशन ने वो ढेरी, हाय! मात का लाल किया

अग्नि सम अति उष्ण नीर को, कभी पशु पर पाकरके
करते चर्म साफ है उसका, इक-इक रोम जला करके
मार झपट्टा चील जिस तरह, जावे चीज उडा करके
यन्त्र, पशु का चमडा ऐसे, करे अलग वस आ करके
महा वेदना पाकर आखिर, तडप-तडप कर काल किया

गर्भवती गो, भैंस, भेड भी, लोभी जन मरवाते है
भ्रूणो का ले कोमल चमड़ा, चीजे कई वनाते है

फ़ैशन के मतवालों से फिर, भारी दाम कमाते है
चार दिनो की चमक चांदनी, अन्त बुरी गत पाते है
नर तन-हीरा पा करके क्यो, खुद को यों कंगाल किया
रेशम मे है पाप महा तो, चमडे में कम पाप नही
इन चीजों से टीप-टाप अब, कर सकते हैं आप नही
'सैंडल'-बूट चर्म के लेना, पशुओं से इनसाफ नही
फैशन वालो! बचो पाप से, पाप की अच्छी छाप नही
पशुओ के इस वध ने 'चन्दन' घी का महा अकाल किया

रायकोट
२०१२ चातुर्मास

## १३१ मनुष्य से

तर्ज़ — तुम नही आते तो न आवो

धर्म अहिंसा पाल तू प्यारा; जन्म क्यो अपना, व्यर्थ, गवाए
सास जो तेरा, बीत जायगा; लौट के हरगिज, हाथ न आए
पाप कमाकर, नर्क मे जाकर, कष्ट हैं अब तक, बहुत उठाए
जन्म ये प्यारा, पाकर दोबारा, पाप रोजाना, फिर क्यो कमाए
होश मे आ तू, नेकी कमा तू; साथ मे तेरे, आगे जो जाए
लोभका गदा, आखिर नतीजा, इससे तू बचना 'चन्दन' सुनाए

रामा मण्डी २००४
माघ वदि २

## २३२—चाय दी चरचा

तर्ज़—कनकां दिया फसला

चर्चा हुण घर-घर चा दा है, वाहवा ! घुट इस दा
मुर्दे दे बिच साह पादा है

अध मण दा मुल्ल बस धेला सी
इक दुध दा ओो भी वेला सी
हर घर बिच मगल-मेला सी
इतिहास ए देखो आदा है

मा बचया दा दिल परचादी ए
कर पानी गर्म पिलादी ए
विच दुध भी ज़रा मिलादी ए
पर हुन्दा जल ही ज्यादा है

हलवाई पैसे खटदे ने
जल गर्म पिला दम बटदे ने
जट्ट-बाणिए ना एदा रट दे ने
नही छडदा पडित पादा है

जद अफसर दौरे आँदे ने
टी पारटियाँ रचवांदे ने
पी पानी खुश हो जादे ने
ए टी देवी विच वाधा है

जो ज्यादा शौक लगादा है
ओ दा ख़ून खुशक हो जादा है
बिन पीते उठ न पादा है
लग जादा रोग सदा दा है

मज-गा नही किसे दे दिखदी है
पई चाय बाजारी बिकदी है
होई शुरू बीमारी दिक दी है
नाले रोग चिमडया सा दा है

जदो रिझदियां घर विच झीरासी
तद ताकत बिच शरीरा सी
हुण कहन्दा है पोता-बाबे नूं
असी कदे न खोया खादा है

जद आदिया जन्ज-बराता ने
बस चलदिया चा दिया बाता ने
खुश हु दिया पी सब जाता ने
बिच ए दे आनन्द काहदा है

जद जरा जुकाम हो जादा है
या आकर ताप सतादा है
बस चा ही वैद्य बतादा है
नही कोई कम्म दवा दा है

जो लैंदा चा दा शरणा है
ओ नू औखा 'पौषध' करना है
ए तो चगा 'चन्दन' डरना है
ए दे बिच जहरीला मादा है

सुनाम ।
२००३ पौष

## २३३ प्रभु गीत गाले

तर्ज—तेरे प्यार का आसरा

सदा वाल तेरे रहेंगे न काले
जो खा-खा मलाइया व माखन से पाले
बना रूप तेरा रहेगा न ऐसा
करोडो दवाइया चाहे आज खाले
खडी वो घडी शीश ऊपर अजल की
जरा आँख ऊपर ऐ गाफिल ! उठाले
बिना भक्ति तेरा ये मन हो न पावन
तू कितना ही सावुन से मल २ नहाले
न खो तू मुफत मे जनम ये अमोलक
अनूपम है वेला वने जो बनाले
है 'चन्दन' सुनाता तुझे साफ भाई !
सफल करले जीवन प्रभु-गीत गाले

सिरसा
१९९५ आपाढ

## २३४—सत्य-सेवक

जो सत्य-अहिसा-धारी है

वे गीत प्रीत का गाते है, वे सोया जगत जगाते है
वे माया-मोह हटाते है, वे दुनिया स्वर्ग बनाते है
वे सब के ही हितकारी है

वे देख-देख पग धरते है, वे दिन मे भोजन करते है
वे घूट सबर का भरते हैं, वे पाप-पक से डरते हैं
वे 'वीर'-चरण बलिहारी है.

पदवी का उनको मान नही, वे करते उलटा ध्यान नही
वे करते मदिरा-पान नही, मरकर बनते हैवान नही
वे सात्विक शाकाहारी हैं. .

वे सब के मन को हरते है, वे दूर द्रोह को करते है
भव सिन्धु आखिर तरते है, 'चन्दन' शुभ आशा धरते हैं
वे जडके नही पुजारी है

फरीदकोट
२००५ माघ शुक्ला १

| 'चन्दन' जिसका बाप ही, नाचे बीच बाजार |
| डालें क्यो न झगडा, उसके बरखुरदार |

## २३५—मगरूर दी कहानी उसदी जबानी

इक दिन शाम वेले कोठे आपने ते
हवा गर्मिया दी ठण्डी खा रेहा सी
सीटी मारदा सी नाले झूलदा सी
नशा मस्त जवानी दा आ रेहा सी
सिर बिच भरया सी बहुत गरूर मेरे
न्हेरा अखिया दे अग्गे छा रेहा सी
अपने आप नू समझ खुदा बैठा
बनके कीडी पहाड नू ढा रेहा सी
नाल हवा दे दूर तो इक डक्का
उड के पैगया अक्ख दे विच मेरे
अक्ख मलदया रडक जद पैण लग्गी
दित्ते प्राण डक्के हुरा खिच मेरे

दुख डक्के शरीफ दा अज्ज डिट्ठा
तड़क-भडक दा नशा काफूर होया
मेरी कमर हो गई दर्द नाल दोहरी
अग-अग मेरा चूर-चूर होया
दिने चैन न राती आराम मैंनू
खान पीन तो भी मैं मजबूर होया

डक्का मुशकला नाल जद कडया मै
हौलो-हौली जा दर्द सब दूर होया
मैनू ऐ जापे जिमे सुपन अन्दर
कन्नी कह गई आन जमीर मेरे
ऐना ऐठदा सो काह्दे लई 'चन्दन'
तैथो डक्का बलवान है वीर ! मेरे

रामा मण्डी,
२००१ ज्येष्ठ

## गुर्वावली

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज
पूज्य श्री योगराज जी महाराज
पूज्य श्री हजारीमल्ल जी महाराज
पूज्य श्री लालचन्द्र जी महाराज
पूज्य श्री गगाराम जी महाराज
पूज्य श्री जीवनरामजी महाराज
स्वामी श्री भगतराम जी महाराज
पूज्य श्री श्रीचन्द जी महाराज
तपस्वी श्री पन्नालाल जी महाराज
कविरत्न श्री चन्दनमुनि जी म०
महा तपस्वी श्री अभिनन्दन मुनि जी म०

## २३६—परमात्मा

अगर पत्ते के हिलने से, पता ईश्वर का मिलता है
उसी के हुकम से बागो मे इक-इक फूल खिलता है
तो जब जालिम का नश्तर बेकसो के दिल पे चलता है
बता यह भी तेरे परमात्मा का हुकम चलता है ?
गलत है अगर तू परमात्मा को यो समझता हैं

अगर परमात्मा सब काम दुनिया के चलाता है
वही दुनिया रचाता है, इसे खुद ही सजाता है
तो क्यो हम को सुलाता और चोरो को बुलाता है
भयानक आंधिया तूफान और भूचाल लाता है
मुझे ये भेद न परमात्मा का समझ आता है

हर इक इनसान और हैवान अगर उसका बनाया है
गरज चीटी से हाथी तक सभी मे उसकी माया है
तो क्यो इक दूसरे के हाथो से उनको सताया है
कोई रहजन बनाया है किसी का घर लुटाया है
तू ही बतला कि इसमे भेद क्या उसने छुपाया है

अजब हाकम है पहले चोर से चोरी कराता है
न चोरो को हटाता है न मालिक को जगाता है
मगर जब चोर चोरी करके घर मे पहुच जाता है
तो फिर क्यो बाद मे पोलीस को हरकत मे लाता है
कही रिश्वत दिलाता है कही कैदे कराता है

कसाई को छुरा देकर क्यो नाहक खू बहाता है
ये क्यो हैवान को इनसान का खाना बनाता है
किसी की जान जाती है, किसी को लुत्फ आता है
कोई आसू बहाता है, कोई खुशिया मनाता है
मेरे परमात्मा को खेल ये हरगिज न भाता है

तेरा कहना कि हर इक फल किए कर्मो का पाता है
सही है पर इसे क्यो मुफत का जामन बनाता है
मुझे ये फिलसफा तेरा न हरगिज़ समझ आता है
कराके फेल बद खुदही फिर उसका फल चखाता है
तेरा परमात्मा पहले ही क्यो न रोक पाता है

मगर परमात्मा को मैं ने निराकार समझा है
उसे निर्दोष और निरपक्ष-निर आहार समझा है
अमर, आनन्द, सत चित जलवाए अनवार समझा है
तू क्यो दुनिया के धधो मे उसे गिरफ्तार समझा है
हकीकत ये है तू परमात्मा को गलत समझा है

मा० रामजी दास बी ए बी टी
मण्डी गीदडवाहा

तन से-मन से-वचन से, जीव कमाकर पाप
'चन्दन' तीनों लोक मे फिरे भटकता आप

## २३७—जैन मुनि

तर्ज—जब वो न हुए अपने

बस जैन मुनि जग मे, इक सच्चा त्यागी है
व्रत-नियम कठिन प्रीति जनदेव से लागी है
जग तख्त को रोता है, ये तख्ते पे सोता है
है कापता काम इस से, और बासना भागी है
स्त्री से नही छूता, पाओ मे नही जूता
लेता ना चढावे ये, द्वेषो है न रागी है
न रेल पे जाता है, न कार मगाता है
पैदल ही विचरता है, मन लगन ये लागी है
नफरत है इसे जन से, नफरत है इसे धन से
हर ऐश से नफरत है, ये ऐसा बैरागी है
अहिसा कमाता है, अहिसा सिखाता है
दीपक ये जलाए क्यो, प्रेम ज्योति जो जागी है

प० कंस राज शर्मा (गोहर)
अमृतसर

१—'चन्दन' चन्दा क्यो बने, धन्धा जब अन्याय।
बन्दा अन्धा-स्वार्थी, गन्दा पथ अपनाय ॥
२—मद-माया मे रम रहा, मन को प्यारा पाप।
'चन्दन' जो प्रभु मे रमे, मिटे सकल सन्ताप ॥

## २३८–रात्रि-भोजन

तर्ज—तुम नही आते तो न आओ

रात का खाना, पाप है माना
भूल के भाईयो ! आप न खाए
एक कहानी, इस पे पुरानी
छोटी सी सच्ची, तुम को सुनाए
एक स्टेशन, रेल्वे-बाबू
रात को घर मे, खाने को आए
खाना वे खाके, लेटे जो जाके
हो गए ठण्डे, हम क्या बताए
डाक्टर-बुलाया, हाल, सुनाया
सुनके वह किस्सा, यो फरमाए
खाना बनाके, उस जा टिकाके
मुझ को सुबह के, वक्त दिखाए
देखो जो थाली, चीटियो वाली
मन मे वे भारी, शोक मनाए
सारे वे कहते, आज के पीछे
रात को 'चन्दन', भोजन न पाए

जैनेन्द्र गुरुकुल पचकूला
२००३ चातुर्मास

## २३९—जैन बराती

अज-कल दे जैनी भाई, जद नाल बराता जादे ने
दिन छूआ छुई विच कटदा, दिन छपया खाना खादे ने

साधु होन पधारे ओथे, कथा ते सुनदा कोई
बाकी खा-पी ताश, खेल के सौन तान के लोई
ओ देखके लड्डू-पेड़े, नित नेम ते धर्म भुलादे ने

दो-दो घण्टे शोशा लैके मेकअप बिच गवादे
घडी मुडी कड्ढ जेब चो कघा, रहन्दे बाल बनादे
ओ राह जादे वन्दया नू, पए मुफतो मुफत हसादे ने

इक बेला सी जैनी बन्धु, दृढ हो धम निभादे
सूरज अस्त होए तो पिच्छो, न कुछ पीदे खादे
उड गया समय हुण पहला, दिन-रात हुण मु ह चलादेने

सिनमा दा शो खतम जाँ होया, ग्हारा घडी वजाए
अद्धो राती गौण तीवियाँ, नवे सजन घर आए
पा रौला हमसाया नू, ओ कच्ची नीद जगादे ने

रसगुल्ले दा शर्बत गाढा, गाढे दही दे भल्ले
बिच रोगनी जीव जो डिगदा, फसया मूल न हल्ले
जद करण भमत्कड हमला, ओ वैठे हत्थ हिलादे ने

'चन्दन' तेरे कौन है सुनदा ए शिक्षा दे गाने
खा-खा रवडी कलाकन्द जो, वन जादे मस्ताने
शिक्षा ता लैनी की सी, नही थानक फेरा पादे ने

फरीद कोट
२००२ चातुर्मास

## २४०—कथा के पीछे का गीत

*तर्ज़—ये मीठा प्रेम प्याला*

ये मधुर श्री जिनवाणी, कोई सुनेगा उत्तम प्राणी
जो जन इस पर कान लगाए, भव सागरको वो तर जाए
ये है मुक्त निशानी, कोई पायगा उत्तम प्राणी...
कान सुने तो मन हर्षाए, मुख बोले तो पुष्प गिराए
बात जगत ने मानी, कोई रटेगा उत्तम प्राणी...
राजमती, श्री चन्दनबाला, सबके घट मे किया उजाला
तर गए गौतम ज्ञानी, कोई तरेगा उत्तम प्राणी ..
ग्यारह गणधर-बीस बेहरमन, जग मे खूब हुई है रोशन
जिनकी अमर कहानी, कोई कहेगा उत्तम प्राणी .
भरी है इसमे सुन्दर ज्योती, सत्य के 'चन्दन' हीरे-मोती ,
सफ़ल करे जिन्दगानी, कोई करेगा उत्तम प्राणी...

फरीदकोट
२००२ माघ

| विवाह के वास्ते युवको ! अगर तुम लूट मचाओगे |
| बने जब बाप बेटी के, स्वय भी लूटे जाओगे |
| चलाई रीतियाँ खोटी, खडी सम्मुख ही पाओगे |
| लगाकर आक अय 'चन्दन', कभी न आम खाओगे |

## २४१—सन्त-स्वागत

तर्ज—प्रभु दे दुआरे उत्ते

साडे ए सतगुर प्यारे, सब नू जगान आए।
अमृत समान मिट्ठी, बाणी सुनान आए।
दया - बिस्तार करदे, सत्य-प्रचार-करदे
सब दा सुधार करदे, विगडी बनान आए।
नगे सिर-पैर रहन्दे, गर्मी ते सर्दी सहन्दे
मजा न लेफ लेद, भक्ति सिखलान आए।
पीदे न सुल्फा सिगरट, खाद न कुछ भी अटपट
करदे न झगडा-झंझट, शान्ति फैलान आए।
छोटी ते बड्डी नारी, माता है भैण प्यारी
सच्चे ने ब्रह्मचारी, सच्च समझान आए।
लैंदे न हत्थ धन नूँ, कीता है काबू मनन्
शिक्षा दे हर इक जन नू करन कल्याण आए।
जिहडा भी दर्शन पाए, बेडा बस बन्ने लाए
भव-भव न गोते खाए किस्मत जगान आए।
तोडे ने मोह दे बन्धन, करदे ने सारे धन-धन
ज्ञान दी अद्भुत 'चन्दन', गगा वहान आए।

बरनाना
२०२१ मगसिर

## २८२—विहार-गीत

तर्ज—प्रभु दे दुआरे उत्ते

आए गो गुरुवर प्यारे, दर्श दिखाके चल्ले
वाणी मनोहर अपनी, सब नू सुनाके चल्ले

नारी, जमीन, जर दे, त्यागी हैं डेरे-घर दे
गच्चा उपदेश करदे, जग नू जगा के चल्ले

हर पासे पिण्डी-शहरां, तुर-तुर के जादे पैरी
गर्मी-सर्दी दे दुख दा, खयाल भुलाके चल्ले

हुक्के नू हत्थ न लादे, सुलफे तो नफरत खादे
कइया नू मदिरा,बीडी, सिगरट छुडाके चल्ले

रोटी ता की सी खानी, पीदे न रात न पानी
सच्ची सुनाके वाणी, अमृत बरसा के चल्ले

चोरी-शराब छड्डो, जूआ-कबाब छड्डो
मारो न चीटी नू भी, धर्म बता के चल्ले

अगनी न सेकन बहन्दे, पक्खे दी वा नहीं लैंदे
पैरां तो नगे रहन्दे, जीव बचाके चल्ले

साडी ए किस्मत जागी, पाए जो गुरुवर त्यागी
पाठ अहिंसा 'चन्दन' सानू पढा के चल्ले

# २४३—पर्युषणपर्वका पुनीत संदेश

ओ मानव ! मुक्ति-मग पर, मुस्तैदी कदम बढादे
यह आया पर्व पर्यूषण, वन सच्चा जैन दिखादे :
न जाने कव से सोया, तू धर कर कर सिरहाने
सव होश भुलाकर अपनी, है लेटा लम्बी ताने
टुक देख उठा कर आँखया, यह आया पर्व जगाने
कर दूर अनादि आलस, ओ पगले ! ओ दीवाने !
सुन इसके राग सुरीले, दुनिया को और सुनादे .
जीवन का सदेशा, यह मधुर सुनाने आया
पाखण्डो के गढ वोदे, विध्वस बनाने आया
जो बिछुडे बन्धु उनको, फिर गले मिलाने आया
तप दान-दया और जप के, शुभ ठाठ लगाने आया
हो हर्ष—खुशी मे उन्मत, ध्वज इसका तू लहरा दे ..
कर वाना अपना सादा, सब फैशन दूर हटा कर
मत पहन रेशमी वस्त्र, दया दिल मे अरे ! बसाकर
तज चर्म-वूट चमकीले, जो वनते रक्त बहा कर
हर काम अहिसा वाला, कर धर्मी तू कहला कर
सव हिसा-भाव हृदय से, अव अपने दूर भगादे
अपरिग्रह वादी शिक्षा, यह तुझ का पर्व सिखाता
तू वन कर फिर भी लोभी, धन भू मे अरे ! छुपाता
रहा तडप पडौसी भूखा, न वाट-वाट तू खाता
क्या जैनधर्म यह तेरा, वस तुझको यही सिखाता !

वह वर्षीदान प्रभु का, क्यो भूला यह वतलादे..
तू आज हृदय चमकाले, जो हुआ द्वेप से काला
तू भूल विरोध पुराने, पी प्रेम सुधा का प्याला
गुणग्राहकता की अद्भुत, हर रोज जपा कर माला
तू क्षमा-पुजारी वन कर, कर दूर कोप को ज्वाला
वह शान्ति 'गजमुनिवर' की, सर्वत्र तू गुजादे .
तव रोम-रोम से निकले, सत्य-अहिसा-धारा
मन चमके कचन जैसा, तू लगे सभी को प्यारा
तू निन्दा-चुगली आदि, दोपो से करे किनारा
न दोप पराया देखे, हो उन्नत जीवन सारा
जग-नयनन तारा वनकर, यश-तारा शुभ चमकादे
वनकर के गौतम ज्ञानी, 'आनन्द' निकट झट जा तू
जो भूल हुई हो तुझ से, वह प्रेम के साथ खिमा तू
इक नदी सुप्रीति वाली, मन-मन्दिर बीच बहा तू
उस निर्मल नदिया मे फिर, इक मार छलाग नहा तू
मल रहे न मन पर बाकी, धो-धो के दूर हटा दे .
तू तेईसवे जिनवर का, शुभ जीवन देख उठा के
दो जलते नाग बचाए, उन करुणा-रस बरसा के
गोशालक को जब जलते, देखा था मुह घुमा के
शुभ शीतल लेश्या द्वारा, की रक्षा तप्त बुझा के
दया-सागर 'वीरप्रभु' को, सश्रद्धा शीश झुका दे..

वस 'सेठ सुदर्शन' बन जा, न भूतो से घबरा तू
उस अर्जुन माली का झट, बेडा पार लगा तू
श्री कृष्ण-कन्हैया जैसा, सद्धर्म दलाल कहा तू
बन 'जम्बू' जैसा त्यागी, इन भोगो को ठुकरा तू
तू 'नेमप्रभु' सा बन कर, अनुकम्पा-नदी बहा दे

उस 'चन्दन बाला' की तू, सुन पावन-अमर कहानी
जिस शील निभाया निर्मल, बन करके धर्म निशानी
वह जनक दुलारी सीता, श्री रामचन्द्र की राणी
इक पल मे अरे! अनल का, कर दिया सुशीतल पानी
तू राजमती के आगे, श्रद्धा के सुमन चढादे .

उस पापी पालक ने जब, था कोल्हू मे पिलवाया
वह वीर निराला खन्दक, नही मृत्यु से घबराया
जब राणी 'सूर्यकान्ता', था भारी कपट कमाया
'प्रदेशी' को उस पर भी, नही गुस्सा किंचित आया
जीवन ऐसे वीरो के, अय 'चन्दनमुनि' सुनादे .

## २४४—मन का मैल मिटाएं

तर्ज—फूलो से तुम हसना सीखो

ओ मानव ! आ गीत प्रीत के, मीठे-मीठे गाए
राग-द्वेष की और द्वैत की, नफरत दूर हटाए
दीन-दुखी के-दलित जनो के, दिल का दर्द बटाए
अनुकम्पा का अद्भुत-अद्भुत, अमृत-रस बरसाए

तन के धोने से क्या हासल, मन का मैल मिटाए
शील, सत्य, सन्तोप की सुन्दर, सरीता यहा बहाए

देव बनेगे पीछे-पहले, मानव तो बन जाए
मानवता बिन ढोग सभी कुछ, धोके मे क्यो आए

जगह-जगह पर महक गुणो की,बनकर फूल फैलाए
'चन्दन'बन्धन काट कर्म के, अन्त अमर पद पाए

बरनाला
२०२२ चातुर्मास

१ हिंसा हरगिज़ जीव की, करे न जैनी सन्त।
मनसा-वाचा-कर्मणा, 'चन्दन' करुणवन्त ॥

२ झूठ कभी न बोलते, वाणी सुधा समान।
'चन्दन' जैनी सन्त की, ये पक्की पहचान ॥

३ चोरी के भी निकट न, सपने मे भी जाय।
महाव्रत ये तीसरा, 'चन्दन' मुनि निभाय ॥

४. ब्रह्मचर्य 'चन्दनमुनि', निर्मल पाले सन्त।
विषय-विकार श्रृंगार से, रहते दूर अत्यन्त ॥

५ गृह, गलीचा, खाट न, और बगीचा-बाग।
'चन्दन' जैनी सन्त के,धन-दौलत का त्याग ॥

६ पाच महाव्रत पाल ये, करते है कल्याण।
निर्मल चित 'चन्दनमुनि',नित भजते भगवान ॥

# २४५—जगादे

तर्ज—काफी

उठ जाग, जगादे हीरा नू , न अवसर दे तू चोरा नू .

जो अपना-आप भुला करके, सौ जादे पैर फैला करके
मद-मोह दे तस्कर आ करके, हर पासे घेरा पा करके
लुट लैंदे ओ कमजोरा नू .

जो भर्म मिटावे हर उर दा, सद्ज्ञान सदा सुन सतगुर दा
मग मिलू गा तैनू ओ धुरदा, तू इक दिन पहु चेगा तुर दा
छड्ड शोर-शराबो तोरा नू .

पी मदिरा दुर्गति पाई न, पर धनते चित डुलाई न
पर वनिता कदे तकाई न, तू कुल नू दाग लगाई न
कर काबू अखिया-कोरा नू .

बिन तेल पकौडे तलदा जो, न बदी करन तौ टलदा जो
नित चाल अवल्ली चलदा जो, दिन-रात पया वस छलदा जो
कस 'मन' दिया वागा-डोरा नू .

जो काले कर्म सतादे ने, रह-रह के डग चलादे ने
न काबू दे विच आदे ने, गुरु-ज्ञानी साफ सुनादे ने
पा पिच्छे मन दे मोरा नू .

रब-प्रीत नू गीत बनालै तू, हर हार नू जीत बनाले तू
ए 'चन्दन' रीत बनालै तू, मन ठण्डा सीत बनाले तू
तज तुच्छ पुराने ज़ोरा नू ..

बरनाला २०२२ चातुर्मास

` ` ...ा ...ू ...

तर्ज—काफी

तज माया, मोह, मद मान कुड़े, ज पाना तू
न अन्दर कदे लखाया तू, न भेद अन्दर
मन निर्मल नही बनाया तू, नित तन दा मै
कर ज्ञान-ग ग उ

कर द्वेष किसे भी प्राणी ते, न जुल्म कमा
दे ध्यान लाभ ते हानि ते, पा काबू क
न मार बचन

नित गीत प्रभु दे गाई तू, गा गीत, गीत
मैं, ममता मार मुकाई तू, न मन तो मगर
तप, शील, भावना

न कदे किसे नू तग करी, न नाल किसे
नित सन्त जना दा सग करी, जग-तरने दा
है सच्चा पद

ए चेतन 'चील' कहान्दा ए, जो उजला मन
पर गडबड कर्म मचान्दा ए, आ पर्दा उत्त
मन-मूली फड छड

तू नर भी है तू नारी नी, तु 'चन्दन' उलझ
मा-प्यो तो बध के न्यारी नी, गुण गाँदी दुनिय
तू अपने नू पह

बरनाला

## २४७—वीर जयन्ती

तर्ज—घुट नीर पिलादे नी

क्यो 'कुण्डलपुर' मे जी, प्यारयो ! घटा खुशी दो छाई ?
अज मात 'त्रिशला' नू, प्यारयो ! मिलदी पई वधाई...

चेत सुदी शुभ तेरस दे दिन, जन्म 'वीर' ने पाया
भूप 'सिद्धार्थ' जी दा देखो, अङ्ग-अङ्ग मुस्काया
झट देन वधाइया जी, प्यारयो ! खिलकत दौडी आई

राजा जी ने खोल खजाना, हीरे-मोती वारे
नाल दया दे जेला बिचो, छड्डे कैदी सारे
पूरी ते हलवा जी, प्यारयो ! वण्डी खूब मिठाई ..

पुर है सजया दुल्हिन वागू, बज्जन ढोल-नगारे
मधुर सुरीला वीणा दा स्वर, धन-धन पया पुकारे
सी गगन गु जादी जी, प्यारयो ! गू ज किते शहनाई

विजली वागू लश्का मारे, बाल 'वीर' दा मुखडा
देख-देख के मोहनी मूरत, मनदा मिटदा दुखडा
ओ सुर-नर-किन्नर नू, प्यारयो ! सूरत भारी भाई .

दशवे 'प्राणत' देवलोक चो, च्यो करके सी आए
चौदा सपने माता जी नू, गर्भ च आ दिखलाए
न वरनी जावे जी, प्यारयो ! ओन्हा दी पुण्याई

देव, देविया, इन्द्रा ने सी, उत्सव वडा मनाया
स्वर्ण-समेरु दे जा शिखरी, प्यार नाल नहलाया

## २४६—आत्मा नू सीख

तर्ज—काफी

तज माया,मोह,मद मान कुडे,ज पाना तू भगवान कुडे ।
न अन्दर कदे लखाया तू, न भेद अन्दर दा पाया तू
मन निर्मल नही वनाया तू, नित तन दा मैल मिटाया तू
कर ज्ञान-ग ग अस्नान कुडे ।

कर द्वेप किसे भी प्राणी ते, न जुल्म कमा जिन्दगानी ते
दे ध्यान लाभ ते हानि ते, पा काबू कौडी वाणी ते
न मार बचन दे बान कुडे ।

नित गीत प्रभु दे गाई तू, गा गीत, गीत बन जाई तू
मैं, ममता मार मुकाई तू, न मन तो मगर भुलाई तू
तप, शील, भावना, दान कुडे ।

न कदे किसे नू तग करी, न नाल किसे दे जग करी
नित सन्त जना दा सग करी, जग-तग्ने दा ही ढग करी
है सच्चा पद निर्वाण कुडे !

ए चेतन 'चौल' कहान्दा ए, जो उजला मन नू भान्दा ए
पर गडबड कर्म मचान्दा ए, आ पर्दा उत्ते पान्दा ए
मन-मूली फड छड धान कुडे ।..

तूं नर भी है तू नारी नी, तु 'चन्दन' उलझन भारी नी
मा-प्यो तो बध के न्यारी नी, गुण गाँदी दुनिया सारी नी
तू अपने नू पहचान कुडे ।

वरनाला २०२२ चातुर्मास

## २४७—वीर जयन्ती

तर्ज़—घुट नीर पिलादे नी

क्यो 'कुण्डलपुर' मे जी, प्यारयो ! घटा खुशी दी छाई ?
अज मात 'त्रिशला' नू, प्यारयो ! मिलदी पई वधाई...

चेत सुदी शुभ तेरस दे दिन, जन्म 'वीर' ने पाया
भूप 'सिद्धार्थ' जी दा देखो, अङ्ग-अङ्ग मुस्काया
झट देन वधाइया जी, प्यारयो ! खिलकत दौडी आई .

राजा जी ने खोल खजाना, हीरे-मोती वारे
नाल दया दे जेला विचो, छड्डे कैदी सारे
पूरी ते हलवा जी, प्यारयो ! बण्डी खूब मिठाई .

पुर है सजया दुल्हिन वागू, बज्जन ढोल-नगारे
मधुर सुरीला वीणा दा स्वर, धन-धन पया पुकारे
सी गगन गुजादी जी, प्यारयो ! गूज किते शहनाई

बिजली वागू लश्का मारे, बाल 'वीर' दा मुखडा
देख-देख के मोहनी मूरत, मनदा मिटदा दुखडा
ओ सुर-नर-किन्नर नू, प्यारयो ! सूरत भारी भाई .

दशवे 'प्राणत' देवलोक चो, च्यो करके सी आए
चौदा सपने माता जी नू, गर्भ च आ दिखलाए
न वरनी जावे जी, प्यारयो ! ओन्हा दी पुण्याई

देव, देविया, इन्द्रा ने सी, उत्सव बडा मनाया
स्वर्ण-समेरु दे जा शिखरी, प्यार नाल नहलाया

त्रैलोकी अन्दर जी, प्यारयो ! भारी धूम मचाई ..
जन्म दिवस दे उत्सव दी की, महिमा कोई गावे
हर पासे ही खुशियाँ दा इक, नजर समुन्द्र आवे
न दुनिया फुल्ली जी, प्यारयो ! जामे जरा समाई .
मिटया घुप्प हनेरा जग चो, चानन होया सारे
मात-पिता ते दुनिया वाले, जान्दे सब बलिहारे
उस 'चन्दन' चन्दा दी, प्यारयो ! दिन-दिन कला सवाई ..

बरनाला
२०२३ महावीर जयन्ती

| | |
|---|---|
| १ | तन-मन-धन 'चन्दन' सभी, वारे वही सहर्ष ।<br>रोम-रोम मे रम रहा, जिसके भारतवर्ष ॥ |
| २ | ऊपर से तो हिन्द का, अन्दर जिसके द्वेष ।<br>'चन्दन' ऐसे दुष्ठ से, रहना दूर हमेश ॥ |
| ३ | काटे जड जो हिन्द की, बैठ हिन्द के वीच ।<br>'चन्दन' होगा और न, उससे वढ कर नीच ॥ |
| ४ | सर पर चढने दे न जो, कभी विदेशी भूत ।<br>'चन्दन' भारत मात का, सच्चा वही सपूत ॥ |
| ५ | देश-द्वेष मन मे भरा, शीश विदेशी भूत ।<br>'चन्दन' भारत मात का, असली वही कपूत ॥ |

## २४८—भविष्य वाणियां

तर्ज-चुप-चुप खडे हो जरुर कोई बात हैं

देखते ही देखते जमाना कही जायगा
आपको यकीन किन्तु भाईयो! न आयगा
हमने जमाना चाहे कम देखा-भाला है
फैशन का बोलवाला, खूब होने वाला है
फूफा फिरगी का भी, हिन्द कहलायगा
सादगी अलोप होगी, खर के विषाण सी
चलेगे जवान चाल इगलिस्तान सी
शोक! शौक टाई का सभी को तडपायगा
मर्दो की चल चाल वाल कटवायगी
कोट और पतलून नारिया डटायगी
मर्द मगर वन देवी दिखलायगा
पुरुषो से अधिक आजाद होगी नारिया
दो-दो गुत्ता-नगे सिर, व्याहिया-कुमारिया
आयगी न उन्हे लाज आदमी लजायगा
देख लेना तव आप सुवह और शाम जी
दोस्तो के साथ होगी, सैर सरे आम जी
पतिदेव रोयगे तो कोई मुस्कायगा
भगडे सिखाते और आप ही नचाते हो
वाद मे क्यो वेटियो को बुरा वतलाते हो
वीज के धतूरा कोई, कैसे आम खायगा

अधिक अच्छाई के या अधिक बुराई के
देखना नतीजे आप, साथ की पढाई के
अपने ही आप ये जमाना बतलायगा .

मर्द बेकार होगा, कामनी कमायगी
घर छोड दफतर दौडी--दौडी जायगी
आगे-पीछे चपरासी चक्कर लगायगा

बचेंगे बहुत कम, अण्डे से.-शराब से
घर मे न भुनी भाग, बनेगे नवाब से
नशा निर्लज्जता का लज्जत चखायगा

लिया है जिन्होने ठेका, पाप के प्रचार का
फिल्मे निकलेंगी दिवाला सदाचार का
फूटे भाग हर राग, आग बरसायगा ..

रेडियो के राग भी न, होगे कुछ काम के
चरित्र बिगाडेगे जो खूब खास-आम के
सुनेगा सयाना जो भी, वह पछतायगा

आन और मान दोनो जान से भी प्यारे थे
शील-सत- लाज पर, प्राण तक वारे थे
कैसे कोई पद्मनी राणी को भुलायगा

सदाचार-सादगी से होगा बैर जग को
होटलो की भायगी हमेशा सैर जग को
साफ-शुद्ध घर वाला, भोजन न भायगा

किसी-किसी सत्सगी, भगवान के भगत मे
थोडी-बहुत बची है जो, सादगी जगत मे
इस की भी जगह ध्वज, फैशन फहरायगा .
ऐसा अविवेकी होगा, बेटा सनसार मे
समझेगा शान जो पिता से तकरार मे
माता का मजाक भी चलाक वह उडायगा...
भक्ति-स्थानो मे भी पाप डेरा डालेगा
लोभ और लालच-पाखण्ड घेरा डालेगा
बिरला ही बन्दा कोई रब को रिझायगा ..
वनेंगे लिफाफे होगी अन्दर से पोल जी
बजते बरातो मे बहुत जैसे ढोल जी
'थोथा चना बाजे घणा' वक्त बतायगा...
गधे को भी स्वार्थ से सब बाप कहेगे
स्वार्थ विना तो दूर बाप से भी रहेगे
सीधे मुख भाई को भी, भाई न बुलायगा ..
बनेंगे पथिक लोग मर्जी की राहो के
और के ही और होगे नक्शे विवाहो के
कोई ही कडाही को-बरात को चढायगा .
कोई-कोई टीचर यो टयूशन चलायगे
करके किवाड बन्द विद्या पढायगे
कान-पूछ कोई भी न आदमी हिलायगा.

दोजख न कही पे-न कही सुर-लोक है
देखकर कहो कौन आया परलोक है"
गीत नास्तिकता का, यो जगत गायगा

तरसेगे लोग दूध, दही को-मलाई को
असली घी मुश्किल मिलेगा दवाई को
वो बर्फी से बिस्कुट बदला चुकायगा

'चन्दन' चलेगे चाल लोग इस ढग की
सत्सग छोड लेगे राह राग-रग की
सूत्रो को बिरला ही सुनेगा-सुनायगा

बरनाला
२०२३ चातुर्मास

१ 'चन्दन' तन स्वाधीन है, मन है मगर गुलाम ।
अपने भापा, वेश से, क्या हिन्दी को काम ॥
२ लिखे 'वैलकम' द्वार पर, हिन्दी-द्रोही लोग ।
सभी फिरगो दास वे, है निन्दा के योग ॥
३ हिन्दी तज हिन्दी करे, जो इगलिश से प्यार ।
'चन्दन' है कहते उन्हे, हिन्दी के गद्दार ॥
४. इगलिश पढने के नही, 'चन्दनमुनि' विरुद्ध ।
बनिये पर अग्रेज मत, निर्मल रखिये बुद्ध ॥
५. राष्ट्रभाषा को प्रथम, दीजे सदा स्थान ।
'चन्दन' इस मे देश की, और आपकी शान ॥

## २४९–महावीर बनजा

मना ! प्रभु दे दुआरे दा फकीर बनजा...

एइयो त्याग-एइयो तप, नाम ओसदा तू जप

जावे भवजल टप, बलबीर बनजा

माया-मोह दा जञ्जाल, छड्ड खोटा तू खयाल

दीन-दुखी-रक्षपाल, बेनजीर बनजा .

आंन किन्ने चाहे दुःख, होई ओह तो न विमुख

मन्नी मन विच सुख, तू गंभीर बनजा ..

प्यारे मुखडे नू खोल, बोली मिठड़े तू बोल

जाई भूट दे न कोल, अक्सीर बनजा

जो चाहे खुशहाली, कर दया दी दलाली

सोहनी जत-सत वाली, तसवीर बनजा

जान जो बलिहारे, सब पैसेया दे प्यारे

देख दुनिया-नज्जारे, दिलगीर बनजा

जो है मुक्ति दी लोड, मुंह विषया तो मोड

एइयो लख ते क्रोड, तू अमीर बनजा

बस सन्ता कोले 'चन्दन', कटदे कर्मा दे बन्धन

रट 'त्रिशला जी नन्दन', महावीर बनजा

बरनाला
२०२३ पोष

## २५०—सच्चे सन्तां ने

सच्चे सन्ता ने, सुत्ता देश जगाया .

जर, जोरु ते घर दा त्यागी, सच्चा सन्त वही बड भागी
जीवन सफल बनाया .

आस्तिकता दा पाठ पढाके, नास्तिकता नू जडो हिलाके
धर्म-कर्म सिखलाया .

सच दा सबक सिखादे फिरदे, जग नूँ स्वर्ग बनादे फिरदे
आलस दूर हटाया .

मद्य-मान्स जो पीन्दे-खान्दे, नर्क लोक नू सिद्धे जान्दे
सब नू साफ सुनाया .

शील, शान्ति, सदाचार बिन, सत्य-अहिसा परोपकार बिन
मुक्ति कौन सिधाया .

दिल बिच जिसने विनय-बसाई, अहकार तो नफरत खाई
सच्चा भक्त कहाया

सदा सुगन्धित फुल्ल बनो जी। भुल्ल न कण्डे तुल्ल बनो जी
मानव-तन जे पाया .

सब नूं सब तो जीवन प्यारा, मौतो हरइक डरे बेचारा
क्यो जावे जीव सताया ..

पाप न जीव सताने बरगा, पाप न कपट कमाने बरगा
प्यार नाल समझाया..

दिल नूं कोमल कमल बनाना, दुखिया दा दुख-दर्द वण्डाना
जिस बिच स्वर्ग समाया...

दुष्ट नरा ते नारा कोलो, बचना बुरया यारा कोलो
जे है पुण्य सवाया...

जद तक त्यागी न बदगोई, नाम जपे दा लाभ न कोई
हीरा जन्म गवाया .

जो भी मिलया रब दा प्यारा, दित्ता उस नू सदा सहारा
प्याला प्रेम पिलाया. .

मनो मिटाके मेरा-तेरा, हरया 'चन्दनमुनि, हनेरा
सत्य-रवि चमकाया ..

बरनाला
२०२३ मगसिर

## २५१—चौबीसी

पतित पावन श्री जिनराई, जपो नाम सदा सुखदाई .

'ऋषमदेव' जिन धर्म प्रकाशक, नाथ'अजित' है विघ्न विनाशक
'सभव' सिफत सवाई .

'अभिनन्दन स्वामी' आनन्द वढाए, 'सुमति' नाम से पाप पलाए
प्रभु 'पद्म' ने कौम जगाई

'सुपार्श्वनाथ' है सातवे स्वामी, 'श्री चन्द्रजिनेश्वर' अन्तर्यामी
वाणी 'पुष्पजी' मधुर सुनाई

'वासुपूज' प्रसिद्ध है भाई।
'विमलनाथ' और 'अनन्तजी' प्यारे, 'धर्मनाथ' जिनधर्म-सितारे
'शान्तिनाथ जी' शान्ति फैलाई
'कुन्थुनाथ' 'अरनाथ' जिनेश्वर, 'मल्लिनाथजी' परम परमेश्वर
कर्मो की कोड खपाई
'श्रीमुनिसुव्रतस्वामी' जिन नामी, 'श्रीनमीनाथ' जग-साताकेकामी
दया-दुदुभि 'नेम' बजाई
'पार्श्वनाथ' दो सर्प बचाए, 'वीरप्रभुजी' ने यज्ञ मिटाए
बलि नजर कही न आई
सॉझ-सवेरेजी। अय 'मुनिचन्दन, कीजेचौबीसी को श्रद्धासे वन्दन
मुक्ति इसी मे समाई

रागिया
१९९५, पोष

शरारत जो रहे करता, उसे 'शैतान' कहते है
हया जिस मे न बिल्कुल हो, उसे 'हैवान' कहते है
रहे इन्साफ पर चलता, उसे 'इनसान' कहते है
न रागी हो-न द्वेषी हो, उसे 'भगवान' कहते है
बचाए अवगुणो से जो, उसे हम 'ज्ञान' कहते है
मिले मुक्ति 'मुनि चन्दन' उसे 'कल्याण' कहते है

## २५२—न जाना

अमोलक ये जीवन गवाकर न जाना
कि सासो के मोती लुटाकर न जाना...

मधु से भी मीठा, सुधा की सी धारा
सभी का सहारा, प्रभु-नाम प्यारा
भुलाकर न जाना-भुलाकर न जाना

यहा आप आए हो, नेकी कमाने
चहुओर यश की, सुगन्धी फैलाने
कभी कस खुद को बनाकर न जाना

अहिंसा का अद्भुत, तराना गुंजाना
सचाई का झण्डा, झुलाना-उडाना
कपट-झूठ को सर झुकाकर न जाना

सहारेंगे सकट, सतायगे जो भी
उठायगे सदमे, दुखायगे जो भी
किसी को भी प्यारे! रुलाकर न जाना

कली-फूल पर जो दीवानी है होती
खिज़ा मे वही देखी, वुलवुल है रोती
वहारो मे दिल को फसाकर न जाना

गगन मे मगन हो जो हसते सितारे
निकलते ही सूरज मिलेगे न प्यारे
अहकार से सर उठाकर न जाना ..
चलो जब जगत से, जगत को रुलाना
मगर आप 'चन्दनमुनि' मुस्कराना
जमाना को हरगिज हसाकर न जाना .

बरनाला
२०२१ चतुर्मास

## २५३—देश पराया-लोग बेगाने

ओ परदेसी ! ओ दीवाने ! दुनिया को क्यो अपना जाने
कौन यहा पर मीत है तेरा, देश पराया-लोग बेगाने
दूर पडी है तेरी मजिल, लेटा क्यो तू लम्बी ताने
बीतो रात उडा तू निन्दिया, आया सूरज देख जगाने
एक रोज थी जिनकी चर्चा, आज बने वे सब अफसाने
वक्त कहा महावीर प्रभु का, राम-कृष्ण के कहा जमाने
आने का इक अर्थ है जाना, कहते गए सब पुरुष पुराने
कदम बढा तू मुक्ति-मग पर, 'चन्दन के सुन मस्त तराने

बरनाला
२०१९ जेठ

शील-सुधा सेवे सदा, माता सम पर नार।
'चन्दन' सच्चे भक्त को, विष से विषय-विकार॥

## २५४—हो जाए

कभी सुख है कभी दुख है

अगर मन शुद्ध करने की, कोई तदबीर हो जाए
कोई नेमी, कोई पार्श्व,कोई महावीर हो जाए
करे न क्रोध जो क्रान्ति, बसे मन मे सदा शान्ति
यही शिमला, यही कुल्लु, यही कशमीर हो जाए
बचे शतरज पासो से, भजे भगवान श्वासो से
तमाशो और ताशो से, ये दिल दिलगीर हो जाए
गुणीजन का बनू चाकर, रहू मै रोज गम खाकर
मुझे जो देखले आकर, वही तसवीर हो जाए
करे न छल-कभी अकडे, 'सुदर्शन' का जो पथ पकडे
न क्यो फिर टूट कर टुकडे, सितम-शमशीर हो जाए
किसी को जो सतायगा, किसी को जो दुखायगा
न हरगिज चैन पायगा, बुरी तकदीर हो जाए
जगाऊ आत्मा सोई, जो है अज्ञान मे खोई
न मुझ से भूलकर कोई, कभी तकसीर हो जाए
अह के तोड सब वन्धन, रटे जो' त्रिशलाजीनन्दन'
न क्यो दुनिया मे अय 'चन्दन', वही अकसीर हो जाए

वरनाला
२०२३ चातुर्मास

## २५५—किनारा करो तुम

तर्ज —तेरे प्यार का आसरा

न पापो मे जीवन गुजारा करो तुम
प्रभु-नाम पल-पल उचारा करो तुम
खुले आख जिसदम सवेरे-सवेरे
निरन्तर उसे ही पुकारा करो तुम
मुहब्बत मे आकर लगाकर समाधि
समुज्ज्वल वह ज्योति निहारा करो तुम
कभी लोभ-छल को निकट आने मत दो
बुराइयो से बिल्कुल किनारा करो तुम
दिलाए जो गुस्सा कभी जोश तुम को
क्षमा-बल से फौरन निवारा करो तुम
भुला करके 'चन्दन' जगत के झमेले
सदा रूप अपना निहारा करो तुम

बरनाला
२०१६ वैसाख

---

है असल मे पुरुष जो है, धर्म मे पुरुषार्थी
है कहा का पुरुष वह जो, है बडा हो स्वार्थी
उस गुणी का ही सफल है, जन्म अय 'चन्दन मुनि'
तुनतुनी जो न बजाकर, है परम परमार्थी

## २५६—जैन सम्मत आहार

तर्ज —गीतिका छन्द

यह बताइये जैन सम्मत, कौनसा आहार है ?
ठीक आत्मिक उन्नति का, जो अति आधार है ?

ध्यान से सुनियेगा उत्तर, इस प्रश्न का आप आज
धार्मिक जबकि बदलते, जा रहे रीति-रिवाज

हो न जिसमे मेल मदिरा, मास-अण्डे का जरा
हो अहिसा का समर्थक, है वही खाना खरा

ओ मनुज ! न याद क्या ये, ज्ञानियो की बात है ?
"चार दिन की चान्दनी है, फिर अन्धेरी रात है"

भर रहा है हाथ क्यो निर्दोष के तू रक्त से
है अकेले जाना तुझको, एक दिन इस जगत् से

है न नास्तिक जब अरे ! तू, मानता है पुण्य-पाप
पेट पापी के लिए न, दे किसी को भी सन्ताप

दास बनकर देख रसना का रसातल जायगा
आज जिसको खायगा तू, कल तुझे वह खायगा

भूल मत दिल से दया को, चन्द दिन के वास्ते
बन्द कर न मुक्ति-सुख के, तू ओ राही ! रास्ते

है गुणीजन करते भोजन, सिर्फ जीने के लिए
है नही जीना भला सुन, खाने-पीने के लिए

इसलिए तू आप जी और जीने दे हरएक को
करदे दिल से दूर भोजन के अरे। अविवेक को
जो अनीति और जो अन्याय का प्रतीक है
इस तरह का भी तो खाना, 'जैन' को न ठीक है

हो कमाया द्रव्य जो कि, सत्य से-सन्तोष से
उस से निर्मित ही है भोजन, दूर शतश दोष से
दोष सैतालीस तजने है जहा जिन-सन्त को
और रटना है सदा, अरिहन्त को-भगवन्त को

एक श्रावक को भी खाना, शुद्ध खाना चाहिये
जैन सच्चा बन 'मुनि चन्दन' दिखाना चाहिये

बरनाला
२०२२ मगासिर

१—खासो-खुश्की जो करे, भरे जरा न पेट।
पता न 'चन्दन' लोग क्यो, पीते है सिगरेट ॥
२—बाबू बनने के लिए, लोग हुए पथ-भ्रष्ट।
धूआ निकाले नाक से, पैसे करके नष्ट ॥
३—ये ही पैसे दूध पर, अगर लगाये लोग।
'चन्दन बल-बुद्धि बढे, कम ही व्यापे रोग ॥
४—धूआ निकाले नाक से, इसमे कौन कमाल।
अगर निकाले कान से, माने 'चन्दन लाल' ॥

## २५७—प्यारा नाम भगवान् दा

जप प्यारया ! प्यारा नाम भगवान् दा

नाम प्रभु दा जप के प्यारे ! जग दे परले पहुँच किनारे
पाया तन इनसान दा जी

प्रभु नाम दी जप के माला, तरी सती ओ 'चन्दनवाला'
सारा ही जग जानदा जी

प्रभु नाम दी अदभुत शक्ति, तरे हज़ारो कर-कर भक्ति
पाया सुख निर्वाण दा जी

मात-पिता, सुत, भगिनी, भाई, चले सग न धेला-पाई
झूठा सुख धन-धान दा जी .

होना सचमुच जे स्वतन्त्र, दया-दानदा पढलै मन्त्र
रस्ता जो कल्याण दा जी...

विषय-विकारा वाले बन्धन, मुक्ति जान न देन्दे 'चन्दन'
क्यो न तू पहचान दा जी

बरनाला
२०२३ मगसिर

## २५८—उसको कहते हैं

तर्ज़—तेरे कूचे मे

जिसे हो आपकी पहचान, ज्ञानी उसको कहते है
बसाए दिल मे जो भगवान् ध्यानी उसको कहते है
किसी को जो सताती ही रही वह जिन्दगी क्या है
कटे उपकार मे जो जिन्दगानी उसको कहते है

जवानी वह नही साहब ! मिटे जो राग़-रगो मे
लुटे जो धर्म की राह मे, जवानी उसको कहते है
दुखी दर्दी का दु ख सुन कर, उसे जो प्रेम से झटपट
कलेजे से लगाए मेहरबानी उसको कहते है
है केवल काम किस्से का, सिखाना झूठ-छल-झगड़ा
बदल दे जिन्दगी को जो, कहानी उसको कहते है
बुराई तज भलाई का भरे हरदम जो दम 'चन्दन'
सही अर्थो मे हम हिन्दोस्तानी उसको कहते है

वरनाला
२०१६ जेठ

१— कारतूस कहिये इसे, कहिये मत सिगरेट ।
'चन्दन' चूसे रक्त ये, करे न लाग लपेट ॥
२— धुआ बुरा सिगरेट का, मु ज करे जो मूछ ।
'चन्दन' अन्दर की दशा, मन से प्यारे ! पूछ ॥
३— बीडी से-सिगरेट से, कैंसर तक हो जाय ।
'चन्दन' बचिये बन्धुओ ! ये है बुरी बलाय ॥
४— चटपटा न चरपरा, नाही मीठा स्वाद ।
'चन्दन' पी-पी मूर्खो ! क्यो होते बर्बाद ॥
५— सभी तरह के और तो, पी लेते है सन्त ।
पीए तम्बाकू न कभी, धन्य ! जैन का पन्थ ॥

## २५९–होश में कब तू आयगा

तर्ज़—नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे

ओ दुनिया के लोभी बन्दे ! होश मे कब तू आयगा ?
जीवन-हीरा कौडी बदले, क्या तू व्यर्थ लुटायगा ? .

छन-छन की झनकार मधुर सुन, भूला दीन-ईमान को
शादी का ले नाम बेचता, प्यारी तू सन्तान को
मरने के पश्चात्साथ मे, धेला भी न जायगा .

जन्मेगी जब कन्या तेरे, करले जरा विचार तू
उसकी शादी पर फिर कितने, देगा नकद हजार तू
आयगी तब याद रे ! नानी, कन्नी तू कतरायगा .

देखो गीता साफ़ पुकारे, लोभ नर्क का द्वार है
फिर भी माया ठगिनी से क्यो, तेरा इतना प्यार है
निकलेगे जब प्राण बदन से, रोयगा-पछतायगा .

देख सिकन्दर ने क्या पाया, इतने जुल्म गुजार कर
अन्त गया सनसार से खाली, दोनो हाथ पसार कर
'चन्दन' बन सन्तोषी सुख तू, भारी जिससे पायगा

बरनाला २०१६ बैसाख

## २६०—सन्त सुनायें रे !

तर्ज़—सारी-सारी रात तेरी याद

मीठे-मीठे वोल प्यारे सन्त सुनाएँ
सन्त सुनाएँ तेरी नीद उडाएँ रे !

इक तो तुरन्त प्यारा ज्ञान सिखाएँ
दूजे सीधी राह चलाएँ
राह चलाएँ बन्दे ! नेक बनाएँ रे
आके निकट कभी सीख बावरिया !
तेरी बीती जाती उमरिया
जाती उमर तोहे, सदा बतलाएँ रे
जाना अगर तुझे मोक्ष-नगरिया
पापो की तज भारी गठडिया
भारी गठड तेरा, यहो पटकाएँ रे
पाव फैलाता अरे ! बनके दीवाना
अन्त यहा से कूच ठिकाना
कूच ठिकाना 'चन्दन' यह समझाएँ रे

ब

२०६

१— कीर-रटन सा क्यो करे, प्रात पुस्तक-प
'चन्दन' बिन आचरण के, सब है थोथा ठा
२— सार यही है पाठ का, चले पाठ अनुसा
वरन बैल पर पोथिया, 'चन्दन' समझो भा
३— झूठ, कपट-छल न तजा, चला पाप के प
तारे 'चन्दन' किस तरह, बिना विचारे ग्रन्थ

# २६१—सात कुव्यसन

कुव्यसन सात दुखदाई, सब त्यागो जी ! नर-नार .

जो जूश्रा खेल रचावे, नल-पाण्डव सम पछतावे
जब जावे सब कुछ हार...

जो चोरी के दीवाने, है जाते बन्दीखाने
दे चमडी पुलिस उतार .

बेतरस मास जो खावे, खा-खा के पेट फुलावे
मर, जाते यम के द्वार .

क्यो नर्क गति न पावे, क्यो मार न यम की खावे
है जिनका शौक शिकार .

बन मदिरा के मतवाले, जो भर-भर पीते प्याले
हो नर्को मे सत्कार .

पर पुरुप, पराई नारी, जो तकते दुष्टाचारी
फिट लानत दे सनसार .

घर गणिका के जो जावे, नर नर्कगति वे पावे
सिर पडती यम की मार .

इन सातो से अय प्यारे ! जब तक न रहो किनारे
है जप-तप सब बेकार .

जो प्राणी हो वडभागी, वही वनता इनका त्यागी
ओ स्वर्ग-मुक्त हकदार

जो इन से करे किनारा, हो उन का ही निस्तारा
यो 'चन्दन' कहे पुकार ..

सिरसा
१९९४ चातुर्मास

## २६२—परदेसी से

तर्ज़—इक परदेसी मेरा दिल

उठ परदेसी! प्रभात हो गई
सोते-सोते तुझे सारी रात हो गई

सोया क्यो तू निन्दिया मे पाव को पसार के
देख जरा एक बार अखिया उघाड के
बिदा तेरे साथ की जमात हो गई

झूमते है फूल ये जो खिलो गुलजार है
चन्द रोज दुनिया की रौनक-बहार है
कहके ये रवाना बरसात हो गई

रात को ईशारो मे ही कहा यो सितारो ने
मिटना है फौरन ही सुन्दर नजारो ने
होते ही उजेला सच्ची बात हो गई .

दूर तू हटा के झूठे मोह-अभिमान को
जपा कर दिन रात प्यारे भगवान को
'चन्दन' से तेरी मुलाकात हो गई ..

बरनाला
२०१६ वैसाख

## २६३—गजसुकुमाल

तर्ज़—चुप-चुप खड़े हो

क्षमा का पुजारी वीर 'गजसुकुमाल' था

देवकी का लाल था जो, देवकी का लाल था

प्रेम भरी वाणी, सुन, 'नेम भगवान' की

दिल मे अनोखी जोत, जग गई ज्ञान की

सयम ले दुनिया का, काटा मोह-जाल था

माता ने आशीर्वाद दिया प्रेम-प्यार से

वेडा पार कर जाना, बेटा! सनसार से

यही बात बार-बार कह रहा गोपाल था...

मन को बना के दृढ बज्र समान जी

जा के शमशान मे लगाया झट ध्यान जी

'सोमल' वहा पे तव, आया तत्काल था..

देखलो निन्नानवे हजार भव बाद जी

प्रतिशोध आगया अचानक ही याद जी

बदला चुकाया सिर अगनो को डाल था .

गुस्सा एक राई भी न, लाए मुनि मन मे

कर गए 'चन्दन' वे, बेडा पार क्षण मे

शान्त स्वभाव कैसा, उनका कमाल था

वरनाला
२०१६ वैसाख

## २६४—छलावा

तर्ज—दिलदार कमन्दा वाले दा...

तू जिस को मुहब्बत कहता है, बह केवल एक छलावा है
जल नही है यह तो रेता है, मन-मृग का इक बहलावा है
अधखिली-रगीली कलियो को, ललचाई निगाह से क्यो ताके
ये कलिया नही रे। काटे है, सब झूठा उल्फत दावा है
मोह-माया के इस सागर को, मतवाले। तरना सहज कहां
तू बैठा जिस पर काठ समझ, वह पत्थर की इक नावा है
इस लोभ, कपट को दुनिया मे, सब मतलब के ही बन्दे है
इक चाय का प्याला-बिस्कुट से, हो जाता प्रीत दिखावा है
हर रोज हजारो हसरत को, मन बीच लिए ही जन जाते
रह सकता 'चन्दन' कौन यहा, जब आता अन्त बुलावा है

बरनाला
२०१६ चैत्र

१—गला सजाने के लिए 'चन्दन' टाई व्यर्थ।
गला सजाने को मधुर, बोलो एक समर्थ ॥
२—जो दे गन्दी गालिया, बाणी जिसकी सख्त।
खाक सजायगा गला, 'चन्दन' टाई-भक्त ॥
६—मुनि, गुणी को जो झुके, 'चन्दनमुनि' तुरन्त।
बिना टाई के भी सजे, गर्दन वह अत्यन्त ॥

## २६५–स्वाध्याय

सुना आपने नही कभी क्या, वचन श्रीगुरु ज्ञानी का
तरने को सनसार सदा, 'स्वाध्याय' करे जिनवाणी का .

पढा स्वय को जाए जिस से, स्वाध्याय कहलाता है
कैसा है स्वाध्याय पता न, जिस से अपना पाता है
समकित-ज्योति जगाकर जोकि, सन्मार्ग दिखलाता है
ग्रन्थ वही स्वाध्याय के बस, लायक माना जाता है
उलटे राह चलाए जो क्या, पडना कथा-कहानी का .

यह तो सर्व विदित है तप से, कर्म सभी कट जाते है
'वीरप्रभु' स्वाध्याय को, 'आभ्यन्तर' तप बतलाते है
नर पुगव जो इसको आलस, तज करके अपनाते है
सुर-दुर्लभ इस जीवन को बस, वे ही सफल बनाते है
बाकी का तो जनम अरे ! है, केवल कौडी कानी का

ज्ञान-शून्य तो मानव जग मे, जीवन व्यर्थ गवाता है
आतम का-परमातम का न, पता उसे कुछ पाता है
चौरासी के चक्कर मे फस, कष्ट अनेक उठाता है
अन्त कभी भी कष्टो का न, उस के फिर तो आता है
दुख का ही बस बनता सागर, जीवन उस अज्ञानी का .

राग-द्वेष का लेश नही है, देखो तो 'जिनवाणी' को
पार तभी भवजल से पल मे, करती है ये प्राणी को
एक बार भी देखा जिसने, श्रद्धा से कल्याणी को
पावन परम बनाया उसने, अपनी इस जिन्दगानी को

पग-पग पर ही परम लाभ है,काम भला क्या हानि का
जिनवाणी-स्वाध्याय आपके, मन की कली खिलायगा
जिनवाणी-स्वाध्याय आपके, मन को शान्त बनायगा
जिनवाणी-स्वाध्याय आपके, मन का तमस् मिटायगा
जिनवाणी-स्वाध्याय आपके, सारे कष्ट भगायगा
जिनवाणी-स्वाध्याय अत, कर्त्तव्य प्रथम है प्राणी का
जिनवाणी-स्वाध्याय से ही, आप स्वय को जानेगे
जिनवाणी-स्वाध्याय से ही, सत्यासत्य पहचानेगे
जिनवाणी-स्वाध्याय से ही, हठ न झूठी ठानेगे
जिनवाणी-स्वाध्याय से ही, न्याय-बचन को मानेगे
बैठेगे न कभी बिलोना, भर करके फिर पानी का
नियम अत स्वाध्याय करने का अय बन्धो ! करियेगा
तरने के शुभ पथ पे अपने, कदम मुस्तैदो धरियेगा
सफल मनोरथ आप बनेगे, नही जग भी डरियेगा
कालअनादि के दुख-सकट, सारे अपने हरियेगा
कठिन नही सुलझाना कुछभी,'चन्दन'उलझी तानी का...

बरनाला
२०२१ मगसिर

| | |
|---|---|
| १ | असली मे नकली मिला, बेचेगे जो माल । |
| | यहा-वहा, 'चन्दनमुनि', मन्दा होगा हाल ॥ |
| २ | खोटे पैसे अन्त मे, करते है कगाल । |
| | मिले पलक परलोक मे, चैन न 'चन्दन लाल' ॥ |

## २६६—चातुर्मास समाप्ति-सन्देश

बहर तवील

नाम 'अर्हन' सदा प्यारे ! ध्यावो सभी
उनके गुण गाके जीवन बनावो सभी
दूर अज्ञान-अन्धेर हो जायगा
प्रेम-दीपक को दिल मे जलावो सभी

जिन के शुभ नाम से हो अमर आतमा
वो है 'ईश्वर' या 'अर्हन' या 'परमातमा'
याद मे उसकी अपना लगा दो समा
उनकी भक्ति से आनन्द पावो सभी

है अकलमन्द दुनिया मे वो ही बशर
जो सुबह-शाम रटता है नाम ईश्वर
श्रद्धा-भक्ति के लेकर ये लालो गोहर
खोल कर दिल अय भाइयो ! लुटावो सभी

धर्म के काम से जो किनारा करे
कैसे उम्मीद से अपना दामन भरे
खेत सूखे न होते हैं जल विन हरे
निश्चय अपने हृदय मे ये लावो सभी

हर रोज करेंगे जो प्रभु का भजन
वो मिटा डालेगे अपना आवागमन
जन्म इनसान का तो है पाना कठिन
वात दिल मे ये अपने विठावो सभी

है चातुर्मास का भाइयो ! उद्देश ये
कह गए बात सच्ची है दरवेश ये
हम फकीरो का भी तुमको उपदेश ये
धर्म पर जान तक भी लडावो सभी

त्यागो निद्रा को वक्ते सहर आ गया
रात गुजरी उजाला भी है छा गया
वीर आकर जो तुम को है समझा गया
उन ईशारो पे दृष्टि जमावो सभी

हो रहा आज भाइयो ! चौमासा खतम
आज उपदेश अन्तिम सुनाते है हम
नेक कामो मे पीछे न धरना कदम
'वीर' के लाल बन कर दिखावो सभी

गर कथा मे वचन ऊचे-नीचे कहे
भाई-बहनो को जो हो बुरे वे लगे
आज उनकी छिमा सब से हम मागते
दिल को दर्पण बनाकर दिखाओ सभी

जै-जै बोलो सभी 'वीर भगवान' की
जै श्री जैनधर्म—साधु गुणवान की
दिलमे 'चन्दन' जो इच्छा है कल्याण की
'मन्त्र नवकार' की रट लगावो सभी

## ६६७–सुदर्शन सेठ

निर्मल शील निभाया, सेठ सुदर्शन ने
'चम्पापुर' मे ये थे रहते, कथा जिन्हो की हम है कहते
धर्म, शील चित लाया
मूर्त थी वो इक नूरानी, जैसे हो बस देव विमानी
देख शशी शर्माया .
'मनोरमा'थी इनकी प्यारी, भगनी-माता बाकी नारी
सदाचार मन भाया
पुत्रो को ले इक दिन सग मे, चले सैर को हर्ष-उमग मे
सडक पे कदम बढाया
राजा जी की'अभया'राणी, देख हो गई काम-दीवानी
मन मे पाप समाया
उसने जाल अनेक विछाए, सेठ मगर न काबू आए
भारी जोर लगाया
कातिक की जब पूनम आई,सेठ ने 'पौषध' कीना जाई
निश्चल ध्यान जमाया
बान्दी राणी ने समझाई, उठा टोकरे मे वह लाई
कोई जान न पाया
ज़ोर लगा तब राणी हारी,ध्यान रहा पर उनका जारी
मन न जरा डुलाया...

राणी ने तब मकर रचा कर, जोर-जोर से शोर मचाकर
बन्दी उन्हे बनाया
राणी से सुन कपट-कहानी, राजा ने भी की मन मानी
सूली उन्हे चढाया
सूली बनी सिहासन फौरन, राजा ने सर धर के चरनन
सब अपराध खिमाया
नगर सेठ फिर उन्हे बनाकर, हाथी के हौदे बिठला कर
सादर घर पहुचाया
लोगो ने ये देख नजारा, जैकारे पे बस जैकारा
लगा गगन गुञ्जाया .
घटना सारी जिसदम जानी, मरी लगा कर फाँसी रानी
अपयश जग मे छाया
नगर निवासी कहते 'चन्दन', धन्य-धन्य ! है सेठसुदर्शन
चमत्कार दिखलाया

सिरसा
१९९३ फाल्गुण

चार दिन है जिन्दगी सनसार मे
कीजिये व्यतीत पर उपकार मे
अय 'मुनिचन्दन' खरीदो नेकिया
कौन जाने आए कब बाजार मे

## २६८—मुसाफिर से

तर्ज़—तेरे प्यार का आसरा

न दुनिया मे दिल तू फसा अय मुसाफिर।
न मजिल को अपनी भुला अय मुसाफिर।
जगत के नजारे जो लगते है प्यारे
रहे कर ईशारे न जा अय मुसाफिर।
जरा बन सयाना, अगर मुक्ति जाना
न हरगिज कमाना, दगा अय मुसाफिर।
ये चञ्चल-चपल चित, टिकाने मे है हित
यश-कीर्ति नित, कमा अय मुसाफिर।
कोई राजा-राणा, हमेशा रहा ना
है जाता जमाना, चला अय मुसाफिर।
सभी तज झमेले, है जाना अकेले
महल न तबेले, बना अय मुसाफिर!
ले बिगडी वना तू, ले किस्मत जगा तू
प्रभु-गीत गा तू, जरा अय मुसाफिर।
अहिंसा-सचाई, न तजना अच्छाई
मगर कर भलाई, भुला अय मुसाफिर।
रटे 'त्रिशलानन्दन', कटे कर्म-बन्धन
ये कहता है 'चन्दन', सदा अय मुसाफिर।

सिरसा
१९९५ चातुर्मास

## २६१—प्रभु-पथ के पथिक

तर्ज—कभी सुख है-कभी दुख है

प्रभु की राह मे रखते है, जो कोई कदम अपना
सफल सब ओर से वे ही, बनाते है जनम अपना
कोई है काम के प्यारे, कोई है दाम के प्यारे
कोई आराम के प्यारे, उन्हे पर है सनम अपना
कभी जो कष्ट आते है, नही वे डगमगाते हैं
खुशी से सहते जाते है, समझ करके करम अपना
किसी का मर्म खोले न, जरा भी झूठ बोले न
कभी न्याय से डोले न, भले हो सर कलम अपना
किसी को न सताते है, किसी को न दुखाते है
बनाते वे तो जाते है, सुमन से मन नरम अपना
मिले कोई कही दुखिया, बनाने दौडते सुखिया
सदा सेवा मे बन मुखिया, लहू रखते गरम अपना
गुणी बलिहार है जिस पर, मुनि बलिहार है जिस पर
कभी झुकने नही देते, अहिसा का अलम अपना
'मुनि चन्दन' सचाई पर, सुलह-समता-सफाई पर
अछाई पर-भलाई पर, करेगे दम खतम अपना

बरनाला
२०२३ मगसिर

## २७०-वन्दे जिनवरम

तर्ज़—गीतिका छन्द

प्रेम से कहते हैं जो इनसान वन्दे जिनवरम्

ये बनाती है उन्हे भगवान वन्दे जिनवरम्

इन्द्रिया, मन, काम आदि, जीत कर जो 'जिन' बने

है उन्हे सब कह रहे गुणवान वन्दे जिनवरम्

जब करे प्रारभ पुस्तक, पत्रिका या फिर वही

सब से ऊपर सब लिखे विद्वान वन्दे जिनवरम्

हो महूर्त हाट-घर का, या सगाई-ब्याह का

मन्त्र मुख से बोलते श्रीमान् वन्दे जिनवरम्

'जिन'-जनम-अभिषेक मेरू पर करे जब देवते

हर गले से गून्जता है गान वन्दे जिनवरम्

मानते हैं धर्म को जो, मानते है कर्म को

आस्तिको की समझिए जी-जान वन्दे जिनवरम्

है जिन्हे नफरत दया-दम, दान से-ईमान से

क्या कहेगे वे भला नादान वन्दे जिनवरम्

धार कर समता जिन्हो ने, जगत-ममता जीत ली

उन तपस्वी-त्यागियो की, तान वन्दे जिनवरम्

जो गिराए हर बशर को, हर किसी की नजर से

ये मिटाती है अह-अभिमान वन्दे जिनवरन्

## २६१—प्रभु-पथ के पथिक

तर्ज—कभी सुख है-कभी दुख है

प्रभु की राह मे रखते हैं, जो कोई कदम अपना
सफल सब ओर से वे ही, बनाते है जनम अपना

कोई है काम के प्यारे, कोई है दाम के प्यारे
कोई आराम के प्यारे, उन्हे पर है सनम अपना

कभी जो कष्ट आते है, नही वे डगमगाते है
खुशी से सहते जाते है, समझ करके करम अपना

किसी का मर्म खोले न, जरा भी झूठ बोले न
कभी न्याय से डोले न, भले हो सर कलम अपना

किसी को न सताते है, किसी को न दुखाते हैं
बनाते वे तो जाते है, सुमन से मन नरम अपना

मिले कोई कही दुखिया, बनाने दौडते सुखिया
सदा सेवा मे बन मुखिया, लहू रखते गरम अपना

गुणी बलिहार है जिस पर, मुनि बलिहार है जिस पर
कभी झुकने नही देते, अहिसा का अलम अपना

'मुनि चन्दन' सचाई पर, सुलह-समता-सफाई पर
अच्छाई पर-भलाई पर, करेंगे दम खतम अपना

बरनाला
२०२३ मगसिर

# २७२-वचन-वाणी

तेरे प्यार का आसरा

वचन की है ताकत बडी जग मे प्यारे ।
कभी भी न बोलो, बचन बिन विचारे

मधुर और पवित्र, है वाणी विचित्र
रिपु जिस से मित्र, बनेगे तुम्हारे

ये शास्त्र पुराने, जिन्हे जगत माने
वचन है बडो के, चमकते सितारे

हरिश्चन्द्रे चट-पट, तजा राज–झझट
रहे जाके मरघट, बचन पर न हारे

कभी झूठ मुख पर, न लाए युधिष्ठर
तभी 'धर्मपुत्र', उन्हे कहते सारे

न गौतम थे बच्चे, वचन निकले कच्चे
'आनन्द' थे सच्चे, खिमाने पधारे

कृपा कुछ कुमत की, जिन्हे पे हुई थी
वे 'रहनेम' से भी, वचन ने सुधारे

भरत की क्यो मा ने, सुने सब से ताने
नही कौन जाने, वचन दो उचारे

अधम जो कहाते, वचन-शर चलाते
सदा दिल जलाते, ज्यो जलते अगारे

बरसे बगैर जेहड़ो, अग्गे न लग दी
गज्जे जद घोर घटा ओ, कज्जल दे रग दी
मोर सब शोर मचादे, हुन्दे कुर्बान जी ..

दीप-दीवाना बनदे, देखो पतग नू
मारे मुहब्बत दे ओ, मोडे न अग नू
करदा ए अर्पण अपने,प्यारे ज्यो प्राण जी...

मन्ने चकोर मन बिच, अद्भुत आनन्द नू
सारी दी सारी रजनी,तकदा जो चन्द नू
थक्के न अक्के बैठा, पक्के ओ ध्यान जी...

मस्त ता मृग भी हुन्दा, उज है राग ते
सब तो पर ज्यादा जादू, काले ही नाग ते
दीन ते दुनिया दा ओ, भुल्ले औसान जी...

बनके दीवाना देखो, कमल ते फुल्ल दा
होश ओ अपने सारे, भौरा भी भुल्ल दा
मिलदा आराम ओहनू , ओसे अस्थान जी .

।ङम न दाखा ते न, आड़ू-अगूर ते
कोयल ता कूके केवल, अम्बिया दे बूर ते
नच्चे ओ डाली-डाली, तोडे ज्यो तान जी ..

कागज ते गत्ता लोडन, गिल्ली ज्यो गून्द नू
'वन्दन' ओ चातक चाहे,स्वाती दी बून्द नू
राजी न करके कोई दूजा जल-पान जी..

बरनाला २०२३ पौष

# २७२-वचन-वाणी

तेरे प्यार का आसरा

वचन की है ताकत बडी जग मे प्यारे।
कभी भी न बोलो, बचन बिन विचारे

मधुर और पवित्र, है वाणी विचित्र
रिपु जिस से मित्र, बनेगे तुम्हारे

ये शास्त्र पुराने, जिन्हे जगत माने
वचन है बडो के, चमकते सितारे

हरिश्चन्द्र चट-पट, तजा राज–झंझट
रहे जाके मरघट, बचन पर न हारे

कभी झूठ मुख पर, न लाए युधिष्ठर
तभी 'धर्मपुत्र', उन्हे कहते सारे

न गौतम थे बच्चे, वचन निकले कच्चे
'आनन्द' थे सच्चे, खिमाने पधारे

कृपा कुछ कुमत की, जिन्हे पे हुई थी
वे 'रहनेम' से भी, वचन ने सुधारे

भरत की क्यो मा ने, सुने सब से ताने
नही कौन जाने, वचन दो उचारे

अधम जो कहाते, वचन-शर चलाते
सदा दिल जलाते, ज्यो जलते अगारे

लगा शक्ति सारी, करो खूब ख्वारी
वचन की कटारी, न पर कोई मारे

किसी ने कुल्हाड़ी थी सिह-सिर मे मारी
हुई ठीक लेकिन, वचन न विसारे

कभी जो गधा सा, किसी ने कहा था
उसे वह हमेशा, दुखी हो चितारे

कटु सत्य वाणी, न कहना अय प्राणी।
ज्यो कानी को कानी, अज्ञानी पुकारे

युवक वह बहादुर, सदा पाए आदर
बडो के जो सादर, बचन सब सहारे

वचन इक बनाए, वचन इक मिटाए
वचन इक वसाए, वचन इक उजाडे

'प्रभुवीर'-वाणी, सुनो प्यारे प्राणी।
अगर है लगानी, ये किश्ती किनारे

वचन-बल को 'चन्दन' समझते गुणी जन
हजारो ही जीवन, जिन्हो ने सवारे

वरनाला
२०२३ पोह

| जगती मे सब से वडे, शील-शान्ति-शर्म |
|---|
| इन बिन 'चन्दन' व्यर्थ सब, किया-कराया धर्म |

## २७३-कुरीतियां

तर्ज़—प्रीता प्रभु नाल वन्दया ! लगाइया न गइया

रीता खोटिया नू अज जे हटाया न गया
रुड जाऊगी ए कौम जे बचाया न गया...

व्याह पिच्छे अज प्यारे नौजवान बिकदे
पीले पैसया दे वास्ते ईमान बिकदे
मन लालची ते लोभी ए मनाया न गया .

व्याह ता है इक पासे, नइयो सौखी मगनी
विना छी हजार-हार होई औखी मगनी
मगा गहरिया गिनौदे शर्माया न गया...

अज कायम ईमान उत्ते जेहडे लोग ने
सच आखदा हा वडे ही प्रशसा योग ने
प्यारे पुत्त नू नीलामी ते चढाया न गया

होर बुरे जो रिवाज नवे चले दस्सिये
भैडे भगडे ए व्याहा दे न भले दस्सिये
पग नेकिया दी राह ते टिकाया न गया .

जान लग्गिया जनानिया जो जञ्ज विच ने
नही जानदा है कौन किन्ना होन जिच ने
परन्तु घर विच फेर भी वहाया न गया

बुरी है आतिशबाजी वहुत ही व्याह च
इक भी जे डिगपे पतगा जा कपाह च
कोई बचू ढेर फेर जो जलाया न गया..

ओ सुन के पटाखे दा धडाका रात नू
को दस्सिए जो लग्गे खौफ पछी जात नू
ओथो उड के ठिकाना मुड पाया न गया .

सुनो सादगी समान न आनन्द कोई है
पर दिलो एहनू करदा पसन्द कोई है
माडा अभिमान मन तो मिटाया न गया .

हाय ! भुल बैठे लोग अज भगवान नू
बस जानदे ने चगा ऐश-पीन-खान नू
नर-जीवन ए सफल बनाया न पाया

सारी सुख-सम्मान वाली बनू जिन्दगी
आऊ आप दे न कदे कोल शर्मिन्दगी
'मुनि चन्दन' दा गीत जो भुलाया न गया

वरनाला
२०२३ पौप

---

१– 'चन्दन' जब अंग्रेज वह, चला हिन्द को लूट ।
दिए तीन तोहफे हमे, इँगलिश-फैशन-फूट ।।
२- 'चन्दन' मम्मी अब कहो, 'मा' कहने मे पाप ।
खबरदार जो बाप को, कहा किसी ने बाप ।।
३- 'चन्दन' इगलिश क्या पढे, बने लोग अंग्रेज ।
शीश हैट-टाई गले, इंगलिश बोले तेज ।।

---

# २७४—जन्म सुधार गया

खडी बहर

जो भी आया जग के अन्दर, दोनो हाथ पसार गया।
पिता-पुत्र न पत्नी आदिक, साथ कोई परिवार गया॥
बुरी गुजार गया हो चाहे, कोई भलो गुज़ार गया।
लौट दिखाया फिर न मुखडा, जो कोई इकबार गया॥
जो था बन्दा भाइयो। गन्दा, जीवन बाजी हार गया।
छोड चला यश-अपयश कोई सग प्रभु का प्यार गया॥
एक गया सनसार से हसता, रोता एक सिधार गया।
एक डुबकर गया वश को, एक वश को तार गया॥
लाख-क्रोडी माया जोडी, सारी अन्त विसार गया।
एक दान दे स्वर्ग सिधारा, लोभी यम के द्वार गया॥
करता इक उपकार गया तो, करता इक अपकार गया।
हंसते-हसते प्यारा जीवन, देश-धर्म-पर वार गया॥
बनी एक ने सभी बिगडी, बिगडो एक सवार गया।
इक ने खोया-इक ने पाया, हरइक इस प्रकार गया॥
एक ले गया पाप-पोटली, हलका कर इक भार गया।
सुधा-धार बन एक गया तो, एक बना तलवार गया॥
एक गया बन नयन-सितारा, एक खटकता खार गया।
रहा एक तो गोते खाता, इक बस परले पार गया॥

एक जिसे सनसार ने छोडा, एक छोड सनसार गया ।
इक ने सफल बनाया जीवन, खोकर इक बेकार गया ॥

एक दु खी की बना दवाई, दुखडे सभी निवार गया ।
कर्मो मारा एक बेचारा, होकर खुद लाचार गया ॥

दान,शील,तप और भावना, करता कोई चार गया ।
चल चारो से कोई उलटा, बनकर चोर-चकार गया ॥

खाता मास-शराबे पीता, करता सदा शिकार गया ।
आगे नर्क-लोक मे सीधा, खाने यम की मार गया ॥

बन के एक प्रभु का प्यारा, जीव दया दिल धार गया ।
सुख-सम्पत्ति भरे स्वर्ग मे, करने मौज बहार गया ।

एक फिलम का बन दोवाना, गन्दे खेल निहार गया ।
रेडियो-राग निकम्मे सुनकर, करके जीवनख्वार गया ॥

एक प्रभु के गीत गु जाता, करता जै-जै कार गया ।
एक कवि लिख गीत पाप के, किश्ती भवर उतार गया ॥

एक सामायक-सम्बर करता, पढता श्री नवकार गया ।
'चन्दन मुनि' गुणीइक नम्बर,बनकर जन्म सुधार गया ॥

बरनाला

२०२३ पोह

'चन्दन'चञ्चल चपल है, चपला चमक समान ।
तन-धन यौवन का करे, मूरख जन अभिमान ॥

## २७५—बिकने लगे

तर्ज—हरिगीतिका

पाप के काले कदम हा ! हिन्द मे टिकने लगे
थे यहा बिकते पशु तो, पुत्र भी बिकने लगे
हिल गया ईमान सारा, सेठ मोटे पेट का
भूल कर परमात्मा को, पौण्ड को झुकने लगे
योग्य युवको को कोई, किस तौर कन्या दान दे
जब उन्हो के दाम खुल्ले आम हैं चुकने लगे
लोक को-परलोक को भी, पुण्य को भी-पाप को
शर्म को-शुभ कर्म को अब, ताक मे रखने लगे
आज बेटी के पिता का, मर्द है हमदर्द कौन
देख कर बेदर्द दुनिया, सर्द दिल दुखने लगे
आज तो भाई ! सगाई, भी है ताई ब्याह की
आठ-दस सहस्र रुपैये, सहज ही उठने लगे
है कहा सन्तोष-समता, सरलता-सद्भावना
लग रहा है-जगत से, जड़-मूल से मिटने लगे
जायगे सग आपके क्या, सेठ ! पैसे पाप के ?
जिस समय सनसार से 'चन्दन मुनि' चलने लगे

सिरसा
१९९५ आषाढ

## २७६—सुपात्र-दान

तर्ज़—मीराँ जैसी धीर जी

जो करन सुपात्र दान जी, ओ मौज उडादे

धन-नारी दा जो हो त्यागी, सन्त सुपात्र ओ बड भागी
ज्ञानी ते गुणवान जी

नही सुपात्र मिलदा सौखा, मिल जावे ता देना औखा
औखे विधि-विधान जी

योग फेर भी जे मिल जावे, नाल श्रद्धा दे जो बहरावे
क्यो न हो कल्याण जी

वस्त्र दितेया वस्त्र मिलदे, होन मनोरथ पूरे दिलदे
अग्गे ढेरा थान जी

औघा अते पातरे-लोई, दान पुरुप जो करदे कोई
सिद्धे स्वर्ग सिधान जी .

पार रहे न ऋद्धि वाला, धन-दौलत प्रसिद्धि वाला
'शालिभद्र' समान जी...

जिन्हां कीता दान न दाना, रज्ज अगाडी की सी खाना
दुर्लभ हर पक्वान जी .

जो जन हुन्दे ने वडभागी, पाके साधु सच्चा त्यागी
किस्मत नू चमकान जी .

होकर गद्‌गद् भक्ति करदे, भवसागर तो 'चन्दन' तरदे
पौदे पद निर्वाण जी...

बरनाला २०२३ पौष

## २७७—कोई काम करजा

तर्ज़—इक प्रदेशी मेरा, दिल ले गया

आने वाले ! दुनिया मे नाम करजा
भूले न जमाना कोई काम करजा .

वही है भलाई जो भुलाई करके
कैसी वह भलाई जो सुनाई करके
स्वार्थो को सज्जना ! सलाम करजा .

जमी जड जग से हिलाई पाप की
भक्ति सिखाई भाई-माई-बाप की
अपने को 'महावीर' 'राम' करजा .

दूर कर खुदी का खयाल दिल से
वदियो-दुराइयो को निकाल दिल से
पर उपकार सुबह-शाम करजा

दीन-हीन दुखी जो वेचारे पडे है
कर्मो के मारे-वेसहारे पडे है
दूर दुख उनका तमाम करजा

वात है ये तेरे लिए गहरे गौर की
अपने ही जैसी जान, जान और की
खुशी का खजाना खास-आम करजा ..

ऊपर तू चाहे कितना कठोर हो
करुणा का अन्दर मगर ज़ोर हो
अपने को वावरे ! वादाम करजा ..

यज्ञ कर्ता इन्द्रभूति से भो पाम्रो पर गिरे
मोम, पत्थर दिल बनाए, ज्ञातवशी वीर ने
अय 'मुनि चन्दन' ग्रहिसा की बजा कर दुदुभि
यज्ञ पशुओ के हटाए, ज्ञातवशी वीर ने

रामा मण्डी
२००४ पौष पूर्णिमा

## १६—हमारा कोई नहीं

तर्ज—इस दिल के टुकडे हजार हुए

इस जग की उलफत झूठी है, बिन मतलब प्यारा कोई नही
श्री वीतराग के धर्म सिवा, प्रतिपाल हमारा कोई नही
मतलब का चर्चा हर सू है, हर महफिल मे इसकी बू है
हर रग-तमाशे में इस से, नटवर अति भारा कोई नही
सब अपनी-अपनी हाक रहे, बिन नयन चहुँ दिश झाक रहे
कह मिश्री, मिटी फाक रहे, समझे बेचारा कोई नही
किस्मत से पुरष कहा बैठा, फिर भी निज धर्म भुला बैठा
तब कहना होगा, तुझ जैसा, किस्मत का मारा कोई नही
काल आए जवाहर पडे रहें, चुप बन्धु सारे खडे रहे
परलोक मे अपना साथ जो दे बिन धर्म सहारा कोई नही
धनवान तो सब को प्यारा है, निर्धन का कौन सहारा है
'चन्दन' पर हित जो जीवन दे, अब वीर दुलारा कोई नही

मण्डी डबवाली
२००३ वैसाख कृष्णा ११

## १७—किया कर—किया कर

सदा याद अर्हम् किया कर—किया कर

ये है नाम पावन लिया कर—लिया कर

प्यास अपने दिल की मिटाना जो चाहे

प्रभु-प्रेम-प्याला पिया कर—पिया कर

तू तृष्णा के जख़मो को बनकर भक्त जन

सबर की सुई से सिया कर—सिया कर

सुखो की है ख्वाहिश अगर तेरे दिल मे

तो औरो को सुख तू दिया कर—दिया कर

बना करके 'चन्दन' सफल अपना जीवन

तू लाखो वर्ष तक जिया कर—जिया कर

मालेर कोटला
जनवरी १९४२

## १८—नमस्कार

नमस्कार तुम को महावीर प्यारे !

नमस्कार तुम को सिद्धार्थ-दुलारे !

नमस्कार तुम को दयाधाम जिनवर !

नमस्कार तुम को दया धर्म-दिनकर !

नमस्कार तुम को जगत के उद्धारक !

नमस्कार तुम को अहिंसा-प्रचारक !

नमस्कार तुम को, कपट-क्रोध त्यागी !
नमस्कार तुम को, प्रभो वीतरागी।
नमस्कार तुम को, अनुकम्पा सिन्धो।
नमस्कार तुम को, जगत-जीव बन्धो।
नमस्कार तुम को, अमर पुर के गामी।
नमस्कार तुम को, महावीर स्वामी।
नमस्कार तुम को क्षमा-शान्ति-सागर।
नमस्कार तुम को, त्रिलोकी-उजागर !
नमस्कार तुम को, अभयदान - दाता।
नमस्कार तुम को, अय घट-घट के ज्ञाता।
नमस्कार तुम को, अय त्रिशला के नन्दन।
नमस्कार कर जोड करता है 'चन्दन'

रामा मण्डी
२००१ जेठ

## १९—कर सामायक

तर्ज—गम दिए मुस्तकिल

प्रात उठ 'वीर' ध्या, फिर स्थानक मे आ, कर सामायक
होगा धर्म ही आखिर सहायक
दिल मे अपने वसा, ये सामायक सदा, दुख-नशायक
होगा धर्म ही आखिर सहायक

भाग जागे पुरुष फिर बना है,राह उल्टे कदम क्यो धरा है?
मत यह जीवन गवा, आदमी बन दिखा, खूब लायक
आसन यत्ना के साथ विछा कर,'मुखवस्त्रिका'मुख पे लगा कर
मन्त्र पढ अय बशर। वीर-वाणी सिमर, मुक्ति दायक
दो घडी बैठ कर तू किनारे, त्याग ससार के काम सारे
प्रेम-रट तू लगा, गीत जिनवर के गा, बनके गायक. .
जो सामायक का नियम निभाए, नर्क-योनी न'चन्दन'वह पाए
शब्द अमृत भरे, हम को फर्मा गए, त्रिजग-नायक.

## २०–नादान से

तर्ज़—जब तुम ही नही अपने

उठ जाग अरे पगले। क्यो जनम गवाता है
नही सास ये मोती है, जिन्हें व्यर्थ लुटाता है
बच-बच के यहा पर तू, हर अपना कदम धर तू
चल मोह से बच कर तू, जो तुझ को सताता है
इक रोज ये देह तेरी, माटी की बने ढेरी
काया है ये गन्द-भरी, जिस को तू सजाता है
महलो मे जो पलते थे, बाहर न निकलते थे
बस मौत का इक झटका, सब होश भुलाता है
कहा आज है दुर्योधन ? कहा आज है वह रावण ?
सब छोड गए दुनिया, खोज उनका न पाता है

जग एक सराये है, कोई आए-कोई जाये है
इक धर्म सहायक है, 'चन्दन' ये सुनाता है

भटिण्डा २००५ फागुण शुक्ला ५

## २१–जय जिन वाणी जय

तर्ज—पी वे ढोला पी

जय जिनवाणी ! जय मुक्त निशानी जय
क्रोध, कपट, दुख हरती हो, शान्ति मन मे भरती हो
करती तुम निर्भय
सत्य की तुम प्रकाशक हो, अष्ट कर्म की नाशक हो
करती हो दुख क्षय
ग़म मे जो घबराता है, शरण तेरी जब आता है
दुख नाशे खा भय .
राग-द्वेष को दूर करे, गम को चकनाचूर करे
पूर्ण अमृत मय...
गुण इसकी हर गाथा के, गुण जिन-जननी माता के
'चन्दन' गाता है

रामा मण्डी
२००५ होली चौमासी

## २२–जायंगे

सास भक्ति मे जिन के गुज़र जायगे
मुक्ति नगरी मे वे ही वशर जायगे

चन पायगे हरगिज न परलोक मे
खतम पापो मे कर जो उमर जायगे
रहना बैठे किसी को न सनसार मे
जी के लाखो बरस अन्त मर जायगे
जिनकी नजरो मे जिनवर समाया नही
वे भटकते इधर से उधर जायगे
कतलो गारत पे बाधी जिन्हो ने कमर
करके अपना भी जख़मी जिगर जायगे
बेनवाश्रो का गर कुछ भला न किया
तेरी श्राशा के मोती बिखर जायगे
क्यो गिराए किसी दिल पे तू बिजलिया
कौन जालम जो जुल्मो से तर जायगे
काम नेकी के 'चन्दन' जिन्होने किए
वक्ते मुर्दन वे सीना सपर जायगे

## २३—मैं—मैं न बोल

तर्ज—पापी पपीहा रे ! पी-पी न बोल वैरी

ओ नर घमण्डी रे, मै-मै न बोल, प्यारे ! मैं-मैं न बोल
नन्ही सी जान श्रपनी, काहे तू जाये रोल, प्यारे ! मैं-मैं
तुझ को क्या घमण्ड है, तू काल का चारा रे !
मान किया बल का रावण ने, देख राम से हारा रे !
अन्त तेरी ओ खाक के जर्रे खुल जाए पोल, प्यारे ! मैं-मैं

गानो मे अधिक सुरीला, दया धर्म का गाना रे !
श्रद्धा-प्रेम से उसको गाले, और हो मस्ताना रे !
'चन्दन' इस मीठे स्वर का, भक्ति है मोल, प्यारे ! मै-मै

## २४–वीर–जन्म

ये किसने जन्म लिया
चैत्र सुदी त्रयोदश निश मे, हुआ उजाला चारो दिश मे
सब ने हर्ष किया
देव, देवीया मिलकर आए, मधुर स्वरो से मगल गाए
अमृत घोल दिया
आया जब कि वीर वह बाका, भूप सिद्धार्थ-त्रिशला मा का
खिल गया तुरत हिया
'चन्दन' दूर हटा कर दूई, प्रेम की लेकर कर मे सुई
जखमी जिगर सिया

## २५–समता दिखा गए

तर्ज—अफसाना लिख रही हूँ

उत्तम जहा मे जीवन, बस वे बना गए
सर्वस्व जो धर्म पर, अपना लुटा गए
सूली का तख्त शाही, 'सुदर्शन' बनाया जब
शाहो वजीर सारे, चरणो मे आ गए
गम से भरी पुकारे, पशुओ की जब सुनी
श्री नेम तज कर शादी, वन को सिधा गए

जब सर पे गज सुकुमाल के अगनी धरी गई
शान्ति के जल से दुख की अगनि बुझा गए
यज्ञो मे होते देखे जब जुलम वीर ने
इस रस्म पुर जफा को, जड से मिटा गए
श्री मेघरथ की करुणा, दुनिया को याद है
निज तन का मास देकर पछी बचा गए
परदेशी भूप जी को, राणी ने विष दिया
'चन्दन' समर्थ हो कर, समता दिखा गए

मण्डी गीदडबाहा
२००६ वैशाख शुक्ला ६

## २६—इक रीत पुरानी है

तर्ज—जब तुम ही नही अपने

क धर्म ही है अपना, दुनिया ये बेगानी है
तू जिस से करे प्रीति, सुख उसका तो फानी है
बाग लगाए क्यो, ये महल बनाए क्यो
यह छोड के जब नगरी, जगल मे बसानी है
थ घोडे व हाथी पर, चढता है तू नौशा बनकर
मरने पे तेरी डोली, बासो की बनानी है
ुश होके जो देखे गुल, क्या भूल गई बुलबुल।
पतझड की ऋतु जल्दी गुलज़ार मे आनी है
नवान हुए लाखो, बलवान हुए लाखो
नही आती नजर कोई अब एक निशानी है

दुनिया मे जो आता है, इक रोज वो जाता है
यहा आ के चले जाना, इक रीत पुरानी है
क्या मान करे धन का, इनसान। तू यौवन का
महमान यह पल-छिन का, सब जोशे जवानी है
जीवन से तू कुछ पाले, भगवान के गुण गाले
'चन्दन' की नही अपनी, यह वीर की वाणी है

मण्डी कोट फत्ता
२००५ वैसाख कृष्णा ६

## २७—मुखपत्ति-महिमा

तर्ज़—छव्वी दिया चुन्निया मैं मल-मल

मुखपत्ति मुख पर गुरुआ लगाई ए
जैन दी निशानी प्यारी, खूब ही सुहाई ए
देखदा जो मुखपत्ति, जादा झट जान है
जैनिया दे साधूआ दी, पक्की पहचान है
विना मुखपत्ति पता लगदा न काई ए
वोलना न झूट कदे, देनो नही गाली जी।
करदी नसीहत ए देख लौ निराली जी।
किसे नू भी कहनी नही, वाणी दु खदाईए
सिक्खा दी निशानी जिमे केश ते कृपाण है
तिलक-जनेऊ हिन्दु कौम दा निशान है
ओवे मुखपत्ति जैन विच वतलाई ए

मुख दी हवाड नालो, जीवा दे वचाने नूं
धर्म अहिसा प्यारा, पूर्ण निभाने नू
छोटा जेहा लीडा-तागा, बडा सुखदाई ए

बोलदे समय छिट्टे, उडदे जो थुक दे
डिगदे ने मुह ते बैठे, सामने मनुक्ख दे
सोघताई सूत्रां दी, ऐसे न वचाई ए

नगे मुह बोलन तो, जीव छोटे मरदे
जैन—साधु भुल्ल के न, कम्म ऐसा करदे
जिद्द करे जेहडा पूरा, ओह ता सौदाई ए,

सदा लई 'मुक्खपत्ति' मुह ते ओ लगादा है
पज महाव्रती जैन साधु जो कहादा है
'चन्दन मुनि' ने गल्ल, सच्ची ए सुनाई ए...

बुढलाढा मण्डी
२००४ फाल्गुण कृष्णा ८

## २८—अमन के अवतार

तर्ज—तेरे प्यार का आसरा

महावीर जग को जगाने थे आए
अहिसा का डका बजाने थे आए
लिए दिल मे अब्रे करम की तरगे
वे उजडे चमन को बसाने थे आए

## ३१—मुखपत्ती

तर्ज—कभी सुख है कभी दुख है

कही जिनवर ने जिन मुनियो की जग मे शान मुखपत्ती
अहिसा धर्म वालो की, सुगम पहचान मुखपत्ती
बचाती है ये सूक्ष्य जीव, मुख की भाप तीक्ष्ण से
इसी कारण से है ये वायसे कल्याण मुखपत्ती
ववकते गुफ्तगू या पाठ, पडते थूक के छींटे
न होती मुंह पे मुनियो की अगर दरबान मुखपत्ती
जवा काबू मे करने और सबर-सन्तोष रखने का
गुणी जन पहनते है ये ईशारा जान मुखपत्ती
ब्राह्मण का निशा जुन्नार और कृपाण सिक्खो का
मगर है जैन मुनियो का निशा आसान मुखपत्ती
है कहने को तो ये छोटा सा वस्त्र आध गज डोरा
मगर मुक्ति के साधन का है इक सामान मुखपत्ती
अहिसा धर्म पे अपना जो जीवन वार बैठे है
विचरते है लगा कर के सरे मैदान मुखपत्ती
प्रथम महाव्रत पालन को, निशा 'चन्दन' ये लाजिम है
है रखते जैन-साधु इस लिए हर आन मुखपत्ती

फरीदकोट
२००२ चातुर्मास

## ३२—महा मन्त्र नवकार

तर्ज—इस दिल की किस्मत क्या कहिये ।

नवकार की महिमा क्या कहिये, इस जैसा प्यारा कोई नही
बिन इस के बन्धु भवजल से, बस तारन हारा कोई नही
नौ लाख वार जो ध्याता है, नही नर्क-गति मे जाता है
जीवन-नैया जो पार करे, वो और सहारा कोई नही
स्वार्थ की है सारी दुनिया, हम ने जग सारा छान लिया
इक महामन्त्र नवकार बिना, हमदर्द हमारा कोई नही
नवकार सदा सुखकारी है, गुण इक सौ आठ का धारी है
इस मन्त्र से 'चन्दन' अति रोशन, रविचन्द्र-सितारा कोई नही

रामा मण्डी २००६ चैत्रसुदी

## ३३—रेखा कर्मों की

रेखा कर्मों की, मिटती नही मिटाई
राम-लखन दो राज दुलारे, बन को गद्दी छोड सिधारे
संग जनक की जाई
पाण्डव वीर महा बलधारी, साथ द्रोपदी राज दुलारी
विपदा वन मे आई
रावण की तुम सुनो कहानी, चोरी करके राघव-राणी
गया नर्क अन्यायी
हरिश्चन्द्र, रोहित और तारा, काशी बिका सकल परिवारा
विपदा बडो उठाई

कोचक ने क्या कष्ट उठाए,सुनकर जिनको दिल डर जाए
मौत मरा बे आई
कर्म की लीला'चन्दन'न्यारी,बचे नही इस से बलधारी
चली न कुछ चतुराई...
सिरसा
१९९४ माघ

## ३४—जल्दी—जल्दी

तू आगे कदम अब बढा जल्दी—जल्दी
जो करना है करके दिखा जल्दी—जल्दी
इधर तुझ को घेरा है ख्वाबे गिरां ने
उधर है रही मौत आ जल्दी—जल्दी
ये जीवन की घडिया बहुत कीमती है
जो इन मे बने वह बना जल्दी—जल्दी
गलत है ये कहना "बुढापे के अन्दर
मै पहुचू गा मजिल पे जा जल्दी—जल्दी
हुए पहलवा भी हुए नौजवा भी
सफर जिनने आखिर किया जल्दी—जल्दी
जो होना है सनसार से पार 'चन्दन'
प्रभु-नाम की रट लगा जल्दी—जल्दी
रामा मण्डी
१९९६ चातुर्मास

## ३५—बहुत प्यारा

तर्ज—ओ दूर जाने वाले .

सारे जहा मे अच्छा, जिन-धर्म है हमारा
जानो जिगर से हमको.लगताहै बहुत प्यारा
शान्ति-दया का सागर,सारे गुणो का आगर
त्रिभुवन मे उजागर, दुखियो का है सहारा
उत्तम अहिसा इस की, मशहूर है जो सारे
पाई न और कही भी,जग हमने छान मारा
दुनिया का ये उद्धारक,सत्यज्ञान का प्रचारक
सीधा बता के मार्ग,लाखो को इस ने तारा
कर्मो का जाल जिस मे चेतन फसा हुआ है
छिन मे उडा दे उस को,करके यह पारा-पारा
यज्ञो की हिसा इसने, इकदम मिटाके सारी
भारत बना दिया है जन्नत निशा हमारा
पलटी न किस की काया, इसकी शरण मे आ कर
गौतम से पण्डितो का, इस ने सदेह निवारा
बरबाद बस्तियो को, आबाद करने वाला
जिन धर्म है ये सच्चा, 'चन्दनमुनि' पुकारा

जैतो मण्डी
१९९७ ज्येष्ठ

## ३६—मुक्त—नगरिया

चल तू मुक्त नगरिया तेरी
पल-पल करके आयु बीते, काहे करता देरी
चल तू मुक्त नगरिया तेरी

मोह-माया के जाल बिछे है, उलझ कही न जाना
कदम-कदम पर खड्डे आगे, बच-बच पाव टिकाना
छाई रैन अन्धेरी, चल तू

राग-द्वेप मग बीच लुटेरे, बैठे घात लगाए
काम-कपट है इन के साथी, विरला ही बच पाए
देते है चक फेरी, चल तू .

मन को जीत मिटे सब चिन्ता, रहे न कोई बन्धन
अद्भुत आतमज्योति जगाले, जग मग-जग मग'चन्दन'
तन माटी की ढेरी,चल तू

## ३७—धर्म — महिमा

तर्ज—कनका दीया फसला

दिल जिस दे धर्म ए वसदा ए, वाह जी ! वाह, वाह वन्दया!
दुख-कष्ट ओस दा नसदा ए
दया धर्म से प्रीत जो लादा ए, सुख स्वर्गा दे विच पादा ए
नरमर के ओ पछतादा ए, विच पाप दे जो कि धसदा ए
जेहडा आदमी धर्म कमादा ए, नही मरने तो घवरादा ए
जदो काल कूकदा आदा ए, ओ खिड-खिड पया हसदा ए

जेहडा घुट सबर दी भरदा ए, आनन्द पुरुष ओ करदा ए
बिन आई मौत ही मरदा ए,जोह्नू सर्प लोभ दा डसदा ए
जेहडे पापी पाप कमादे ने, मर नर्का दे बिच जादे ने
दया धर्मी ही सुख पादे ने, 'मुनि चन्दन' सच ए दसदा ए

जेजो
१९९९ चातुर्मास

## ३८—सीखो

तर्ज—नदी किनारे बैठ के आवो

वीर प्रभु से सीखो प्यारो। जग मे धर्म फैलाना
हिसक यज्ञ मिटाकर इकदम, भारत स्वर्ग बनाना
गजसुकुमाल मुनि से सीखो, गुस्से को पी जाना
सर पर आग टिकाई सोमल, रज जरा नही माना
मेघ कवर से सीखो भाइयो। दु ख सह जीव बचाना
'धर्म रुचि' से धर्म पे सीखो, हस-हस प्राण गवाना
नेमनाथ भगवान से सीखो, करुणा-नदी बहाना
जीव दया हित तजकर शादी, जगल किया ठिकाना
जम्बू कवर यति से सीखो, मिलते सुख ठुकराना
बन कर त्यागी निश्चल-सच्चे, मुक्ति के सुख पाना
सजय भूप से सीखो 'चन्दन' पा सगत तर जाना
शरण गुरु की लेकर अपना, जीवन सफल बनाना

रामा मण्डी
२००१ ज्येष्ठ

## ३९—जो कुछ बने बना

तर्ज—पी वे ढोला पी

ध्या तू सज्जना ! ध्या, नाम प्रभु दा ध्या
नाम प्रभु दा रटदा जा, पापा तो तू हटदा जा
जीवन सफल बना
धर्म दे भर-भर प्याले तू, पीकर प्यास बुझाले तू
प्रेम मिठाई खा
दुखिया दी तू सेवा कर, पार जगत तो खेवा कर
सेवा - साज़ सजा
झुठी जग दी माया ए, दिल नू क्यो उलझाया ए
मोह-ममता दूर हटा
खुदी नू दूर हटा करके, कर्मा ते काबू पा करके
बन जा आप खुदा
तन ए 'चन्दन' फानी ए, दो दिन दी महमानी ए
जो कुछ बने बना

जेजो ११९९ चातुर्मास

## ४०—गाफ़ला

तर्ज़—जगया

तेरा साथ धर्म ने देना, कि धन नही नाल जाउगा
गाफला ! -गाफला !
कि इक दिन टुर जावना, लद्द काफला

होया मस्त जगत विच आके, कि ध्यान नही अग्गे जान दा
तैनू पाप है प्यारे लगदे, कि नाम कौडा भगवान दा .
तेरी उमर बीतदी जादी, कि काहनू पया लम्बी तान के
कर नेक अमल जग अन्दर, बदी नू बखेडा जान के
कर सन्त जना दी सगत, कि जिन्हा सारा जग तारया
पऊ अन्त समय पछ्ताना, कि जन्म जे ऐवे हारया .
नही साथ कुटम्ब ने देना, कि बगले भी पए रहनगे
कर नेक कमाई 'चन्दन,' नही ता बखेडे पैणगे

मानसा
२००४ माघ शुकला १०

## ४१—पाप का झरना

बन भक्त सही भगवान का, जो चाहे बन्दे ! तरना .
नित गीत धर्म के गाता है, ले माला भी हट जाता है
पर, बाज न छल से आता है,क्या काम है ये इनसान का-
कुछ गौर तो इस पे करना .
नई चीज मे डाल पुरानी, है करता तू बेईवानी
रहा बेच दूध मे पानी, लिया रूप धार अनजान का-
बह रहा पाप का झरना .
दिन-रात असत्य तू बोले, दिन-रात तू कमती तोले
यो अमृत मे विष घोले, नही ध्यान अभय के दानका-
गया भूल है इक दिन मरना .

खसखास का तेल निकाले, बादाम-रोगन मे डाले
तू चले ठग्ग की चाले, ये पेशा बेईमान का-
है नही उचित आचरना

जप 'महामन्त्र' की माला, हो जीवन शुद्ध निराला
पी धर्म-प्रेम का प्याला, मिले जो सुख निर्वाण का-
ले दया धर्म का शरणा

ये जिनवर की हे वाणी, विन अमल तरे न प्राणी
'चन्दन' मत वन अभिमानी, कर दूर नशा अज्ञान का-
जो कष्ट पडे न भरना

वरेटा मण्डी
२००४ फाल्गुण शुकला १०

## ८२—मानव से

नर्ज—बालम आन वसो मोरे मन मे

काहे न सोच वसे तोरे मन मे

नर-तन पाया धर्म भुलाया, आकर जग मे पाप कमाया
हीरा जीवन मुफत गवाया, खान-पान खेलन मे

दीन-दुखी का दु ख न टारा, वही न दिल मे दया की धारा
जीवन बाजी आप ही हारा, मस्त हुआ छन-छन मे

जीवन अब भी निर्मल करले, वीर-वचन निज मन मे धरले
'चन्दन' जग मे पार उतरले, धर्म वसा जीवन मे

बलाचौर २००० मगसिर

## ४३—श्रावक के बारह व्रत

तर्ज—नदी किनारे बैठ के

जैन धर्म है सारे जग मे, प्यारा धर्म पुराना
इस के बारह ब्रतो पे चल, जीवन सफल बनाना
निर अपराधी किसी जीव को, हरगिज नही सताना
स्थूल अहिसा ब्रत पे चलना, गृहस्थ धर्म है माना
मोटा झूठ न कहना मुख से, वस्तु नही चुराना
स्वपत्नी-सतोष धार मन, दृढता सहित निभाना
लेना कर मर्यादा, धन की, लालच नही बढाना
पाच अनुब्रत गेही के ये, कहे है ध्यान लगाना
छ दिशा की सीमा करके, आगे कभी न जाना
कर्मादान, अनर्थादण्ड से, अपना आप बचाना
सदा सामायिक, सम्बर, पौषद, करना और कराना
निज हाथो से त्यागी गुरू को, भोजन भी बहराना
सुन कर रोज गुरू की वाणी, प्रेम से दर्शन पाना
महामन्त्र नवकार की माला, एक तो रोज फिराना
रहना दृढ धर्म पे 'चन्दन' गीत प्रभु के गाना
बारम्बार मनुष्य का चोला, नही हाथ ये आना

फरीदकोट
२००५ आषाढ कृष्णा ५

## ४४—हीरा जनम

तर्ज—वालो .

वडा धर्म अहिसा है
जिस दे मन वसदा, करे जग प्रशसा है
महावीर ने दसया है
क्रोध दा त्याग करो, एइयो भारी तपस्या है
जीवन नू सुधारो जी
पापा दे विच फस के, हीरा जन्म न हारो जी
सग धर्म ही जादा है,
नर जेहडा नित करदा, शोभा जग विच पादा है
गोरे रग ते जवानी दा
मान न कर वन्दया ! रूप वुलवुला पानी दा
केहडा मुड-मुड आना है
नेकिया कमा सज्जना ! की जग चो लैजाना है
छड्ड झगडे-लडाइया नू
नेक पुरुप तू वन, कर सुलह-सफाइया नू
'चन्दन' ए सुनादा है
धर्मी पुरुप सदा, पया हसदा-हसांदा है

ऊना
१९१९ मगसिर

## ४५—नमस्कार मन्त्र

नमस्कार मन्त्र-नमस्कार मन्त्र

जो अरिहत देवो ने अफजल किया है
जो शक्ति मे सब मन्त्रो से बडा है
महामन्त्र ऐसा भला कौनसा है ?
जो मुर्दो मे रूह डालने की दवा है ?

नमस्कार मन्त्र-नमस्कार मन्त्र

ये इक नातवा का यकीनन सहारा
दिखाने को रस्ता ये चमका सितारा
क्रोडों को जिसने बेतरनी से तारा
जो पूछे कोई साफ करदू इशारा

नमस्कार मन्त्र-नमस्कार मन्त्र

द्रौपद पे जिसदम कि सकट पडा था
सुदर्शन भी सूली पे जबकि चढा था
प्रभव चोर जम्बू के घर जब घुसा था
हुआ जो सहायक उन्हे तब वो क्या था ?

नमस्कार मन्त्र-नमस्कार मन्त्र

वो क्या है जिसे रोज जपते मुनि जन ?
वो क्या है जिसे रोज़ भजते गुणि जन ?
वो क्या है हृदय जिससे होता है पावन ?
सुनो ध्यान धरके ये कहता है 'चन्दन'

नमस्कार मन्त्र-नमस्कार मन्त्र

## ४६—देखे क्या

तर्ज—पछी जा

वन्दे ! गा

वीर प्रभु-गुण प्रेम से गाले, जीवन जाए चला

वन्दे ! गा

तू सोया, ये बीत गई, क्या ? तेरी जिन्दगानी
आख खुली लेते अँगडाई, देखी मौत दीवानी

बोली आ .

ओ गाफिल ! तू चेत जरा, न खो ये सास प्यारे
बीत गए गर मिल नही ये, 'चन्दनमुनि' पुकारे

देखे क्या

जीरा २००१ चातुर्मास

## ४७—गाऊँ

गाऊँ——प्रभु-गुण गाऊँ

दुनिया को बिसारू, उसी को चितारू
चलू, सोऊ जागू पल-पल मे पुकारू

प्रीत उसी से लगाऊ

दुनिया का नजारा, अनित्य है ये सारा
फसा बन जो मूर्ख, रुला वह बेचारा

न 'चन्दन' रुलु-रुलाऊ

रामा मण्डी २००३ असाढ

## ४८–काहे मुस्काए

मन ! काहे मुस्काए ? ...

यौवन पे इतरा, मत तू पाप कमा
उड छनक मे जाए

कलिया खिलती देख, रज मे मिलती देख
बुलबुल नीर बहाए

बहता पानी देख, ये जिन्दगानी देख
जा, कभी न आए ..

गीत प्रभु के गा, जीवन सफल बना
'चन्दन' समझाए .

## ४९–एक सहारा तेरा

तर्ज़—एक सहारा तेरा प्रभु जी !

एक सहारा तेरा गुरुवर ! एक सहारा तेरा,
ज्ञान की जोत जगाकर जग-मग, करदो दूर अन्धेरा

नाव तुम्ही, पतवार तुम्ही हो, पार उतारन हार तुम्ही हो
तुम न बनो तो कौन बने फिर, और सहायक मेरा

द्विपद-पशु को मानव करना, काम तुम्हारा 'चन्दन'
कनक, कामिनी के तुम त्यागी, करे तुम्हे जग वन्दन
दास जानकर जल्दी मेटो, जन्म-मरण का फेरा

सिरसा
२००४ चातुर्मास

## ४६–देखे क्या

तर्ज—पछी जा

वन्दे ! गा . . .

वीर प्रभु-गुण प्रेम से गाले, जीवन जाए चला . .

वन्दे ! गा

तू सोया, ये बीत गई, क्या ? तेरी जिन्दगानी

आख खुली लेते अँगडाई, देखी मौत दीवानी

बोली आ . .

ओ गाफिल ! तू चेत जरा, न खो ये सास प्यारे

बीत गए गर मिल नही ये, 'चन्दनमुनि' पुकारे

देखे क्या .

जीरा २००१ चातुर्मास

## ४७–गाऊँ

गाऊँ—प्रभु-गुण गाऊँ

दुनिया को विसारू, उसी को चितारू

चलू, सोऊ जागू पल-पल मे पुकारू

प्रीत उसी से लगाऊ

दुनिया का नजारा, अनित्य है ये सारा

फसा वन जो मूर्ख, रुला वह बेचारा

न 'चन्दन' रुलु-रुलाऊ

रामा मण्डी २००३ असाढ

## ४८–काहे मुस्काए

मन ! काहे मुस्काए ? ..

यौवन पे इतरा, मत तू पाप कमा

उड छनक मे जाए

कलिया खिलती देख, रज मे मिलती देख

बुलबुल नीर बहाए .

बहता पानी देख, ये जिन्दगानी देख

जा, कभी न आए .

गीत प्रभु के गा, जीवन सफल बना

'चन्दन' समझाए . .

## ४९–एक सहारा तेरा

तर्ज—एक सहारा तेरा प्रभु जी !

एक सहारा तेरा गुरुवर ! एक सहारा तेरा,

ज्ञान की जोत जगाकर जग-मग, करदो दूर अन्धेरा

नाव तुम्ही, पतवार तुम्ही हो, पार उतारन हार तुम्ही हो

तुम न बनो तो कौन बने फिर, और सहायक मेरा

द्विपद-पशु को मानव करना, काम तुम्हारा 'चन्दन'

कनक, कामिनी के तुम त्यागी, करे तुम्हे जग वन्दन

दास जानकर जल्दी मेटो, जन्म-मरण का फेरा

सिरसा

२००४ चातुर्मास

## ५०–जीवन है दिन चार

बन्दे ! जीवन है दिन चार

काम, क्रोध, छल, मान मिटाकर, मन लोभी अपना समझाकर
ढूँढ धर्म का सार

राग-रंग पर हो दीवाना, भूल गया तू मुक्त ठिकाना
डूब रहा मझधार

मन तेरे कई किले बनाए, बने बनाए किस्मत ढाए
होवे फिर बेजार

मोह-माया ने जाल बिछाया, छल का दाना बीच टिकाया
हुआ पुरुष शिकार

जो मुक्ति की चाह घनेरी, छोड अय 'चन्दन' तेरी-मेरी
कह गए 'वीर' पुकार.

सिरसा
२००४ चातुर्मास

## ५१–गाफिल से

तर्ज—माही नी मेरा गुस्से-गुस्से

तैनू सुत्तया जाग न आई, ओ गाफिल बन्दे-बन्दे !
वडी तेरे ते गफलत छाई, अख अजे न खुलने पाई
सौ-सौ के उमर विताई

नाल धर्म दे लालै प्रीती, मत हार तू वाजी जीती
कुछ कर लै नेक कमाई

बिच माया मन उलझा के, क्यो बैठा धर्म भुला के
नही सग चले इक पाई
प्रभु-चरण विच ध्यान लगालै, नर-जन्म दा लाभ उठालै
गल्ल 'चन्दन' ठीक सुनाई .

नवाशहर
२००० चातुर्मास

## ५२—जैन वीर

तर्ज—यहां बदला वफा का

धर्म के नाम पे मिटते है और जो सर कटाते है
जगत मे देख लो झण्डे, झुलाए उनके जाते है
सुदर्शन सेठ ने सूली, सिहासन थी बना डाली
जो सच्चे वीर है सत धर्म का वे बल दिखाते है
धर्म के नाम पर खदकमुनि ने जान तक दे दी
उन्हे छोटे-बडे देखो अदब से सर झुकाते है
दया धारी धर्मरुचि ने, मिटाई धर्म पर हस्ति
हुए चरणो पे सुर शैदा, खुशी हो जय बुलाते है
किया निज मास जो अर्पण, कबूतर के बचाने को
इसी लिए मेघरथ की आज तक जय-जय मनाते है
क्षमा के बल से गजसुकुमाल मुक्ति पा गए देखो
फसाने जैन वीरो के, 'मुनिचन्दन' सुनाते हैं

जैनेन्द्र गुरुकुल पचकूला
अप्रैल १९४२

## ५३—तर जायेगे

तर्ज—दिलदार कमन्दा वाले दा

महावीर के हम दीवाने है, महावीर से प्रेम बढायेगे
पहावीर पवित्र नाम ये रट, भव सागर से तर जायेंगे
दो छोड हसद, छल, कीने को, लो शुद्ध वना जिन सीने को
सदेश तेरा अय वीर प्रभु ! घर-घर मे हम पहुचायेंगे
है धर्म अहिसा प्राणी का, है सार यही जिनवाणी का
भवजल से पार वे उतरेंगे, दिल मे जो इसे बसायेंगे
जो हिसा के मतवाले है, सव जिन के तौर निराले हैं
ख्वाह गोरे है या काले है, सब अन्त समय पछतायेंगे
गर पूछो तुम 'मुनि चन्दन' से, वो साफ कहेगा ये मन से
इक दया धर्म के पालन से, नर जीवन सफल बनायगे

मोगा २००० चैत्र,

## ५४—रैन बसेरा

वन्दे ! दुनिया रैन वसेरा
चार दिनन की चमक-चादनी, अन्त अन्धेर-अन्धेरा
जीवन क्या है? एक तमाशा, झूठी माया-झूठा आशा
झूठे जग को कहे है अपना, मूर्ख मोह ने घेरा
दया धर्म से प्रीत लगाले, गीत प्रभु श्री वीर के गाले
सफल वनाले जीवन 'चन्दन' त्याग दे मेरा-तेरा

जैनेन्द्र गुरुकुल पचकूला
२००३ चातुर्मास

## [illegible]—अरे नर दीवाने

तर्ज—[illegible]

अरे नर दीवाने! क्यो तू जन्म गंवाए
कि आयु जाती है, वापिस न फिर आए
बदी न कर तू तिल भर प्यारे! प्राण न औरो के हर प्यारे!
सुनले कान लगाए
परम पिता का सुमरन करले, भवसागर से पार उतरले
बीता वक्त न आए
हार अरे! मत बाजी जीती, दया-धर्म से कर तू प्रीति
कर्म-कडी कट जाए
वीर प्रभु ये वचन उचारा, धर्म ही पार उतारन हारा
'चन्दन मुनि' सुनाए

जीरा
२००१ चातुर्मास

## ५६—हटा दे हैरानी

तर्ज पिया मिलन को जाना

जीया! जगत है फानी
भक्ति की जोत, करले उद्योत, अगर मुक्ति पानी

दुनिया मे आए जो
आखिर सिधाए वो
बूढे-जवान, राजा-दीवान, गए सारे प्राणी
हृदय सवार के
पाप बिसार के
प्रभु का ध्यान, करले नादान! हटादे हैरानी

## ५९—असर से

तर्ज—तू कौन सी वदली मे मेरे चाद

तू कौन सी निद्रा मे वशर ! आता नजर है
जाँखे तो मसल देख कहाँ तेरा नगर है
ये कीमती घडिया है उमर की अरे नादा !
सुनता ही नही है तू तेरा ध्यान किधर है
पत्थर भी पिघल जाते है सुन 'वीर' की वाणी
न जाने तेरा सख्त ये क्यो इतना जिगर है
उस राह से लाखो ने गति नर्क है पाई
जिस राह से दिन रात तेरा होता गुजर है
दुनिया की भलाई मे तू जीवन को बिता दे
वस स्वर्ग के पाने का यही एक हुनर है
इक वार गुरु-शरण मे गर आए तू 'चन्दन'
तू खुद ही कहेगा कि यहा जादू का असर है

## ६०—रटा है-जपा है

वशर जो धर्म पे मरा है-मिटा है
अमर वो जगत मे हुआ है-वना है
वजुर्गो के है याद सब कारनामे
परदेसी का किस्सा पढा है-सुना है
सुदर्शन ने सूली वनाई सिहासन
तुरत भूप आ कर नमा है-झुका है

वो ही दर हकीकत है फातह जहा का

जो मन के मुकाबिल अडा है-लडा है

बुराई के बदले भलाई करो तुम

इसी मे तुम्हारी दया है--भला है

मिटाई खुदी जिसने है खुद को पाकर

हकीकत मे वो ही बडा है-खुदा है

कटे उसके बन्धन ये कहता है 'चन्दन'

प्रभु--नाम जिस ने रटा है-जपा है

कसौली

अप्रैल १९४२

## ६१--बन के नवाब बन्दे

तर्ज़--प्रभु दे दुआरे उत्ते

चोला इनसान वाला, समझ नायाब बन्दे।

मिलया है बहुत औखा, कर न ख़राब बन्दे।

भजन भगवान कर लै, अपना कल्याण करलै

हस्ति क्यो भुल्या अपनी, बन के नवाब बन्दे।

जीवा नू कट-कट खावे, दीना ते छुरी चलावे

करना पवेगा अग्गे, जाकर हिसाब बन्दे।

छड्ड दे तूँ पाप करना, सिख लै इनसाफ करना

धर्म-अहिसा वाली, पढ लै किताब बन्दे।

जद भी जबान खोले, मिश्री जेही वाणी बोले
देना किसे नू नइयो सख्त, जवाब वन्दे ।
सच्चा इनसान बन जा, भक्त भगवान बन जा
जग नू महका दे बन कर, 'चन्दन' गुलाब बन्दे !

भटिण्डा
२००१ वैसाख

## ६२—सच्ची पूजा

तर्ज़—कभी सुख है कभी दुख है

बना के शुद्ध मन-मन्दिर, तुम्हे उस मे बिठाता हू
मै मस्ती मे प्रभु ! मेरे, तेरी पूजा रचाता हूँ
जलाऊँ मैं नही दीपक, मरे जिस पर कि परवाने
अहिसक हूँ मै उज्ज्वल ज्ञान का दीपक जलाता हूँ
तुम्हारे नाम से तोडू जो सब्जी पाप लगता है
इसी कारण मै तुम पर प्रेम-पुष्पो को चढाता हूँ
जलाऊँ आग गर हिसा, भरी उस मे महा भारी
अनूप ध्यान धूप मै, अत करता-कराता हूँ
बजाऊँ शख या ताली, तो सूक्ष्म जीव मरते है
बजा कर हुकम मै तेरा, खुशी के गीत गाता हूँ
तेरी अमृत-भरी वाणी मे अहिसा रूप शर्बत है
जिसे मै प्रेम से स्वामी ! सदा पीता-पिलाता हूँ

अमूर्त जब है तू भगवन्! लगाऊ फिर कहा 'चन्दन'
जो पाता हूँ कही तुम को, तो अपने दिल मे पाता हूँ

फरीदकोट

१९९७ चतुर्मास

## ६३—महावीर जी प्रभु

प्रभु-प्रभु-प्रभु, महावीर जी प्रभु

कौन स्वर्ग को तज कर आया, हमे बचाने दुख से ?
जन्मा कौन सिद्धार्थ के घर, त्रिशला जी की कुख से ?

प्रभु-प्रभु-प्रभु, महावीर जी प्रभु

दुनिया के हित छोड सिहासन, बन मे कौन सिधाया ?
कौन था जिसने पाकर 'केवलज्ञान' जगत समझाया ?

प्रभु-प्रभु-प्रभु, महावीर जी प्रभु

हिसक यज्ञ मिटाकर जग को, स्वर्ग-समान बनाया ?
कौन था जिस ने मधुर दया का जग, को पाठ पढाया ?

प्रभु-प्रभु-प्रभु, महावीर जी प्रभु

ऊच नीच का भेद मिटा कर, नफरत किसने त्यागी ?
कौन था जिसकी शरण मे आकर, सोई दुनिया जागी ?

प्रभु-प्रभु-प्रभु, महावीर जी प्रभु...

वक्त पडे पर कौन बना था, दीन-दुखी का वाली ?
कौन था जिसकी याद मे 'चन्दन' चला त्योहार दीवाली ?

प्रभु-प्रभु-प्रभु, महावीर जी प्रभु

## ६४—वही तो धर्म करता है

तर्ज—कभी सुख है कभी दुख है

उदय शुभ कर्म हो जिसके, वही तो धर्म करता है
जो वारे धर्म पर जीवन, जगत-सिन्धु से तरता है
फसा विपयो मे क्यो मूरख ! नतीजा देख ले जग मे
पशु कैसे बुरीगत मे, जन्मता और मरता है
नही तकदीर मे जिस के, सुखी परलोक मे होना
सामायिक ग्रौर माला से, नियम-व्रतो से डरता है
सुने वाणी न सन्तो की, न सत्सग मे कभी वैठे
ग्रन्धेरा उस के जीवन का, उसे ही ख्वार करता है
प्रभु के नाम से 'चन्दन' है चिढ इनसान पापी को
मगर वह नर्क के पथ पर, खुशी से पाव धरता है

अहियापुर
२००७ प्र० आपाढ शुक्ला ८

## ६५—धर्म के परवाने

तर्ज—ये भोला वालम क्या जाने .

ये सारा दुनिया ही जाने...

क्यो वीर जगत मे आए थे ? क्यो हिसक यज्ञ मिटाए थे ?
क्यो कष्ट अनेक उठाए थे, क्यो दया के गाए थे गाने .
क्यो नम्र ताज ठुकराया था, क्यो वन को कदम वढाया था
क्यो भोजन तक विसराया था, क्यो उपवास किया मनमाने.

क्यो दुख मे भी खुश होते थे, क्यो देख दुखी को रोते थे
क्यो कभी न 'चदन' सोते थे, क्यो बने धर्म के परवाने

फरीदकोट
२००२ चातुर्मास

## ६६—अहिन्सा परमो धर्मः

तर्ज- -कनका दिया फसला

महावीर ने करुणा कीती ए, अहा जी, अहा, नन्द त्रिशला
एइयो जैन धर्म दी रीति ए

हुआ 'मेघरथ राजा' भारी सी, जिन्द ओस धर्म पर वारी सी
हुए शान्ति नाथ अवतारी सी, सब मिट गई ईति-भीति ए

जोगी कमठ नू जौहर दिखाए सी, दो वलदे सर्प बचाए सी
'प्रभु पार्श्व' दया मन लाए सी, कीती जग तो दूर कुरीति ए.

दयासागर 'नेम' प्यारे सी, वन्ध पशुआ दे कट डारे सी
हुए जीव सुखी ओ सारे सी, ओहना जगल दी राह लीती ए

दया पार पुरुष नू करदी ए, दया धन दे कोठे भरदी ए
जेहडा पुरुष दुखी दा दर्दी ए, बस उसने बाजी जीती ए...

जो मरदे जीव बचादा ए, ओइयो धर्मी पुरुष कहादा ए
'मुनि चन्दन' भजन सुनादा ए, एइयो धर्म ते-एइयो नीति ए

बलाचौर
१९९९ आषाढ

## ६७—बशर से

तर्ज़—दर्द दिल

अय बशर ! करले भजन भगवान का

मिल गया तुझको जनम इन्सान का...

लख चौरासी मे तू रुलता रहा

कष्ट-चिन्ता मे तू घुलता रहा

राह मुश्किल से मिला कल्याण का

मुल्क जो मुल्के अदम मशहूर है

है सफर मुश्किल व मजिल दूर है

फिकर कर कुछ राह के सामान का

जिस समय सर मौत तेरे छाएगी

लाख यत्नो से न टाली जाएगी

कौल है मशहूर ये लुकमान का

रूप पर नादा ! रहा क्या फूल है

एक दिन इसने तो होना धूल है

ऐठता क्यो खाके बीडा पान का

जीव-रक्षा मे लगा दे प्राण तू

बन अभय दानी अरे इन्सान ! तू

राह है 'चन्दन' यही निर्वाण का..

सिरमा

१९९५ ज्येष्ठ

## ६८—हीरा जनम

तर्ज—बालो

बडा धर्म अहिसा है
जिसदे मन वसदा, करे जग प्रशसा है
महावीर ने दसया है
क्रोध दा त्याग करो,एइयो भारी तपस्या है
जीवन नू सुधारो जी ।
पापा दे विच फस के, हीरा जन्म न हारो जो ।
सग धर्म ही जादा है
नर जेहडा नित करदा, शोभा जग बिच पादा है
गोरे रग ते जवानी दा
मान न कर बन्दया ! रूप बुलबुला पानी दा
केहडा मुड-मुड आना है
नेकिया कमा सज्जना ! को जग चो लैजाना है
छड्ड झगडे-लडाइया नू
नेक पुरुष तू बन, कर सुलह-सफाइया नू
'चन्दन' ए सुनादा है
धर्मी पुरुष सदा, पया हसदा-हसादा ए

ऊना
१९९९ मगसिर

## ६९—जन जवाना

तर्ज—गम दिए मुस्तकिल...

क्यो तू सोया पडा, सूर्य कितना चढा
नौजवाना ! जाग तू भी, है जागा जमाना

जैन-जाति तुझे, है बुलाती तुझे
आजजाना, जाग तू भी है जागा जमाना

ऐश मे ध्यान अपना लगाया
पैसा फैशन मे तूने लुटाया

धर्म हित के लिए, काम क्या-क्या किए
'कुछ बताना, जाग तू भी है जागा जमाना

क्यो है धीमी तेरे दिल की हरकत
क्यो न दिल मे तेरे धर्म-उल्फत

वीरस्वामी का त, मुक्त गामी का तू
सुन अफसाना, 'जाग तूभी है जागा जमाना

बन के 'भामा' सा दानी दिखा दे
जैन-जाति को ऊँचा उठा दे

कहता 'चन्दन मुनि' बन जा प्यारे ! गुणी
सुनके गाना, जाग तू भी है जागा जमाना

फरीदाबाद
२००५ ज्येष्ठ शुक्ला ५
गीतों की दुनिया

## ७०—धर्मी जीवदया

प्रभु नाम मुख बोल, धर्मी जीवदया । .

प्रभु नाम दा अमृतप्याला, पी लै बनके किस्मत वाला
वृथा जन्म मत रोल .

महामन्त्र नवकार नूं पढके, प्रभु नाम दी नाव पे चढके
हो जा पार अडोल

जा भावे तू मस्जिद-मन्दिर, तेरा साहब तेरे अन्दर
दिल बिच अपने टोल ..

तज कर हिसा, भूठ, लडाई, निशदिन कर तू नेक कमाई
मिला जन्म अनमोल

जगह-जगह क्यो ठोकर खावे, फू क-फू क जे कदम टिकावे
वात कहे जे तोल .

देख पदार्थ दृश्य निराले, मत कर मन को ऐश हवाले
हो न डावा डोल .

नफरत दूर हटा कर सारी, 'चन्दन' बन तू प्रेम-पुजारी
मन-मन्दिर पट खोल .

रोडी २००३ पौष

## ७१—मतलव के संसारी

है धर्म एक सुखकारी, तुम धर्म करो नर-नारी ।

किए पुण्य मिली नर-काया, अवसर और अनुपम पाया
मिले न वारम्वारी...

## ७३—तरनें वाले

तर्ज़—गम दिये मुस्तकिल

प्यारे प्राणी ! तू सुन, 'वीर-वाणी' तू सुन
धर्म कमाले, जीवन अपना आदर्श बनाले
पाया मानव-जनम, भूला अच्छे करम-
जाने वाले ! जीवन अपना आदर्श बनाले

नेमीनाथ जिनेश्वर सा त्यागी
वनजा जम्बू यति सा वैरागी
तोड़ कर जाल को, जो गए मुक्त हो
तरने वाले, जीवन अपना आदर्श बनाले

तारा, रोहित, हरिचन्द दानी
तारी चन्दना सती-सीता राणी
प्यारी उनकी कथा, अपने दिल मे बसा
दिल दीपाले, जीवन अपना आदर्श बनाले

'वीर स्वामी' बनो मे गये थे
धर्म की खातिर बडे दुख सहे थे
तुझको 'चन्दन' कहे आगे, उस वीर के
सर झुकाले, जीवन अपना आदर्श बनाले

जीरा
२००५ चातुर्मास

धर्म बिना यह जीवन फीका, धर्म बिना है कौन किसी का
मतलब के सनसारी
सेठ सुदर्शन, चन्दनबाला, सहकर कष्ट धर्म को पाला
पहुँची मुक्त सवारी
अन्त समय जब सिर पर आए, धर्म सिवा कुछ सग न जाए
वाणी 'वीर' उचारी
दया से कर २ प्रीत ऐ प्यारो ।
'चन्दन' लो अब जीत ऐ प्यारो ।
जीवन-वाजी हारी .

जैनेन्द्र गुरुकुल पचकूला
२००३ चातुर्मास

## ७२—वीरता संचार दे

तर्ज—मेरे लिए जहान मे

सोया पडा जवान ! क्यो नीद को विसार दे
विगडी दशा जहान की, वलवीर वन सुधार दे
आलस यहा अपार है, दिल जिससे धुआ धार है
देरी लगा न तू जरा, शीघ्र इसे निवार दे
शेरे ववर सा दिल वना, जुलमो सितम को दे मिटा
वीरो की गा के वीरता, वीरता सचार दे
डका वजा दे जैन का, घर-घर फैला दे तू दया
वेडा भवर मे है फसा, 'चन्दन' इसे उभार दे

## ७३—तरनें वाले

तर्ज—गम दिये मुस्तकिल

प्यारे प्राणी ! तू सुन, 'वीर-वाणी' तू सुन
धर्म कमाले, जीवन अपना आदर्श बनाले
पाया मानव-जनम, भूला अच्छे करम-
जाने वाले ! जीवन अपना आदर्श बनाले

नेमीनाथ जिनेश्वर सा त्यागी
बनजा जम्बू यति सा वैरागी
तोड़ कर जाल को, जो गए मुक्त हो
तरने वाले, जीवन अपना आदर्श बनाले

तारा, रोहित, हरिचन्द दानी
तारी चन्दना सती-सीता राणी
प्यारी उनकी कथा, अपने दिल मे बसा
दिल दीपाले, जीवन अपना आदर्श बनाले

'वीर स्वामी' बनो मे गये थे
धर्म की खातिर बडे दुख सहे थे
तुझको 'चन्दन' कहे आगे, उस वीर के
सर झुकाले, जीवन अपना आदर्श बनाले

जीरा
२००५ चातुर्मास

## २७९—थोड़ा सा

तर्ज—हमे तो शामे गम मे काटनी है

अरे दुनिया के लोगो ! तुम, करो कल्याण थोडासा
प्रभु का ध्यान थोडासा, प्रभु-गुणगान थोडासा
तमन्ना है जो तरने की, जगत को पार करने की
दुखी का कष्ट हरने की, तरफ दो ध्यान थोडासा
नही क्या पीते-खाते हो, खुशी के गीत गाते हो
भला फिर क्यो भुलाते हो, भजो भगवान थोडासा
रहा रावण का वह सर न, पडा था कस को मरना
नही अच्छा कभी करना, अरे ! अभिमान थोडासा
सरल जो दिल बनाता है, कपट न कुछ कमाता है
यहा सुख-चैन पाता है, वही इनसान थोडासा
हमेशा हिन्सा से डरना, हमेशा दिल दया धरना
कभी भी भूल कर करना, न मदिरा-पान थोडासा
मुनि हो, ब्रह्मचारी हो, धनी हो या भिखारी हो
कोई भी पुरुप-नारी हो, न हो अपमान थोडासा
अगर हो ज्ञान कुछ पाना, अगर हो भाग्य चमकाना
'मुनि चन्दन' का रोजाना, सुनो व्याख्यान थोडासा

बरनाला
२०२३ पौष

# २८०—बन्धुओ

मिला जब जनम है रतन बन्धुओ।
करो कुछ प्रभु का भजन बन्धुओ!
रहेगी न काया-रहेगी न माया
लगाई है जिससे लगन बन्धुओ।
न राजा न राणी-न सेठ सेठानी
किया सब ने जग से गमन बन्धुओ!
'प्रभुवीर' जी का-रघुवीर जी का
ये है हिन्द प्यारा चमन बन्धुओ।
हो ज्यादा से ज्यादा,सरल, सभ्य, सादा
ये भारत के भाई-बहन बन्धुओ।
अमल बिन है थोथी, पढी रोज पोथी
न तरेगा तोता-रटन बन्धुओ।
दया न हया है, कहो पास क्या है
नही मुख मे मीठे वचन बन्धुओ।
इसी मे है शक्ति-यही सच्ची भक्ति
जो उत्तम हो चाल-चलन बन्धुओ।
बना लेना 'चन्दन', पवित्र ये जीवन
ज्यो निर्मल है नीला गगन बन्धुओ।

बरनाला
२०२३ चातुर्मास

## २८१—जंगलांच टोलदा

*तर्ज़—रस्सी उत्ते टंगया*

दिन-रात फिरे प्रभु जगलाच टोलदा
मन दा मकान किन्तु, कदे भी न फोलदा .

भक्ति जे करदा डट के, 'जम्बू कुमार' बागू
बनदा दयालु 'श्री नेम' अवतार बोगू
बेडा न फेर तेरा, सिन्धु विच डोलदा ..

तैनू जे पता अग्गे, पापी ने ख्वार हुन्दे
नर्का दे खुल्ले ओन्हा खातर दुआर हुन्दे
कुफर न फेर ऐथे, भुल्ल भी तोलदा...

मारे जे जीवां ताई, पायगा कष्ट तू भी
होरा नूं नष्ट करके, होवेगा नष्ट तू भी
गज्ज ए ज्ञानी कहन्दे, शब्द ज्यो ढोलदा...

करले भलाई भाई ! 'चन्दन' ए कहन्दा है
पुरुष ओ ऐथे-ओथे, मस्ती बिच रहन्दा है
धर्म हमेश करदा, मधुर जो बोलदा...

बरनाला
२०१ जेठ

खर न जब तू किसलिए खरमस्तिया
खेलती-हसती मिटा न हस्तिया
वास वन का है तुझे जब ना पसन्द
क्यो ', न चन्दन' मिटाए बस्तिया

## २८२—तपस्या

कहो कौन जीवन सफल है बनाती ?
कहो कौन कर्मों के दल को खपाती ?
कहो कौन चक्कर-चौरासी मिटाती ?
कहो कौन मुक्ति के सुख है दिखाती ?
तपस्या-तपस्या, तपस्या-तपस्या

कहो कौन झूला सुखो का झुलाती ?
कहो कौन माता सी ममता दिखाती ?
कहो कौन नर्कों के दुख से बचाती ?
कहो कौन मानव को मानव बनाती ?
तपस्या-तपस्या, तपस्या-तपस्या

कहो कौन कसती कसौटी पे तन को ?
कहो कौन देती महाशान्ति मन को ?
बनाती सफल है जो भक्ति-भजन को ?
कहो कौन ऊचा उठाती सुजन को ?
तपस्या-तपस्या, तपस्या-तपस्या

कहो कौन जग मे है शक्ति का सागर ?
कहो कौन दुनिया मे करती उजागर ?
नही जिससे बढकर ये चन्दा-दिवाकर ?
कहो कौन देती चमक तन सुखाकर ?
तपस्या-तपस्या, तपस्या-तपस्या

## २८३—किस को आता है

तर्ज—यहा दिल का लगाना

यहां लेकर जनम जीवन, बिताना किस को आता है
पुजारी सत्य का बनकर, दिखाना किस को आता है
कमाने के लिए धन तो, कमाता देखो हर जन है
मगर ईमानदारी से, कमाना किसको आता है
मिटाते गैर की हस्ती, हजारो हमने देखें है
अहिंसा-सत्य पर खुद को, मिटाना किस को आता है
अरे ! मनके पे मनका तो, गिराते है बहुत बन्दे
महा चञ्चल मगर मन का, टिकाना किस को आता है
हजारों हमने देखे है मुहब्बत करते मतलब से
बिना मतलब मुहब्बत का, लगाना किसको आता है
खिलाने के लिए छत्ती, पदार्थ भी खिला देते
विदुर बन प्रेम से किन्तु, खिलाना किसको आता हे
गिरा करके गिरी दुख के, गरीबो को रुलाते हैं
मिटा कर कष्ट पर 'चन्दन', हसाना किस को आता है

व र ना ला
२०१८ जेठ

---

नगे जग मे आए थे, लाए न कुछ साथ
'चन्दन' चलते वक्त भी, खाली होगे हाथ

---

# २८४–वीर–सन्देश

तर्ज—गीतिका छन्द

मुस्कराती मूर्ति आनन्द की साकार हो
'वीर' बोले-सुन तू मानव ! किस तरह भव पार हो
अन्धश्रद्धा-अज्ञता की, हो अणु न गन्ध भी
भक्त हो 'आनन्द' सा या, 'मेघ' सा अणगार हो
न कभी डोले इधर तू, न कभी डोले उधर
इष्ट तेरा एक हो और-वह श्री नवकार हो
है यही सुख का खज़ाना, भूल न जाना कभी
दोस्त हो दुश्मन कोई हो, तेरा सब से प्यार हो
शहद से-शर्बत से-शक्कर से-सुधा से हो वचन
जो सुने तेरी प्रशसा के लिये तैयार हो
तू तपस्वी-तू यशस्वी, तू मनस्वी हो वडा
शील पर-सौजन्य पर, सौ जान से वलिहार हो
सरलता-समता पुजारी, तू सदाचारी वने
कस, कीचक की तरह, तुझ मे न मिथ्याचार हो
जान तो जाए भले ही, आन न जाए कभी
तू 'सुदर्शन सेठ'-सेवक, सत्य का शृगार हो
न भरे तू पेट ये अलसेट से दौलत समेट
न्यायोपार्जित शुद्ध तेरा, सर्वथा आहार हो

झूट, छल, धोका, कपट से, पाप से-प्रपञ्च से
और हिसा से भरा, हरगिज न कारोबार हो
नास्तिकता से निकट न दूर का हो वास्ता
तू बने वह आस्तिक जो, आस्तिक-सरदार हो
दूर तू मद्यप-दुराचारी-जुआरी से रहे
इन्द्रिय-मन का विजेता, ज्ञान, गुण-भण्डार हो
न कभी क्षण पर तू भूले,लोक को-परलोक को
धर्म के आलोक से दु ख-शोक का सहार हो
दूसरो के दोप देखे न कभी तू भूल कर
न करे निन्दा-बुराई, न किसी से खार हो
तू रहे बचता हमेशा, राग से और द्वेप से
क्लेश से और क्रोध से, नफरत तुझे सौ बार हो
हो विचारो मे बुलन्दी, हो विकारो पर विजय
उच्च ही आचार हो और उच्च ही व्यवहार हो
न बने तू स्वार्थी, परमार्थी ही बस बने
रात-दिन तुझ से सदा, उपकार हो-उपकार हो
एक दिन बनजाए तेरी, आत्मा-परमात्मा
कर खुदी का खातमा तू खूब ही होश्यार हो
अय'मुनि चन्दन'चले ज्यो, नाव निर्मल नीर मे
तू रहे सनसार मे तुझ मे न पर सनसार हो

बरनाला
२०२३ महावीर जयन्ती

## २८५—रंग नाम रंग चोला

लै रग नाम-रग चोला .

होर रग ता लत्थन जल्दी, लग्गी लीडे नू ज्यो हल्दी
रहे न माशा-तोला .

रग नाम दा किन्तु पक्का, चढे बाद न उतरे डक्का
ए रग बडा अनमोला .

ऐसा होर रग न डिट्ठा, उज्ज्वल-उज्ज्वल चिट्ट-चिट्टा
ज्यो मक्खन दा गोला

जिन्हा नही ए रग रगाया, काल कूकदा जिसदम आया
उड्डे वाग बरोला...

अन्दर दुनिया दी आसक्ति, करदा उत्तो-उत्तो भक्ति
वनया फिरे बिचोला .

बिना नाम न मिलदा नामी, अजर-अमर ओ अन्तर्यामी
तू भुल्लया बनके भोला .

जिन्हा राग-रग है प्यारे, विच चौरासी कर्मा मारे
डोलन वाग हिंडोला...

वडी वनाके लाक्की टोली, रग उछालन-खेलन होली
तू खेल वेरगा होला...

रग रगा कर काला-पीला, रचदा रोज़ नई इक लीला
दुनिया दा ए टोला

'चन्दन' जीवन सफल बनालै, रोम-रोम भगवान बसाल
ए छड्डदे टालमटोला ..

बरनाला
२०२३ मगसिर

## २८६—जरूरत है

तर्ज़=कभी सुख है- कभी दुख है. .

फैलाओ जग मे जिनवाणी, जमाने को जरूरत है
बनो 'महावीर' सम दानी, जमाने को जरूरत है
कहो न भूल वह वाणी, दुखाए दिल-करे हानि
बनो गौतम से तुम ज्ञानी, जमाने को जरूरत है
कि बनकर सयति जिसने, झुकाया सुरपति जिसने
'दशार्ण' से बनो मानी, जमाने को जरूरत है
किसी से द्वेष मत रखना, मधुर रस प्रेम का चखना
सुधर जाए जो जिन्दगानी, जमाने को जरुरत है
सदाचारी, दया धारी, प्रभु के भक्त उपकारी
बनो 'चन्दन' शुकल ध्यानी, जमाने को जरूरत है

फरीदकोट
१९९७ चातुर्मास

---

| ब्रह्मचर्य सा तप नही, अभयदान सा दान |
| 'चन्दन' उत्तम 'वीर' सा, वचन न सत्य समान |

---

# २८७—नारी रत्न

तर्ज़—कभी सुख है कभी दुख है

सचाई-शील पर तन-मन से जो बलिहार हो जाए
सती-मण्डल की वह देवी, न क्यो शृगार हो जाए

जिसे भाती भलाई है, बुरी जिस को बुराई है
जहा भी कदम वह रखदे, वही गुलज़ार हो जाए

कभी भी जब वह बोलेगी, सुधासी मुख मे घोलेगी
कहेगी न वचन तीखा कि जो तलवार हो जाए

कभी सकट मे भी पड कर, तजे न धर्म जो तिल भर
अगर हो आग भी आगे, तो ठण्डी ठार हो जाए

हो पहुची प्रेम की प्यारी, छिमा की छाप हो न्यारी
निराला लौंग लज्जा का, अहिंसा-हार हो जाए

सराही जायगी घर-घर, जो जप का पहनले जम्पर
दया का हो दुपट्टा सरलता सलवार हो जाए

सदा चन्दा सी चमकेगी, सदा सूरज सी दमकेगी
सती राजीमती, सीता से जिसको प्यार हो जाए

करेगी नाम वह रोशन, जमाने मे 'मुनि चन्दन'
जिसे प्राणा से भी प्यारा, श्री नवकार हो जाए

बरनाला
२०२३ चातुर्मास

## २८८—स्नेह—स्मरण

तर्ज—तेरे कूचे मे

मनि श्री प्रेमचन्द्र के, भला गुण कैसे गाऊ मै
दिखाया प्रेम जो सच्चा, उसे कैसे भुलाऊ मै

तपस्वी वाल ब्रह्मचारी, श्रीचन्द्र क्षमा धारी
चरण कमलो पे वलिहारी, उन्हो के रोज जाऊ मै

मुनिवर हेमचन्द्र के, मुनि कस्तूरचन्द्र के
स्नेह-सौजन्य को हृदय की रग-रग मे रमाऊ मै

कविवर कीर्तिचन्द्र जो गीतो के समुद्र है
मधुर स्वभाव सेवा का, कहो कैसे सुनाऊ मै

चमकते जो सितारे है, मुनि उमेश प्यारे है
स्नेही ये हमारे है, भुला हरगिज न पाऊ मै

वडा आराम पहुचाया, वडा ही प्रेम दिखलाया
जो महिमा गा सकू इन की, कहा से शब्द लाऊ मै

वनी जो आज सुखदाई, है सम्वत दो सहस वाई
सुदी मगसिर की द्वादश को, न फूला कुछ समाऊ मै

रहेगा याद ये अच्छा, मधुर स्वभाव सन्तो का
'मुनिचन्दन' अगर कोई, हुई, गलती खिमाऊ मै

सुनहरी और निस्वार्थ, जो सेवा और भक्ति की
श्रीयुत देशराज डाक्टर का गुण दिल मे वसाऊ मै

# २८९—चली है सवारी

सवर्ज़—सब कुछ सीखा हम ने

पल-पल बीते आयु अरे! यह तुम्हारी
धर्म कमालो बन कर, दया के पुजारी

दुर्लभ नर का चोला पाया
पापो मे क्यो मन उलझाया
भारी वह पछताया आखिर
जिसने भी ये लाल लुटाया
हीरे-मोती पाकर, बनो न भिखारी

सन्त सदा ये ज्ञान सुनाते
नेक पुरुष ही मौज उडाते
स्वर्गो मे सुख पाते जाकर
लालच-छल जो दूर हटाते
बेईमानी जैसी, नही है बीमारी

सुन्दर बाग उजडते देखे
यौवन-नशे उतरते देखे
हीरो के सग तुलने वाले
'चन्दन' आहे भरते देखे
खाली हाथो उनकी, चली है सवारी

बरनाला
२०१३ चातुर्मास

## २९०—शेखियां जतौन वालया !

देख दुनिया क्यो होयो दीवाना, दुनिया ते औन वालया ।
ऐथो अन्त अकेले जाना, प्रभु नू भुलौन वालया !
नही लथने गला चो फन्दे, धन्दे गल पौन वालया ।
कम्म छड्डदे कमौने गन्दे, बन्दया कहौन वालया ।
अन्त मिलन जवादिया पिन्नियां, बर्फी उडौन वालया ।
पए रहन रुपैये-गिन्नियां, लखा ही कमौन वालया ।
तैनू मिलू अखीरी खासा, रेशम हडौन वालया ।
तेरा अन्त वना विच वासा, वगले वनौन वालया ।
होऊ हेठ काठ दी घोडी, मोटर दडौन वालया ।
देह वचू न काली-गोरी, फैशन लगौन वालया ।
'मुनि चन्दन' अमली नवेडे, जीवन लुटौन वालया ।
छड्ड झूठे झगडे-झेडे, शेखिया जतौन वालया ।

बरनाला
२०२३ चातुर्मास

१—नजर मार 'चन्दन मुनि', देखो तो बाजार ।
इगलिश बोर्ड सैकडो, हिन्दी के दो-चार ॥
२—उन मे भी हिन्दी तले, ऊपर इगलिश मेम ।
'चन्दन' हिन्दोस्तान का, ये है हिन्दी-प्रेम ॥

## २९१—मेरा दया धर्म न जावे

सिर जावे ता जावे, मेरा दया धर्म न जावे...

दया दी खातर 'मेघरथ राजा', मास जिस्म दा ताजा-ताजा
देकर जीव बचावे

जीव जगली जिन विच ताडे, जीवा दे जद देखे बाडे
व्याह न'नेम'करावे .

बलदे जद दो सप्प निहारे, 'पार्श्वनाथ' बचाए प्यारे
जोगी लख चकरावे...

जलदा जद 'गोशाला' पाया, करुणा करके 'वीर' बचाया
महिमा कौन सुनावे .

'धर्मरुचि' मन दया-पुजारी, कीडिया-करुणा कीती भारी
दुनिया महिमा गावे .

गगन 'कर्णी' ने कर दिखलाया, करुणा कर खरगोश बचाया
श्रेणिक-सुत कहलावे .

'गजसुकुमाल' महा मुनिराया, दया हेत न शीश हिलाया
सारे कर्म खपावे...

सन्त-मुनि जो रब दा प्यारा, दया वास्ते जीवन वारा
जुन्नी तक न पावे ..

दया-हेत हर धर्मी-ज्ञानी, अन छाना न पीवे पानी
मद्य-मास न खावे

दया हेत ही रब गुण खाना, जिस विच नजया खाना-खाना
'चन्दन मुनि' सुनावे

[illegible]

# २९२—चले-चलो

तर्ज—मर्दो को धर्म काम मे डरना नही अच्छा .

दिन-रात गीत प्रीत के गाते चले-चलो
शान्ति-सन्देश सबको, सुनाते चले-चलो
चहु ओर आग राग की और द्वेष की जले
समता-क्षमा के जल से, बुझाते चले-चलो
जागो-जगाओ देश को, गफलत की नीन्द से
आगे कदम अब अपना बढाते चले-चलो
इस लोभ-लालच के भयानक भूत पर विजय
सन्तोप से-तप-त्याग से, पाते चले-चलो
हो अगर इक देवता मानव के रूप मे
रोते-दुखी तुम जन को, हसाते चले-चलो
काम कोई भी कठिन, 'चन्दनमुनि' नही
सच्ची लगन को मन मे लगाते चले-चलो

वरनाला
२०२१ चातुर्मास

---

१— हिन्दी के वहुते पढे, इगलिश के कम जान ।
वहुते तज कम के लिए, बोर्ड क्यो श्रीमान ?
२—ऊपर हिन्दी वाद मे, चाहे इगलिश होय ।
ऐसे वोर्ड को वुरा, 'चन्दन' कहे न कोय ॥
३—पहले अपना देश हो, सभी विदेशी वाद ।
उत्तम पुरुपो की यही, 'चन्दन' है मर्याद ॥

---

## २९३—देखते जाओ

दशा इस देश भारत की, निराली देखते जाओ
दमक ऊपर की सब अन्दर से खाली देखते जाओ

धनी जो भी कहाते है, वे बेटा जब विवाहते है
बडी झोली फैलाते है, कगाली देखते जाओ

ये जितने बाबू दिखते है,जो खुद को बी ए लिखते है
सरे मैदान बिकते हैं, प्रणाली देखते जाओ

बराते जितनी आती है, शराबे बस उडाती है
नही बिल्कुल लजाती है, दीवाली देखते जाओ

जनम से है तो हिन्दी हर,सभी फैशन फिरगी पर
उधर ऊपर से इकदम सर, बगाली देखते जाओ

लगे मैया न अब चगी, लगे गैया न अब चगी
दशा क्या हमने बे ढगी, बनाली देखते जाओ

कभी जो खीर खाते थे, दही-रबडी उडाते थे
जरा सी चाय को पाते है, प्याली देखते जाओ

अन्दर हो त्याग वालो की,गुणीजन बे मिसालो की
ये हीरे और लालो की, दलाली देखते जाओ

भरे जो धर्म की उल्फत, सिखाए देश की खिदमत
'मुनि चन्दन' की ये अद्भुत, कव्वाली देखते जाओ

बरनाला
२०२३ बैसाख

## २९४—चार दिनां दा मेला

तर्ज—घुट नीर पिलादे नी

न जनम ग वाओ जी, प्यारयो ! पाप-पङ्क विच फस के
शुभ कर्म कमाओ जी, प्यारयो ! कमर तुसा हुण कसके...

पल-पल करके समय सुहाना, सदा बीतदा जावे
लक्खा खर्च करे जे कोई, कदे हत्थ न आवे
कुछ लाभ उठाओ जी, प्यारयो ! सत्सग दे विच वसके

सोहने-सोहने जग दे अन्दर, चार दिना दा मेला
आखिर इक दिन कूच बोलना, खाली छड्ड तबेला
न धोखा खाओ जी, प्यारियो ! माया अन्दर धसके

फुल्ल-सेज ते सौन्दे निशदिन, अतरा नाल नहाए
सग मोतिया तुलने वाले, खाली हत्थ सिधाए
मत मान बधाओ जी, प्यारयो ! धन-जोवन ते हसके..

की होया जे तन नू धोया, मन मन्दा सी धोना
अन्दर भरया लोभ-कपट जद, जप-तप ने की खोहना
न जगत हसाओ जी, प्यारयो ! 'चन्दन' नाला घसके...

गूजरवाल
२०१९ चैत्र शुक्ला

---

| 'चन्दन' माला फेरिया, फेरा मन न मूल |
| जप-तप सारा व्यर्थ ज्यो, करि-स्नान फिजूल |

---

## २९५—चल दिये

कव्वाली

आने वाले आ रहे थे, आते-आते चल दिये
जनम इस सनसार मे बस, पाते-पाते चल दिये
बज रहे थे साज छन-छन गाने वाले थे मगन
आ अजल पहुची बेचारे, गाते-गाते चल दिये
एक मिस्टर घर से दफ्तर, जा रहे थे दौड कर
बस से जो टक्कर लगी बस, जाते-जाते चलदिए
सेठ जी के सामने था थाल ताजा माल का
ग्रास इक मुह मे था डाला, खाते-खाते चल दिये
है कहा चंगेज-नादर, जो नहाए रक्त मे
कर सितम संसार पर वे, ढाते-ढाते चल दिये
अब 'मुनि चन्दन' पडे बीमार इक जो ताजदार
दे हजारो फीस डाक्टर, लाते-लाते चल दिये

बरनाला
२०१२, मगसिर

## २९६—जाना ही होगा

तर्ज—[illegible] दिन की [illegible] सी...

छोड दुनिया फानी को, जाना ही होगा
पाप-कर्मों का फल तो, पाना ही होगा

खार हैं इन मे, अरे ! उलझे क्यो कलियो से
तज के जाना जब, मोहब्बत कैसी गलियो से
पाव पीछे इनसे सरकाना ही होगा,
प्यारी सी अपनी, उमरिया नाहक न खोना
है मिला तुझको, समय शुभ बीजो को बोना
वरना कडवे तूम्बो को, खाना ही होगा
भूला क्यो खुद को, जगत की फस के उलझन मे
पा नही सकता कभी सुख ऐसे जीवन मे
नाम प्यारे 'जिनवर' का, ध्याना ही होगा
खोल रे ! आखे, जरा अब उठ तो बिस्तर से
हो गया प्रात, मधुर बस अपने इस स्वर से
गीत तुझको 'चन्दन' का, गाना ही होगा...

मालेर कोटला

२०१८ चैत्र कृष्णा १०

---

१—सत्य-दया की शरण लो, जो चाहो औलाद।
भर-भर 'चन्दन' चौकिया, क्यो होते बरबाद ॥
२—लूट-लूट लोभी तुम्हे, कर देगे कङ्गाल।
उनके खोटे जाल से, बचना 'चन्दन लाल' ॥
३—बेटे क्या देगे तुम्हे, खुद ही बे औलाद।
'चन्दन' घर मे बैठकर, करो प्रभु को याद ॥

## २९७-सत्संग सन्तां दा

सत्संग सन्ता दा, सन्मार्ग दिखलान्दा
रहे मल न मन दे उत्ते, भारी भाग जगावे सुत्ते
पशुओ पुरुष बनान्दा .
दानवता न आवे नेडे, मानवता दे लग्गन गेड़े
मदिरा-माँस छुड़ान्दा . .
नर्क-निकट न जाने पावे, स्वर्गा दे विच डेरे लावे
जिस दे मन नूं भान्दा .
कूट-कपट-छल -बेईमानी, जूआ, चोरी, चुगली खानी
हिंसा होर हटान्दा ..
भरया अन्दर जो बहुतेरा, हरदा ओ अज्ञान हनेरा
जगमग जोत जगान्दा .
सन्त 'सञ्जय नृप' बनाया, सिद्धे पथ 'प्रदेसी' पाया
बेडा बन्ने लान्दा .
जो भी ने नर-नार निकम्मे, रुलदे-फिरते बने मुलम्मे
सोने सम दमकान्दा .
लोहा डुब्बे क्यों बेचारा, जिस नू होवे काठ-सहारा
परले पार पहुचान्दा..
नास्तिकता नठ जान्दी सारी, आन्दी आस्तिकता अति प्यारी
जीवन नू चमकान्दा ..

हुन्दी हरइक दूर बुराई, जगह-जगह तो मिले बडाई
'चन्दन' सम महकान्दा

बरनाल
२०२३ मगसिर

## २९८-न दारु पीना जी !

तर्ज़—घुट नीर पिलादे नी

न दारु पीना जी, प्यारयो ! नर्की ए पहुचावे
जल जान्दा सीना जी, प्यारयो ! खुश्की-खग सतावे .
रोन नियाने-मुक्कन दाने, हो जावे घर खाली
फड-फड बखिया-भर-भर अखिया, रोवे ओ घर वाली
ना कोई महीना जी, प्यारयो ! विन रोया दे जावे
चढे खुमारी जिस दम भारी, गलिया बिच डिग पैन्दे
भुक्खे-नंगे-पए लफगे, देखन वाले कहन्दे
ए जनम नगीना जी, प्यारयो ! कौडा मुल्ल विकावे.
क्यो न कहो सतावे सर्दी, होई कुर्क रजाई
जेठ-हाड़ विच घर दे अन्दर, बने किमे सरदाई
न रुके पसीना जी, प्यारयो ! गर्मी गम दिखलावे .
पीके दारु ब्राग वतारु, टप्पन वन सौदाई
नाम न जपया-तप न तपया, ऐवे उमर विताई
ए काहदा जीना जी, प्यारयो ! 'चन्दनमुनि' सुनावे...

बरनाला
२०१८ माघ

# २११-लुटाया न होता

जनम-हीरा पा जो लुटाया न होता

शर्मसार हो सिर झुकाया न होता .

स्वर्ण मयी जीवन बनाता, तू अगर सनसार मे

फल अहिंसा के तू खाता, मौज से उस द्वार मे

तरु पाप का जो लगाया न होता .

तू यदि बन जाता रक्षक, बेपरो के प्राण का

सारा जग कहता तुझे, इक मर्द है मैदान का

तेरी हस्ति को जग ने, भुलाया न होता

बोझ कम तू बान्धता, नेकी का जो दस्तूर है

गर समझना राह मुश्किल, और मञ्जिल दूर है

ये सफर अपना रोकर बिताया न होता

'सब भला होगा भला', गर रहना तेरे ध्यान मे

भेद बाकी कुछ न रहता, तुझ मे और भगवान मे

कभी शान मे फर्क आया न होता

जब 'मुनि चन्दन' खुशी के गीत तू गाना सदा

पर अन्धेरी रात मे जुगनू से चमकाना सदा

दिया राह किसी का बुझाया न होता

बरनाला

२०२० चैत्र शुक्ला १

हुन्दी हरइक दूर बुराई, जगह-जगह तो मिले बडाई
'चन्दन' सम महकान्दा

बरन
२०२३ मर्गा

## २९८-न दारु पीना जी !

तर्ज—घुट नीर पिलादे नी

न दारु पीना जी, प्यारयो ! नर्की ए पहुचावे
जल जान्दा सीना जी, प्यारयो ! खुश्की-खग सतावे .
रोन नियाने-मुक्कन दाने, हो जावे घर खाली
फड-फड वखिया-भर-भर अखिया, रोवे ओ घर वाली
ना कोई महीना जी, प्यारयो ! विन रोया दे जावे
चढे खुमारी जिस दम भारी, गलिया विच डिग पैन्दे
भुक्खे-नंगे-पए लफगे, देखन वाले कहन्दे
ए जनम नगीना जो, प्यारयो ! कौडा मुल्ल विकावे .
क्यो न कहो सतावे सर्दी, होई कुर्क रजाई
जेठ-हाड विच घर दे अन्दर, वने किमे सरदाई
न रुके पसीना जी, प्यारयो ! गर्मी गम दिखलावे...
पीके दारु वाग वतारु, टप्पन वन सौदाई
नाम न जपया-तप न तपया, ऐवे उमर विताई
ए काहदा जीना जी, प्यारयो ! 'चन्दनमुनि' सुनावे ..

वरनाला
२०१८ माघ

## ३००-राह दिखलाए रे !

तर्ज—सारी-सारी रात तेरी

भोले भाले जीव ! तोहे पाप सताए
पाप सताए तोहे चैन न आए रे !
इक तो जनम प्यारा व्यर्थ लुटाए
दूजे बैठा बदी कमाए
बदी कमाए नेकी दूर हटाए रे !
होके मगन गया भूल बॉवरिया !
बीती जाती तेरी उमरिया
प्यारी उमर तेरी चली यह जाए रे !
पाप हमेशा खुश हो कमाए
गीत प्रभु के किन्तु न गाए
किन्तु न गाए योही मन भटकाए रे !
गीत बना के 'मुनि चन्दन' सुनाए
नीन्द सदा की आज उडाए
आज उडाए सीधी राह दिखलाए रे !

बरनाला २०१६ वैसाख

मन की दुनिया अजब निराली
कभी अन्धेरी-कभी उजाली
देशी कभी-विदेशी 'चन्दन'
कभी बिहारी-कभी बंगाली

## ३०१—गुरु-गुण-गाथा

तर्ज़—ओ दूर जाने वाले

श्री पन्नालाल गुरुवर, भारी परोपकारी
तप-शील व क्षमा के, सत ज्ञान के है धारी

शुभ ओसवाल जाति के वंश-ओथारा मे
ले जन्म जग-सुखो को, ममता सभी बिसारी

सम्वत वह विक्रमी था, उन्नीस सौ छयासठ
'उन्नवाली' मे खुशी से, दीक्षा हुई तुम्हारी

गुरु आप के आचार्य—श्रीचन्द जी गुणी थे
शिक्षा जिन्हो ने देकर, दुनिया है बहुत तारी

'विनयचन्द्र जी तपस्वी', गुरुभाई आपके थे
बडे प्रेम से उन्हो की, कोनी तीमारदारी

ऐसी कमाल सेवा, कोई और क्या करेगा
जिसकी कि याद जग ने, दिल से नही बिसारी

कई साल तक इकान्तर, करते रहे निरन्तर
तेले-पचोले-छिओले, की है तपस्या भारी

है शान्ति के यानि, गुरुदेव मेरे सागर
कडवी-कठोर वाणी, नही आपने उचारी

गुण आर मे वडे है, मेरी जवा है छोटी
'चन्दनमुनि' ये कैसे, महिमा सुनाए सारी

नवा शहर
२००० चातुर्मास

# ३०२—प्रभु—प्यारयां दी सिह गर्जना

झण्डा सच्च दा जहान ते झुलाई जावागे
मुहो सच दे ही गीत प्यारे गाई जावागे
भुल्ले भाईया नू रोशनी दिखाई जावागे
दया-धर्म दी राह ते चलाई जावागे

दुख दोना ते गरीबा दा मिटाई जावागे
झरणा-करुणा दा निर्मल बहाई जावागे
छड्ड वदिया नू नेकिया कमाई जावागे
सच्चे अर्थाच मानव कहाई जावागे
अहकार-क्रोध नू घटाई जावागे
नाम नीमेया च अपना लिखाई जावागे

शीश सन्ता नू सदा ही झुकाई जावॉगे
सीख दिल विच ओन्हा दी वसाई जावागे

देख रोन्देया नू रज्ज के हसाई जावागे
देख डिग्गेया नू दौड के उठाई जावागे
ताने दुनिया दे हासी च उडाई जावागे
महनगालना दी वस्ती वसाई जावागे
ज्ञान-गगा विच 'चन्दन' नहाई जावागे
मैल मन नो अनादि दा मिटाई जावॉग

वरनाना
२०२३ पोष

## ३०३—आदमियत चाहिए

तर्ज—गीति का छन्द

जिन्दगी मे आपको जो, मान-इज्जत चाहिये
हर तरह मे आपका जीवन समुन्नत चाहिये

मानते सुख-दुख हैं जैसे, आप सारे मानते
इस लिए सब से मुहब्बत और उलफत चाहिये

आपकी दुनिया बनेगी, देख लेना एक दिन
दूर दिल मे द्वेष-बल छल और नफरत चाहिये

मिनट मे मन मोहले जो, मन्त्र मुझ से वह सुनो
सिर्फ मीठा बोलने की, एक आदत चाहिये

आदमी तो आदमी-पग मे झुकेंगे देव भी
सभ्यता-सौजन्य मे आजन्म [illegible] चाहिये

उन्नति दिन-रात दुगनी-चौगुनी होगी जरूर
हर समय हर काम मे बस नेक नीयत चाहिये

क्या कोई संसार मे शृंगार से [illegible] ?
इस बदन के लिए तो, आदमियत चाहिये

काम है वह कौनसा जो हो नहीं सकता कभी
हर जगह इन्सान मे करने की हिम्मत चाहिये

[illegible] चौरासी न दिखाए जो कभी
[illegible] ध्यान की नर-नार को ताकत चाहिये

[illegible]

दास दिल जिसने बनाया, माया-ममता त्याग कर
सद्गुणी-ज्ञानो गुरु की, खूब खिदमत चाहिये

लोक को पहले सुधारो, बाद मे परलोक को
जिन्दगी मे हर समय ही, बस सदाकत चाहिये

जो घटाए मान को और जो घटाए शान को
झूठ-चोरी और चुगली की न इल्लत चाहिये

शील की शक्ति से शूली, झट सिंहासन बन गई
उस 'सुदर्शन सेठ' सा जीवन ये अद्भुत चाहिये

आत्मा को जो बनाती है अरे! परमात्मा
उस अहिंसा का अनोखा, पीना अमृत चाहिये

अय 'मुनि चन्दन' अगर गुण और हो न आप मे
आदमी बनने को किन्तु, आदमियत चाहिये

बरनाला
२०२३ चातुर्मास

| त्याग से-तप से-जपा से, आदमी की शान है |
|---|
| दीन-दुखियो की दया से, आदमी की शान है |
| प्रेम से-प्रीति-क्षमा से, आदमी की शान है |
| सत्य-समता से सदा से, आदमी की शान है |
| शील की-सन्तोष की हो सर्वथा जिसमे कमी |
| अय 'मुनि चन्दन' कहेगा, कौन उसको आदमी |

## ३०५—लड़की

कव्वाली

ज़माने का न जो चाहो, लगाना

पढाते हो भला लडको के [

जो जल का सग पाता है, बिगड लो

लगेगा लोह की भान्ति से

जरा गहराई मे जाए, सचाई

कभी छोडेगे क्या लडके, [

नही दश की पढाई कम, खरीदो म

पिलाओ हाथ से अपने, अ

पढी मैट्रिक पढाई है, सभी ₹

समझ लो आगया घर का

पढाना फिर भी हो ज्यादा, तो सा

पढाना पर नही अच्छा,

ये क्यो शृगार कॉलिज मे, ये क्यो

लगा क्यो रोग फैशन क

पहन कर तग पोशाके, निर्

दिखाना चाहिये दुनिया व

सरलता-शील मे 'चन्दन', चमकना

मगर है देखकर दुनिया

## ३०६—सती राजमती का संयम

तर्ज—तुम नहीं आते तो न आओ...

नेम पिया जी ! ये क्या किया जी !

छोड़ के मुझको, वन क्यो सिधाए

# ३०५—लड़की को

कव्वाली

जमाने का न जो चाहो, लगाना रग लडकी को
पढाते हो भला लडको के फिर क्यो सग लड़की को

जो जल का सग पाता है, बिगड लोहा वो जाता है
लगेगा लोह की भान्ति से क्यो न जग लडकी को

जरा गहराई मे जाए, सचाई का पता पाए
कभी छोडेगे क्या लडके, किए बिन तग लडकी को

नही दश की पढाई कम, खरीदो मत मुफत का गम
पिलाओ हाथ से अपने, अरे ! न भग लडकी को

पढी मैट्रिक पढाई है, सभी सीखी सिलाई है
समझ लो आगया घर का, सभी ही ढग लड़की को

पढाना फिर भी हो ज्यादा, तो सारा वेश हो सादा
पढाना पर नही अच्छा, कभी बेढग लडकी को

ये क्यो शृगार कौलिज मे, ये क्यो शृगार नौलिज मे
लगा क्यो रोग फैशन का, ये ऊटपटग लड़की को

पहन कर तग पोशाके, निरी बेढग पोशाके
दिखाना चाहिये दुनिया को, क्या यो अग लडकी को ?

सरलता-शील मे 'चन्दन', चमकता जिसका था जीवन
मगर है देखकर दुनिया, उसी अब दग लडकी को

बरनाला
२०२३ फाल्गुण

## ६०७—याद आयगी

कव्वाली

गुजर जाने पे जीवन की, सुहानी याद आयगी
कभी ये आप को अपनी, कहानी याद आय
नही, कुछ जिनकी सुनते हो, कहे तो सिर को धुनते हो
उन्ही माता-पिता की मेहरबानी याद आय
भली लगती बुराई है, बुरी लगती भलाई है
बुढापे मे यही तुम को, जवानी याद आय
कमाकर चार यो पैसे, तने फिरते हो क्यो ऐसे
लजाकर एक दिन गर्दन, झुकानी याद आय
बुरा जो पीओ-खाओगे, उपद्रव जो मचाओगे
तुम्हे चलते समय हर कारस्तानी याद आयग
नही, नेकी-भलाई की, नही कुछ भी कमाई की
कहो जाते हुए फिर क्यो न नानी याद आयगी
पडे गफलत मे सोते हो, अमोलक जन्म खोते हो
'मुनि चन्दन' उमर बीती, पुरानी याद आयगी

बरनाला
२०२३ माघ

१—आतिशबाजी देखकर, मूढ़ बजावें काख ।
'चन्दन' पल में सैकड़ो, बने रुपये राख ॥
२—सबसे बदतर व्यसन मे, है ये कोरा गन्द ।
आतिशबाजी ब्याह मे, करिये बन्धु ! बन्द ॥

## ३०८—दीवाली के दीपक से

तर्ज—ओ दूर जाने वाले

दीपक ! जग बतादे, जलना क्यों काम तेरा
करना है दूर जबकि, तू जगत का अन्धेरा ?
आसन जमाए बैठा, किस ध्यान में है पैठा
क्यों योगियों की भान्ति, डाले हुए है डेरा ?
करता है क्यों तपस्या, तेरी है क्या समस्या
पल-पल चमक रहा है, तेरा क्यों चान्द चेहरा ?
तेरे कदम पे 'चन्दन', क्यों शलभ वारे जीवन
निर्वाण पद क्यों पाना, होते ही फिर सवेरा ?

## ३०९—दीपक का उत्तर

तर्ज—ओ दूर जाने वाले

कहने लगा यों दीपक-कुछ ध्यान तू लगाना
मेरा तो पथ ही ऐसा, पड़ता है तन जलाना
संसार में भला वह, अमरत्व कैसे पाए
सह-सह के कष्ट जिसने, सीखा न मुस्कराना
चरणों पे उसके मस्तक, धरते सभी है आस्तिक
बनकर जो पथ-प्रदर्शक, सीखा है राह दिखाना
ज्योति हू मैं बढाता, नयनों को चमचमाना
काला अगर बनाता, कजला मुझे बनाना

मैं झमता हू क्यो ये, इक बात भी समझले
प्रभु 'वीर' को हूँ चाहता, श्रद्धाजन्ली चढाना

चढ जाए जब निराला, सूरज वह ज्ञान ८
क्यो न कहो मुनासिब, निर्वाण-पद को ९

छोटी सी जिन्दगी से, दुनिया का जो भला हो
'चन्दन' मै छोडदू क्यो, फिर अपना सिर कटाना

---

ला संग गाने वाली, हुडदंग जो मचाए
ब्याही-कुमारियो का, लशकर जो साथ लाए
पीकर सुरा तमाशा, दुनिया को जो दिखाए
बन भूत झगडो मे, 'चन्दन' जो जग हसाए
दुशमन पटाखो-द्वारा, पक्षी जो जान की है
उसको बरात कहना, हत्तक 'बरात' की है

/ ४

जो साथ भाण्ड-भडुए, न गाने वाली लाती
मदिरा पिए न एक भी, जिसका यरे । बराती
डाले न भूल झगडा, कोई भी संगी-साथी
बस हो न कुछ तमाशा, माया नही दिखाती
नारी कुमारी-ब्याही, एक भी न संग लाती
'चन्दन' बरात वह ही, आदर्श है कहानी

## ३१०-विवाह का बोझ

तर्ज—कभी सुख है कभी दुख है .

जिसे इतिहास ने उत्सव, अरे भाइयो ! बताया है
विवाह वह बोझ ही अब तो, रिवाजो ने बनाया है

विवाह करना है लडके ने, वो आया देख कडकी को
मगर मा-बहन का कुर्की को क्यो लशकर सिधाया है
[illegible] ये नाई क्यो, रहे पीछे जमाई क्यो
[illegible] के माल पर पानी, सभी के मुह मे आया है

विदेशी कनक बिन आए, कभी पूरा न पड पाए
बेगानी छाछ पर मूछो को जड से क्यो मुडाया है
सभाले नर नही जाते, उठा तुम नारिया लाते
अकलमन्दो ! कहो उलटा ये क्या चक्कर चलाया है
अगर हो मर्द भारत के, बनो हमदर्द भारत के
बनाओ बोझ वह हल्का, जिसे नाहक बढाया है
किसी के कष्ट की चिन्ता, कहो पर कौन है करता
'मुनि चन्दन' ने बस देखा, पराया दुख पराया है

बरनाला २०२३ माघ

---

१-जीव दया 'चन्दन मुनि' जीवन का है सार ।
जीव दया पर जिन्दगी, गए अनन्ते वार ॥
२-दया 'मेघरथ भुप की, वरणी न कुछ जाय ।
'चन्दन' तन का माम दे दिया कपोत बचाय ॥
३-धन्य दयालु 'नेम' सुन-पशुअन करुण-पुकार ।
'चन्दन' बन्धन व्याह का, फेंका वही उतार ॥
४-नाग निकाले आग मे, 'पार्श्व' दीन दयाल ।
शरणा दे नवकार का, तारे 'चन्दनलाल' ॥
५-'महावीर भगवान' की, करुणा कही न जाय ।
'गोशाला' को पलक मे, 'चन्दन' दिया बचाय ॥
६-कडवा तुम्बा पी गए, 'चन्दन' दया विचार ।
'धर्मरुचि अणगार' को, वन्दन बारम्बार ॥

विदेशी कनक बिन आए, कभी पूरा न पड पाए
बेगानी छाछ पर मूछो को जड से क्यो मुडाया है
सभाले नर नही जाते, उठा तुम नारिया लाते
अकलमन्दो ! कहो उलटा ये क्या चक्कर चलाया है
अगर हो मर्द भारत के, बनो हमदर्द भारत के
बनाओ बोझ वह हल्का, जिसे नाहक बढाया है
किसी के कष्ट की चिन्ता, कहो पर कौन है करता
'मुनि चन्दन' ने बस देखा, पराया दुख पराया है

बरनाला २०२३ माघ

---

१-जीव दया 'चन्दन मुनि' जीवन का है सार ।
जीव दया पर जिन्दगी, गए अनन्ते वार ॥
२-दया 'मेघरथ' भूप की, बरणी न कुछ जाय ।
'चन्दन' तन का मास दे दिया कपोत बचाय ॥
३-धन्य दयालु 'नेम' सुन-पशुग्रन करुण-पुकार ।
'चन्दन' बन्धन ब्याह का, फेंका वहीं उतार ॥
४-नाग निकाले ग्राग मे, 'पार्श्व' दीन दयाल ।
शरणा दे नवकार का, तारे 'चन्दनलाल' ॥
५-'महावीर भगवान' की, करुणा कही न जाय ।
'गोशाला' को पलक मे, 'चन्दन' दिया बचाय ॥
६-कड़वा तुम्बा पी गए, 'चन्दन' दया विचार ।
'धर्मरुचि अणगार' को, वन्दन बारम्बार ॥

# लेखक के अनमोल संगीत

| | | |
|---|---|---|
| संगीत भगवान पार्श्वनाथ सचित्र | | १) |
| संगीत जम्बू कुमार | ,, | २) |
| संगीत चार चरित्र | ,, | ।।।) |
| ,, ईषुकार | ,, | ।।।) |
| ,, सती दमयन्ती | ,, | १।।) |
| ,, देवकी दा लाल | ,, | १।) |
| ,, मवलानागी | ,, | १) |
| ,, मजय राज ऋषि(नया) | ,, | ।।) |
| ,, निर्मोही नृप | ,, | ।) |
| चटकीले छन्द | ,, | १।) |
| गीतो की दुनिया | ,, | २) |
| मनहर माला | | ।।) |
| बारह महीने | | ।।) |

प्राप्ति स्थान

१-श्री मोहन लाल जैन रजोहरण पात्र भण्डार
जैन बाजार अम्बाला शहर (पंजाब)

२-श्री दयाल चन्द रत्न चन्द जैन भैरो बाजार जलन्धर शहर”

३-वैद्य अमर चन्द्र जैन सदर बाजार बरनाला (पंजाब)